विष्णुदत्त शर्मा

# प्रस्तावना

हिंदी मे ज्ञान विज्ञान का विविध साहित्य उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा एव संस्कृति मत्रालय पुस्तक प्रकाशन की अनेक योजनाओ पर काम कर रहा है। इनमे से एक योजना प्रकाशको के सहयोग से हिन्दी म लोकप्रिय पुस्तको के प्रकाशन की है। सन् 1961 स कार्यान्वित की जा रही इस योजना का मुख्य उद्देश्य जनसाधारण म आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना और साथ ही हिंदीतर भाषाओ के भी साहित्य की लोकप्रिय पुस्तकों को हिंदी में सुलभ कराना है ताकि ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाठको को सुबोध शैली में मिल सके। इसके अतगत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों को अधिक से अधिक पाठका तक पहुचाने के विचार स इनका मूल्य कम रखा जाता है। इस योजना के अधीन प्रकाशित पुस्तकों मे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है ताकि हिंदी के विकास मे ऐसी पुस्तकें उपयोगी सिद्ध हो। इन पुस्तको मे विचार लेखक के अपने होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'विष और उपचार' के लेखक श्री विष्णु दत्त शर्मा हैं। पुस्तक मे लेखक ने विभिन्न प्रकार के विषों और उनसे किए जाने वाले उपचारो के बारे मे विस्तृत विवरण दिया है। विभिन्न रोगो मे विषो के प्रयोगो का वणन भारत वष म वैदिक काल से ही पाया जाता रहा है। आज भी शोधित करके औषधि के रूप मं विषों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा मे हो रहा है।

आशा है इस पुस्तक स पाठकों को विवेच्य विषय के सबध में अच्छी जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

(राजमणि तिवारी)

# प्राक्कथन

पौराणिक किंवदती है कि एक समय दैत्यों के अत्याचारों से तंग आकर और अपनी संख्या कम होते देख, देवतागण भगवान विष्णु के पास गए और विनती की कि भगवन्, हमारी रक्षा करो अन्यथा यह पृथ्वी देवता-विहीन हो जाएगी। इस समस्या पर आदिप्रभु ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने परस्पर मंत्रणा की और समुद्र-मंथन की युक्ति खोज निकाली। भगवान विष्णु ने स्वयं कच्छप अवतार का रूप धारण कर समुद्र में मथनी (Churner) के नीचे स्थान ग्रहण किया। सुमेरु पर्वत की मथनी तथा शेषनाग की नेति बनाई गई। शेषनाग के मुख की ओर दैत्य तथा पूंछ की ओर देवता लगे। समुद्रमंथन किया गया और फलस्वरूप चौदह रत्नों का आविर्भाव हुआ। इन रत्नों में विष भी एक था जिसको भगवान शंकर ने ग्रहण कर नीलकंठ की उपाधि पाई।

विषों का व्यावहारिक उपयोग कदाचित् पाषाण युग (Stone Age) में आखेट हेतु प्रयोग किए जाने वाले हथियारों तथा तीरों में आरम्भ हुआ। आज से लगभग 4000 वर्ष पूर्व रचित ऋग्वेद में विषैली जड़ी-बूटियों (Herbs) से उपचार करने का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में भी विषों का वर्णन है। आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति भारत में हजारों वर्षों से चली आ रही है। इसका जन्म भारत में हुआ। प्राचीन समय से धनवंतरि वैद्य ने इस पद्धति को विकसित किया। प्राचीन समय में रोमन दूसरों का प्राण लेने में गर्व अनुभव करते और विष देना फैशन समझते थे। तत्कालीन एक कुख्यात विषदात्री लोकस्टा नामक महिला थी। इसको मृत्युदंड से क्षमादान दिया गया ताकि यह महिला सम्पूर्ण राज्य में दूसरों को इस विद्या में प्रशिक्षण दे और फलस्वरूप विषायण (Poisoning) की गोपनीयता उसके साथ लुप्त न हो जाए। प्राचीन मिस्र में विषायण का अपराध

अधिक व्याप्त नहीं था किन्तु इस विषय मे रोम में 82 वर्ष ईसापूर्व प्रथम कानून बनाया गया था। मिस्रवासियों ने आदिकाल मे पौधा तथा खनिजों (Minerals) के गुणों का अध्ययन कर औषधि निर्माण की खोज की। उन्होने संखिया (आर्सेनिक) ऐंटिमोनी ताम्र (Copper) तथा सीसा (Lead) आदि के विषाक्त प्रभाव देखें। पन्द्रह सौ वर्षों के अनुसधान-कार्यों के फलस्वरूप अनेक विषैले पौधे, खनिज पदार्थों तथा मेढक (Toads), सैलामैण्डर (Salamanders), विषैले सर्प एवं पशुओं के विघटित (decomposed) रक्त से उत्पन्न पशु-जन्य विष का सकलन डिओसैकोराइड्स (Dioscorides) की मैटेरिया मेडिका में किया गया।

अनेक वर्षों तक सीसा चूर्ण (Lead dust) एक सर्वाधिक घातक विष माना जाता था किन्तु आजकल बारबिटरेट्स (Barbiturates) लाइसोल (Lysol) तथा कोलगैस आदि अनेक विष हैं जो कम घातक सिद्ध नहीं हुए हैं। बाइबिल (अध्याय 10 पद 13) मे विष को आत्मघाती एजेन्ट की संज्ञा दी है। सवैधानिक दृष्टिकोण मे भी दूसरा को विष देना अमानवता तथा जघन्य अपराध है। विष देने की परम्परा बहुत ही पुरानी है। प्राचीन मान्यताओं के आधार पर विषो को तीन श्रेणियो मे रखा गया था—(1) जो विष सम्पर्क मे आकर तन्तु (Tissue) को ध्वस्त कर दें वे क्षयत्व विष (Corrosive Poison) कहलाते हैं, (2) श्लेष्म झिल्ली के सम्पर्क में आकर यदि उसपर विष सूजन पैदा कर दे तो ऐसे विष क्षोभक विष (Irritating Poison) होते हैं तथा (3) दैहिक विष (Systemic Poison) जो किसी अंग विशेष को ही प्रभावित करते हैं। अण्डा एल्ब्युमन तथा पेप्टोन (Peptone) मुख द्वारा भक्षण करने पर भोज्य पदार्थ हैं किन्तु यदि इनको अन्तःशिरा में (Intravenously) इंजेक्शन लगाया जाए तो घातक विष जैसी क्रिया करते हैं।

विषैले पदार्थ तीन रूप में प्राप्य हैं—(1) विष, (2) उपविष और (3) मादक। प्रस्तुत पुस्तक 'विष और उपचार' में विषो को तीन श्रेणियो में विभाजित किया है—(1) रासायनिक विष, (2) वानस्पतिक विष और (3) जीव-जन्य विष। इस पुस्तक मे उपचार के लिए केवल प्राथमिक चिकित्सा तक ही सीमित वर्णन है। प्रतिकारक (Antidote) की

कितनी मात्रा दी जाए—यह निभर करता है रोगी की दशा, आयु और विष के प्रभाव पर। अत प्रत्येक दशा में चिकित्सक को बुलाना और पुलिस को सूचना देना अनिवाय है। मुझे आशा है कि प्रयोगशाला में रत कम-चारी, विज्ञानी, पुलिसकर्मी, नर्सिंग एव मैडिकल कालेज के विद्यार्थी, चिकित्सक, सीमा सुरक्षा बल के सैनिक तथा जन-साधारण इस पुस्तक के अध्ययन से लाभान्वित होंगे। इसके अतिरिक्त गुप्तचर्या ब्यूरो अधिकारी भी लाभ उठा सके ता मैं अपनी साधना को सफल समझूगा।

पुस्तक के प्रकाशनाथ स्वीकृति के लिए मैं डॉ० ए० पी० मित्रा, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली का आभारी हू। अनेक महत्त्वपूण सुझावा के लिए मैं केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली के डॉ० शिवतोप दास, केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा योजना, नई दिल्ली के चिकित्सक डॉ० एस० के० पाठक तथा उत्तरप्रदेश आयुर्वेदिक एव यूनानी सेवाओ के भूत-पूव महानिदेशक डॉ० मुकन्दीलाल द्विवेदी के प्रति आभार प्रकट करता हू। पुस्तक को आरेखो द्वारा सुसज्जित करने के लिए मैं अपने पुत्र राजीव शर्मा को धन्यवाद देता हू।

पाठको क रचनात्मक सुझावा का सदैव स्वागत है।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला
नई दिल्ली 110012

—विष्णुदत्त शर्मा

# अनुक्रमणिका

# अध्याय-1

दुराचारिणी नारी के सौन्दय पर अपने हृदय का मुग्ध मत कर
और न ही स्वय को उसके चल चितवन का शिकार बना।

—बाइबिल

# ऐतिहासिक महत्त्व

भारतवर्ष में खाद्य पदार्थों में विष (जहर) देने की प्रथा बहुत ही प्राचीन है कि अमुक रानी ने अपनी सौतेली संतान को दूध में विष पिलाकर नदी में फेंकवा दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती को विष पिलाया गया, मीरा को विष दिया गया, शंकर भगवान स्वयं विष पी गए आदि। ये लोककथाएं किंवदंती नहीं हैं बल्कि वास्तविक हैं। यजुर्वेद में भी विषों का वर्णन है। लगभग 4000 वर्ष पूर्व रचित ऋग्वेद में वर्णन है कि चिकित्सक जहरीली जड़ी-बूटियों द्वारा उपचार कर उपहारस्वरूप घोड़े, पशु एवं वस्त्रों की कामना करते थे। 500-600 वर्ष ईसा-पूर्व विचारकों के अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्मांड चार तत्त्वों (वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि) से मिलकर बना है किन्तु भारत के महान दार्शनिक कणाद ऋषि ने 600 वर्ष ईसा पूर्व अपने आण्विक सिद्धांत के आधार पर सिद्ध कर दिखाया कि ब्रह्मांड पंचभूत (जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश) से मिलकर बना है। पंचभूतों के समुदाय से समस्त द्रव्यों की उत्पत्ति होती है। किसी भी द्रव्य (Matter) के निर्माण में पृथ्वी आश्रयभूत है और जल महाभूत कहा गया है। कणाद ऋषि ने अपने पंचभूत सिद्धान्तों के साथ विषों को भी स्वीकारा है। प्रथम शताब्दी में कनिष्क के राजवैद्य चरक एवं सुश्रुत ने विषकन्या (Poisonous Maiden) का वर्णन किया है जिसके आलिंगन से शासक के जीवन को भय बना रहता था। विषकन्या के अस्तित्व की पुष्टि विशाखदत्त रचित नाटक मुद्राराक्षस (5वीं शती) में भी होती है जिसे कालान्तर में योरोपीय साहित्य में भी भारतीय साहित्य के आधार पर उद्धृत किया गया है। 'रस रत्नाकर' श्री नागार्जुन द्वारा रचित सातवीं शताब्दी में रस-शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इस शास्त्र के इतिहास का श्रीगणेश यहीं से होता है। रस से ही रसायन (Chemical) की उत्पत्ति हुई जिसको कालांतर में विदेशी वैज्ञानिकों ने स्वीकारा एवं

अंगीकार किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि विषों का वर्णन भारतवर्ष में वैदिक काल से ही होता रहा है।

प्राचीनकाल में राजा अपने शत्रु का छलपूर्वक अन्त करने के लिए विषकन्याओं का प्रयोग किया करते थे। रूपवती बालिकाओं को बचपन से ही थोड़ी थोड़ी मात्रा में विष देकर पाला जाता था और वह उस विष को खाकर एक विष का कुम्भ बन जाती थी। यदि ऐसी कन्या का कोई चुम्बन अथवा आलिंगन करता था तो वह मूर्छित हो जाता और संयोग से तो उसकी मृत्यु ही हो जाती थी।

बहुतसे प्राचीन ग्रंथों में ऐसी विषकन्याओं का प्रसंग आता है। मुद्राराक्षस नाटक तथा कथासरित्सागर इनमें उल्लेखनीय है। मुद्राराक्षस में बताया गया है कि महाराजा नन्द के मंत्री राक्षस ने एक विषकन्या चन्द्रगुप्त के पास भेजी जिसकी सूचना चाणक्य के गुप्तचरों ने चाणक्य को तुरन्त दी। उन्होंने चन्द्रगुप्त को उपयुक्त समय पर विष-कन्या के साथ सम्भोग करने से रोका और चालाकी से उस सुन्दरी को पर्वतक के पास भेज दिया जिसे वह समाप्त करना चाहते थे। पर्वतक ने जब इस अपूर्व सुन्दरी को देखा तो वह अपने-आप पर काबू न रख सका और उसकी मृत्यु हो गयी।

ऐसी ही विषकन्याएं समय-समय पर भारतीय राजाओं ने अपने राज्य की रक्षा करने के लिए शत्रुओं के पास भेजीं। कहा जाता है कि जब सिकन्दर भारत आया तो उसके पास भी एक ऐसी विषकन्या भेजी गयी। विषकन्या सिकन्दर के शिविर में वीणा लिए पहुंची। इस सुन्दर विषकन्या को देखकर सिकन्दर उन्माद से पागल हो गया। जब उसके गुरु (सुकरात) ने ऐसी स्थिति का आभास किया तो उन्होंने सिकन्दर को बहुत फटकारा। उन्होंने तुरन्त ही दो गुलामों को बुलाया और उनसे सुन्दरी का चुम्बन करने के लिए कहा। चुम्बन करने के पश्चात् कुछ क्षणों में दोनों गुलाम मूर्छित हो गए और कुछ समय बाद मर गए। यह देख सिकन्दर को बहुत क्रोध आया, उसने सुन्दरी का सिर काटकर खेमे में जलती आग में फेंक दिया और अपने गुरु सुकरात के सामने नतमस्तक हो गया। उसके मुख से केवल इतना ही निकला – बड़े समय पर आपने मुझे

बचा लिया।

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इस अपूर्व सुन्दरी को, जो सिकन्दर के पास भेजी गयी थी, बचपन से ही अजगर के अण्डे के साथ रखवा दिया गया था। अजगर की मादा उसको काफी दिन तक सेती रही और उसने उसको वही आहार दिया जो अन्य अजगर खाते हैं। धीरे-धीरे वह बालिका बड़ी हुई लेकिन साप की तरह हिस-हिस करने के अलावा वह बोल नही पाती थी। बचपन से इस बालिका का गौर वर्ण कुछ नीलिमा लिए हुए अद्भुत सुन्दर लगता था। यह बालिका न बोलते हुए भी अपनी ओर पुरुषो को आकृष्ट कर सकती थी। महल म लाने के बाद इस बालिका को बोलना सिखलाया गया और साथ ही नृत्य-सगीत की शिक्षा दी गई। तेरह वर्ष की आयु में वह अप्सरा की तरह अपूर्वसुन्दरी बन गई और यही कन्या जब सिकन्दर के पास भेजी गयी तो वह उसपर मुग्ध हो गया था। जिन लोगो ने यह दृश्य देखा था उन्होने इसका वर्णन अनेक पुस्तको मे किया है जो यूनानी भाषा में हैं। इस घटना को देखने के बाद सिकन्दर स्तब्ध रह गया।

कई बार राजा-महाराजा ऐसी विषकन्याओ को बड़े पैमाने पर बनाने के लिए विस्तृत योजनाए बनाते थे। इन योजनाओ मे ज्योतिषियो का भी सहयोग लिया जाता था। प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थो मे ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि उस समय के ज्योतिषविज्ञान से जन्मपत्र (Horoscope) देखकर यह निश्चय किया जा सकता था कि अमुक कन्या एक सफल विष-कन्या बन पाएगी अथवा नही। ज्योतिषाचार्यों की सहायता से ऐसी कन्याओ की खोज होती थी जिनकी कुण्डली यह दर्शाती थी कि वह बड़ी होकर एक सफल विषकन्या बन सकती हैं। इन विषकन्याओ को राज-भवनो मे ही बड़ा किया जाता था। विषयुक्त भोजन के साथ-साथ उनको राजसी तौर-तरीके भी सिखलाए जाते थे। उनको सगीत एव नृत्य की अच्छी शिक्षा भी दी जाती थी और साथ ही उनको छल की विधियां भी सिखलाई जाती थी। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि राजा-महाराजाओ ने अपने बचाव के लिए ही नहीं अपितु शत्रु और उसके समस्त परिवार को नष्ट करने के लिए भी ऐसी विषकन्याओ का प्रयोग किया।

साहित्य में सर्प-बालिकाओं (Snake Girls) का वर्णन भी मिलता है। कहा जाता है कि एक सुन्दर बालिका मना करने पर भी सन्ध्या के बाद ही एक नदी में स्नान करने जाती थी। जब वह बालिका घर लौटती तो रास्ते में उसे एक सर्प प्रतिदिन देखता था। एक दिन सर्प मणि निकालकर उन्माद में उसके चारों ओर नाच रहा था। मणि देख, यह सुन्दर बालिका उस मणि की तरफ आकृष्ट हुई। उसने मणि को उठाने का प्रयत्न किया तो सर्प ने इस बालिका को जकड़ लिया और तब तक जकड़े रहा जब तक बालिका ने यह मणि वापस न कर दी। न जाने उस बालिका को इस जकडन से कैसा आनन्द प्राप्त हुआ। उसके लिए वह नित्यक्रिया बन गयी। साप की जकडन से वह आनन्द की चरम सीमा प्राप्त कर लेती थी। आज भी कुछ आदिवासी जातियों में कन्याएं सर्पों और बिच्छुओं को पालती हैं और उनको अपने कोमल अंगों पर कटाने के पश्चात् एक अपूर्व आनन्द प्राप्त करती हैं। ऐसी कई आदिवासी जातियां देखी गयी हैं जिनमे युवा कन्याएं बिच्छू पालती हैं और उन्हें अपने कोमल अंगों पर दौड़ने और खेलने देती हैं।

विषकन्याओं का भारत में ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी अभाव नहीं रहा। बहुत से पाश्चात्य लेखकों ने इनका वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है। इनमें मिस्टर पेंजर का नाम प्रमुख है। इनकी पुस्तक 'सीक्रट्स सीक्रेटरिस' में विष-कन्याओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। यूरोप के बहुत से विद्वानों ने भी इनका उपयोग कर अंग्रेजी भाषा में भी 'पॉयजन गर्ल' का उल्लेख किया। सभी पुस्तकें यह मानती हैं कि विष कन्याओं की उत्पत्ति भारत में ही हुई और भारतीय लोग विषकन्याओं को बनाने-सजाने और प्रयोग में लाने का कौशल रखते थे।

रोम में दूसरी शती में अनेक कुलीन और धनी परिवार की महिलाएं विष बनाने और विष देने के अपराध में पकड़ी गई थीं। रोम के प्रसिद्ध इतिहासकार टाइटस लिवियस (50 ई० पूर्व से 17 ई०) ने सोनेट द्वारा प्राण-दण्ड पाने वाली ऐसी 190 महिलाओं का उल्लेख किया है। ये सभी सम्पन्न परिवारों की थीं। रोम के सम्राट नीरो की मां अग्रीपन्ना ने तो विष बनाने में विख्यात लोकस्टा नाम वाली दुष्टा को अपने पति सम्राट

क्लाडियस को ही विष देने के लिए नियुक्त किया था। सम्राट क्लाडियस (शासनकाल 41-54 ई०) अपनी ही पत्नी के षड्यन्त्र से मारे गए। उनके बाद नीरो ने भी लोकस्टा को 'राज्य विषदात्री' के पद पर नियुक्त कर उसकी सेवाएं ली थीं। उसने तो कई नारियों को विष बनाने और उसके प्रयोग की शिक्षा दी थी। लोकस्टा को नये-नये विष बनाने और दासों पर उनका प्रयोग करने की खुली छूट थी। इनसे राजा भी विष बनाने की शिक्षा लेते थे। सीज़र बार्गिया ने अपनी मां वेनोज्जा से विष बनाना सीखा था। वनोज्जा ने स्वयं अपने पति एलक्जेंडर षष्ठ (1431-1503) को विष दिया था।

सोलहवीं और सतरहवीं शती में इटली की नारियां भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहीं। रोम में सन् 1659 में एक गुप्त दल ही बन गया था। इस गुप्त दल की सदस्याएं सबसे धनी-कुलीन परिवार की नवविवाहिताएं होती थीं। ये अपने दासों पर ही नहीं बल्कि पतियों पर भी विष-परीक्षण करती थीं। इनमें तोफाना सबसे कुख्यात रही। विष प्रयोगों के लिए ही वह नेपुल्स में बस गयी थी। उसने ऐसे विष निकाले जो स्वादहीन थे। यही नहीं उनमें किसी तरह की गन्ध भी न थी। पानी या शराब में पांच-छह बूंदें देते ही शिकार बिना किसी पीड़ा के कुछ ही घंटों में काल के गाल में पहुंच जाता था। यह विष उसके नाम पर ही 'अक्वा तोफाना' के नाम से प्रचलित हुआ। उसका एक विष 'अक्वता-दि-नेपोली' भी चर्चित था। इस दल की दो महिलाओं को प्राणदंड मिला। शेष को जनता के बीच तथा गलियों में घुमाते हुए कोड़े मारने की सजा मिली थी।

फ्रांस में भी एक समय में इस प्रकार की अनेक विषकन्याएं हुई थीं। उनमें मेरी मेडलइन द-आब्रे विशेष कुख्यात रही। सन् 1620 में उसका जन्म हुआ था। आश्चर्य का गला सन् 1676 में गिलोटिन से काट दिया गया था। इतिहास में यह विष देने वाली सभी नारियों में अधिक बदनाम रही। इसने अपने पिता, एक बहन और दो भाइयों को विष पिलाया। इनके बाद अपने पति मार्रविकस वे ब्रिनविलियस को ही नहीं, अनेक प्रेमियों को भी उसने चिर-शांति दी। उसकी राह में जो गए मारे गए। इसने हजारों को मारा। यह एक दान करने वाली महिला के रूप में

अस्पतालों में जाया करती थी। मरीजों के लिए कभी भोजन, कभी चॉकलेट और कभी फूल ले जाती थी। वे सारी वस्तुएं जहरीली होती थीं। विष धीरे-धीरे कार्य करता रहता। आबे इतनी सुन्दर और भोली सूरत वाली थी कि उसके ऊपर कोई संदेह ही नहीं कर पाता था। उसकी दृष्टि में अनोखी पवित्रता झलकती थी। किसे पता था कि करुणा और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा यह नारी प्रेम नहीं, मृत्यु की दूत बनकर आती है।

400 ई० पूर्व फारस में भी अनोखी रानी परस्तिश थी। परस्तिश का नाम भर ही सुन्दर था। वैसे वह शैतान-परस्त थी। विष देने में उसे कुशलता प्राप्त थी। उसके छोटे बेटे साइरस (434 401 ई० पूर्व) की पत्नी स्तातिरा बहुत सुन्दर थी। किन्तु वहां भी सास-बहू का सनातन झगड़ा उठ खड़ा हुआ। वह अपनी बुद्धि, सौन्दर्य और पति के प्रेम के बल पर हरम में अपनी धाक जमाना चाहती थी। किन्तु परस्तिश सास थी। उसे बहू का इस तरह प्रभुत्व जमाने का प्रयास अच्छा न लगा। उसने उसे मारने की योजना बनाई। किन्तु स्तातिरा भी कम चतुर न थी। अन्त में परस्तिश ने उसे जिस तरीके से मारा वह उसकी चतुराई का अनोखा प्रमाण था।

एक दिन परिवार के सभी सदस्य खाने पर एकत्र थे। परस्तिश ने गोश्त काटने के लिए एक चाकू, साथ ही दोहरे फलवाला (Double-edged) चाकू उठाया। पहले उसी चाकू से अपने लिए गोश्त काटकर अपनी प्लेट में रखा। इसके बाद बहू को भी उसी चाकू से काटकर मांस दिया। परिवार के अन्य सदस्यों को भी परोसा। कुछ ही घंटों बाद स्तातिरा तड़प-तड़पकर मर गयी। उस चाकू के एक हिस्से की धार विष से बुझी थी। दूसरी ओर की धार साफ थी। उसने अपने एवं परिवार के अन्य सदस्यों के लिए विषरहित धार की ओर से गोश्त काटा था जबकि बहू को मारने के समय उसने बड़ी कुशलता से चाकू घुमाकर, विष लिप्त धार से काटा। इसी कारण वह तथा परिवार के अन्य लोग बच गए और केवल स्तातिरा बहू के ही प्राण गए।

विषकन्याओं का प्रयोग जिस प्रकार प्राचीन काल में राजा-महाराजा करते थे इसका वर्णन आचार्य कौटिल्य ने भी किया है। कौटिल्य ऐसा मानते हैं कि विशेष संक्रामक रोग (Infectious Disease) के कीटाणुओं

(Bacterias) से उपदंश (Syphilis) जैसा रोग यौवनाओं में फैलाया जा सकता है और इन यौवनाओं के साथ संभोग से योद्धा लोग बिना किसी युद्ध के परास्त किए जा सकते हैं। वह यह भी जानते थे कि उपदंश के कीटाणुओं से भरपूर यौवनाओं के स्पर्श मात्र से भी योद्धा नष्ट किए जा सकते थे। उपदंश की बीमारी के कीटाणु महिलाओं में भली प्रकार पनप सकते हैं और उनको किसी प्रकार का कष्ट भी नहीं होता। प्रथम और द्वितीय महायुद्ध में बहुत से सैनिक उपदंश की बीमारी से ग्रस्त थे। उनका उपचार करना बहुत कठिन माना जाता था, किन्तु आज यह रोग असाध्य नहीं है।

आधुनिक विषकन्याएं कई बार संखिया (आरसेनिक) के लवणों का प्रयोग करती हैं। आरसेनिक आक्साइड सफेद होता है और यह टैल्कम पाउडर के साथ मिल जाता है। ऐसे पाउडर को शरीर पर लगाने के बाद यदि कोई व्यक्ति विशेष उनके नजदीक आए और उनके शरीर का आलिंगन करे तो वह मुख द्वारा प्रविष्ट हो जाता है और फिर धीरे-धीरे अपना रंग दिखाता है। यही नहीं, कुछ ऐसे भी रसायन हैं जो शरीर में लगाने के बाद संभोग क्रिया में उत्पन्न पसीने (Sweet) में घुल जाते हैं और संभोगी पुरुष उसको चाट ले तो वह मर जाता है। चूहे मारने वाली दवाई जिंक फास्फाइड का प्रयोग भी आधुनिक विषकन्याएं प्रचुर मात्रा में करती हैं क्योंकि यह सुगमता से उपलब्ध है।

ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि केवल विषकन्याएं ही नहीं, अपितु इनसे जूझने के लिए विष-पुरुष भी बनाए जाते थे। एक विष-पुरुष का उदाहरण मुस्लिम काल में मिलता है। कहा जाता है कि सन् 1650 ई० में गुजरात का शासक महमूदशाह एक ऐसी विधि जानता था जिससे वह विष-पुरुष बना सकता था। उसने इसकी शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी। उसके पिता उसको बचपन से ही पान में एक पदार्थ डालकर खिलाया करते थे। वह इस प्रकार का विष होता था कि यदि कभी वह इस पान को खाकर उपयुक्त स्थान पर पीक कर देता था तो चाटने वाला कुत्ता तक मर जाता था। ऐसे पान को खाने के बाद वह जिस पीकदान का प्रयोग करता था उसको ढककर रखा जाता था, जिससे पास बैठे व्यक्ति कहीं बेहोश न

हो जाए। ऐसा माना जाता है कि वह जिस स्त्री से सभोग करता
उसकी मृत्यु हो जाती थी। बहुतसे यात्रियो ने, जो उस समय भारत अ
हुए थे, इसका उल्लेख किया है। इटली के यात्री परथमा और बारबो
ने अपनी भारतीय यात्रा के वणन मे इसका उल्लख किया है।

प्राचीन भारत मे ही नही, आज भी 'विषकन्याए होती हैं, लेकि
उनको बनाने की और प्रयोग करने की पद्धति बदल गयी है। समयानुस
किसी भी सुदर कन्या को विषकन्या का रूप दिया जा सकता है अ
काय होने के बाद वह एक सामान्य कन्या की तरह अपना जीवन व्यतं
करती है। इससे होता तो यह है कि साप भी मर जाता है और लाठी
नही टूटती। ऐसी विष-कन्याओ को बनाने के लिए कई बार उन
माताए उनको ऐसे लेप लगाने की शिक्षा देती हैं जो पाउडर अथवा
के लेप (Coating) अथवा किसी इत्र मे मिलाकर होठो पर अथवा स्त
पर लगाए जाते हैं। ऐसी विषकन्याए जानती हैं कि पोटेशियम सा
नायड से युक्त लेप यदि यह अपने स्तनो पर लगाए तो स्तनपान करत
व्यक्ति विशेष पहले झटके मे समाप्त हो जाएगा। कहा जाता है कि
लोग कडवे बादामो से भी एक ऐसा पदाथ (एमाइगेडलिन) निकाल
हैं जिसको लेपकर विषरूप मे प्रयोग किया जा सकता है। कुछ लोग
तथा शहद की समान मात्रा मिलाकर भी विष तैयार कर लेते हैं।

किसी भी रण-नीति में विजय प्राप्त करने के लिए चार प्रकार
नीतियों का वणन किया गया है— साम दाम दण्ड एव भेद। मह
व्यास ने एक अवसर पर धृतराष्ट्र से कहा था कि साम नीति अथ
चर्चाओ द्वारा आपसी विवादों को हल करना श्रेष्ठतर नीति है। भेद नी
अथवा कूटनीतिद्वारा लक्ष्यसिद्धि करना श्रेष्ठ है किन्तु दण्डनीति अर्थात् यु
द्वारा प्राप्त की गयी विजय निकृष्ट कोटि की विजय होती है। युग अ
समय की मांग के अनुरूप आयाम परिवर्तित होने लगे। जब साम और दा
नीति इच्छित प्रयोजन के लिए निष्फल सिद्ध होने लगी तब कूटनीति
कूटयुद्धों का काल आया जिसमें छल-कपट, धोखाधड़ी सत्य-असत्य, नी
अनीति सभी कुटिलताए उचित मानी जाने लगीं। कालान्तर में कूटनी
चाणक्य नीति का पर्याय बन गई और आदि मध्य तथा आधुनिक
के बहुतसे शासक, सम्राट तथा सुल्तान कूटनीति का बीभत्स

खेलने लगे।

कूटनीति के अन्तगत शत्रु को मौत के घाट उतारने के लिए विष की विभिन्न शाखाओ, यथा—भोज्य विष, पत्र विष, दृष्टि विष, हवन विष शब्द विष तथा वस्त्र विष का आविष्कार हुआ। 'वस्त्र विष' कूटनीति का अमोघ अस्त्र माना जाता था जिसे न केवल शासक वग अपितु आवश्यकता होने पर राजपूत रमणिया भी अपने सम्मान की रक्षा हेतु उपयोग करने लगी। गानौर की राजपूत रानी अपने रूप-लावण्य के लिए विख्यात थी। उसके रूप-लावण्य का भ्रमर सेनापति खान अपनी वासना तृप्ति के लिए रानी को अपनी अकशायिनी बनाना चाहता था। रानी की प्राप्ति हेतु खान ने गानौर पर आक्रमण कर दुग को हस्तगत कर लिया और रानी के पास दूत के माध्यम से विवाह का प्रस्ताव भेजा। रानी ने अपनी इज्जत को बचाने के लिए प्रस्ताव स्वीकार किया। राजपूतो म प्रचलित परम्परानुसान सेनापति खान जब रानी द्वारा प्रदत्त कीमती वस्त्रों को पहनकर लग्नमण्डप म आया तो कुछ ही देर बाद खान के शरीर से एकाएक आग की लपटें निकलने लगी। और सेनापति धू धू कर जल उठा। खान के प्राणात होते ही रानी स्वय भी अपने महल की छत पर चढ गयी और नीचे प्रवाहित हो रही नदी मे छलाग लगाकर अपने प्राणो का अत कर लिया।

जयपुर घराने मे भी विषाक्त वस्त्रो का उपयोग बहुतायत मे होता था। एक अन्य उल्लेख के अनुसार जयपुर के राजा माधवसिंह (ईश्वरी सिंह) की राजपूत रानी ने भी मारवाड़ नरेश बख्तसिंह को अपनी कूटनीति का शिकार बनाया था। रानी ने बख्तसिंह को विषाक्त वस्त्र भेंट किए थे जिनको पहनने के बाद बख्तसिंह की मृत्यु हो गयी थी। उत्तर मध्यकालीन इतिहास मे भी सम्राटो द्वारा अपने शत्रु को समाप्त करने के लिए विषाक्त वस्त्रों का खुलकर उपयोग होता था। मुगलकालीन सम्राट और अपने युग के प्रखर कूटनीतिज्ञ आलमगीर औरंगजेब ने भी मारवाड नरेश राठौर जसवन्त सिंह के पुत्र पृथ्वी सिंह के विरुद्ध विषाक्त वस्त्रों का उपयोग किया था।

# अध्याय-2

बिना देखे कभी किसी वस्तु का पान न करो
और बिना पढे कभी कहीं हस्ताक्षर न करो।

—स्पैनिश लोकोक्ति

# विषय-प्रवेश

विष वह पदार्थ है जिसकी पर्याप्त मात्रा शरीर मे पहुचकर स्वास्थ्य को हानि पहुचा सकती है अथवा मृत्यु का कारण बन सकती है। विष के शास्त्रानुसार वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक शृंगिक कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र आदि नौ प्रधान भेद हैं। प० राजकिशोर के सुपुत्र श्री विश्वनाथ द्विवेदी द्वारा भावमिश्र की सकलित पुस्तक भाव-प्रकाश के टीका मे वर्णन किया गया है कि--

> विष तु गरल क्ष्वेडस्तस्य भेदानुदाहरे।
> वत्सनाभ सहारिद्र सक्तुकश्च प्रदीपन ॥
> सौराष्ट्रिक शृंगिकश्च कालकूटस्तथव च।
> हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ॥

जिसके पत्ते सम्हालू के सदृश आकृति वाले हों, बछडे की नाभि की सदृश जड हो तथा जिसके पास अन्य पेड न बढ़ें न उगे हो उसे वत्सनाभ विष कहते हैं। जिसकी जड हल्दी के वृक्ष की जड की तरह गांठदार हो वह हारिद्र विष है। जिसकी गांठ मे सक्तु की तरह चूर्ण भरा हो उसे सक्तुक विष कहते हैं। लाल वर्ण वाला, प्रदीप्त अग्नि के सदृश वर्ण वाला (रक्तपीत) और अत्यत दाहकारक हो वह प्रदीपन विष है। सौराष्ट्र प्रदेश मे उत्पन्न होने वाले विष का नामकरण सौराष्ट्रिक किया। जिसको गाय के सींग (Horn) में बांधने पर उस गाय का दूध लालवर्ण का हो जाए उसे द्रव्यगुण जानने वालों ने शृंगिक विष कहा है। देवता और असुरो के सग्राम में देवताओ ने पृथुमालिन नामक एक दैत्य को मारा। उस दैत्य के रुधिर से एक पीपल सदृश वृक्ष उत्पन्न हुआ। उस वृक्ष की गोंद को मुनियो ने कालकूट विष कहा है। यह कालकूट विष अहिक्षेत्र (नागपुर) शृगबेर, कोंकण तथा मलयाचल में होता है। जिनके -

बड़े मुनक्के के गुच्छा के सदृश तथा पत्ते ताड़ के पत्ता की तरह हों, जिसके समीप के पेड़ उसके तेज से नष्ट हो जाते हों, उसे हालाहल विष समझो। यह विष हिमालय, किष्किन्धा, दक्षिणी समुद्र के तट और कोंकण प्रदेश में पैदा होता है। जिसका वर्ण स्वर्ण-पीले (Golden yellow) रंग का हो तथा जो सारवान हो उसे ब्रह्मपुत्र कहते हैं। यह मलयाचल में पैदा होता है। इसके चार भेद हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शूद्र। सफेद रंग का ब्राह्मण लालरंग का क्षत्रिय, पीले रंग का वश्य, और काले रंग का शूद्र समझना चाहिए।

*ब्राह्मण विष रसायनकार्य में देह की पुष्टि के लिए क्षत्रिय, कुष्ठ* रोग निवारण हेतु वश्य और मारण करने के लिए शूद्र विष प्रयोग में लाना चाहिए। विष प्राणनाशक, व्यवायि अर्थात् सम्पूर्ण शरीर में फैलकर पचने वाला या बिना पचे ही सारे शरीर में फैलने वाला, विकाशि अर्थात् *सारे शरीर में रहने वाले वीर्य में से 'ओज' को सुखाकर और शोषण कर* शरीर की संधियां (Joints) शिथिल करने वाला, आग्नेय अर्थात् शरीर में जलन उत्पन्न करने वाला योगवाही अर्थात् अन्य वस्तु के साथ पकने पर दूसरे के गुण को ग्रहण कर उसे और बढ़ाने वाला वात तथा कफ नाशक और मदमारक है। यदि विष को युक्तिपूर्वक सेवन किया जाए तो वह प्राणदायक और रसायन (औषधि) है। यह त्रिदोषनाशक (वात पित्त एवं कफ नाशक), पुष्टिकारक और वीर्यवर्धक है। भावप्रकाश के संकलन-कर्ता भावमिश्र ने लिखा है—

> विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च।
> आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम्॥
> तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम्।
> योगवाहि त्रिदोषघ्नं बृंहणं वीर्यवर्द्धनम्॥

विष साधारणरूप से रूक्ष, तीक्ष्ण सूक्ष्म शीघ्र व्यवायि अर्थात बिना पचे शरीर में फैलने वाले विकाशि विशद अर्थात् आर्द्रभाव का नाशक एवं क्षतादि (Wounds etc) का पूरण करने वाले और दुष्पाच्य अर्थात देरी से हज्म होने वाले होते हैं। इन सब दोषों के कारण प्राणों का भी नाश

करने वाले हैं। कालकूट आदि विष रस (Test) काय मे, रस तैयार करने मे तथा लोह (Iron) आदि धातुओ को स्वण (Gold) मे परिवर्तित करने के काय में प्रयुक्त किए जाते हैं। कुछ वत्सनाभ (Aconite) आदि विष विशेषरूप से शोधित होकर तदनन्तर औषधकम (Medicines) में उपयोग किए जाते हैं। जो दुगुण अशुद्ध विषो में पाए जाते हैं, वे शोधन करने से कम हो जाते हैं, अत औषधियो में डालने के निमित्त इन्हे शोधन करके ही डालना चाहिए। विष कुष्ठ चमरोग वात-पित्त-कफ-नाशक, पौष्टिक एव प्राणदायक रूप मे भी उपयोगी हैं।

माधव (नवीं शताब्दी) के मतानुसार विष दो प्रकार के होते हैं—1 पौधो जैसी स्थिर वस्तुओ से उत्पन्न स्थावर (sedentary) विष और 2 पशुओं द्वारा उत्पन्न जगम (movable) विष। जगम विष के कारण *निद्रा, दुबलता, उष्णता, अजीण* (*Indigestion*), *रसोली* (*Tumour*), अतिसार (Diarrhoea) आदि होते हैं। जबकि स्थावर विष के कारण ज्वर (Fever), हिचकी (Hiccup) दांतो में संवेदनहीनता (Sensitiveness) गल मे दद, मुख से झाग (Foam), मितली (Nausea), श्वास लेने मे कठिनाई आदि लक्षण दिखलाई देते हैं। तरु-मूल (Plant-root) विष के कारण शरीर के अगों मे दद, ज्ञान-शून्यता (Delirium) एव गतिशून्यता (Numbness), पत्तियों के विष से जमाई (Yawning), कपकपी (Shivering) तथा श्वास लेने में कठिनाई, फल विष (Fruit poison) से अण्डकोषो (Testicles) पर सूजन (Swelling), गर्मी एव मूत्र मे कमी, पुष्प विषो (*flower-poison*) के भक्षण से वमन (*Vomiting*) पेट-फूलना (Flatulence) तथा श्वास लेने में कठिनाई, विषैले वृक्षों की राल (Resin) या छाल रस (Bark juice) पीने के कारण मुख से दुगन्ध, त्वचा का खुदरापन एव सरदद, काइल (Chyle) से मुख में झाग अतिसार तथा अगो में भारीपन, खनिज विषों (Mineral Poison) के भक्षण से छाती मे दद बेहोशी तथा तालू (Palate) मे गर्मी अनुभव करना। इन विषों के भक्षण से कुछ ही समय मे मृत्यु हो जाती है।

*माधव (9वीं शताब्दी)* के मतानुसार, यदि किसी प्राणी को विषला तीर लग जाए तो व्रण (Ulcer) में तत्काल पीव (Suppurate) पड़

जाती है और शनै शन व्रण (Ulcer) वाला आर्द्र (moist) एव दुर्गन्ध मय मास (Flesh) मे सुकडन तथा इसके साथ ही प्राणी को प्यास, बेहोशी, ज्वर एव गर्मी का अनुभव होता है। सर्प-दश का प्रभाव विविध होता है। कोबरा अथवा द्रवीकारा (Hooded Serpent) के दशन से तत्काल मूर्छा हो जाती है। ग्रीष्मकाल तथा रुग्णावस्था (Cachetic condition) मे सर्प-दशन विशेषरूप से अधिक घातक होता है। सर्प दशन के भयावह लक्षण इस प्रकार हैं—दशन पश्चात् रक्तस्राव न होना, आघात के कारण धारी (Stripes) का न बनना, शीतल जल से स्नान करने के पश्चात् झुर्रीदार त्वचा (Goose-skin) का उत्पन्न न होना, दशन-स्थल पर काली एव लाल रसौली का दिखलाई देना, जबडा बन्द ( ग (lock jaw) मुख तथा गुदा (Anus) से रक्त का बहना एव बहकी-बहकी बात करना आदि।

माधवनिदान सुश्रुतसहिता (सन् 900 ई०), अष्टागहृदय सहिता (8वी शती) तथा अष्टागसग्रह म विषो के विषय मे विस्तार से लिखा गया है। सोलह विषल मकडो (Spiders) के दशन का वर्णन विस्तार से इनमे किया गया है जो इस प्रकार है ज्वर, गर्मी, अतिसार तथा अन्य लक्षणो के साथ-साथ इनके दशन से अनेक प्रकार के फफोले (Boils) उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार के चिह्न एव लक्षण चूहो बिच्छुओ (Scorpions), डॉस (Gad-fly) विषैले मेढको एव जोको (Leaches) छपकली (House lizard) तथा अन्य कीडो (Insects) चीते के दात एव पजो (Claws) पुच्छहीन-वानरो (Apes) तथा अन्य पशुओ के काटने से भी दिखाई देते हैं

*विष्णुस्मृति मे वर्णन किया गया है कि शासक को ऐसा कोई खाद्य* पदार्थ तब तक नहीं खाना चाहिए जब तक उस आहार को परीक्षण द्वारा विषहीन सिद्ध न कर लिया जाए। सुश्रुतसहिता एव अष्टाग सग्रह मे *वर्णित आधार पर शासक के लिए तैयार भोजन को जब तक किसी पशु* आदि को न खिलाया गया हो तब तक राजा को नहीं खिलाना चाहिए। विषैले भोजन खाने से कौवे मक्खियां तथा अन्य पक्षी भूमि पर गिर जाएगे, कोयल का स्वर कर्कश हो जाएगा, सारस (*Crane*) पागल हो जाएगी

तोते पीडा से कराहेगे, मयूर आनदित होगे, बन्दर मल-त्याग करेंगे तथा तीतर(Partridge) के नेत्रो का प्राकृतिक रग विष को केवल देखते ही परिवर्तित हो जाएगा। यही कारण था कि प्राचीन समय मे सम्भ्रांत परिवार तीतर आदि घर पर पालतू रखते थे। अत राजचिकित्सकों का यह कर्तव्य था कि विषाक्त भोजन से शासको की रक्षा करें और इसी कारणवश राजकीय भोजन का परीक्षण करें। यही कारण था कि चक्र-दत्त (सन् 1040 ई०) एक बगाली शासक के प्रमुख रसोइया-पुत्र होने के कारण प्रसिद्ध आयुर्विज्ञान लेखक हुआ। युद्ध के समय मे भी राजकीय चिकित्सकों को शासक की विषाक्त भोजन से सुरक्षा तथा युद्ध-क्षेत्र मे शत्रुओ द्वारा विषाक्त किए गए कुओ, तालाबो, जलाशयो एव नदियो का परीक्षण करना अनिवार्य था। वास्तव मे अलक्षेन्द्र महान् अपने पास, इसी कारणवश भारतीय चिकित्सक रखते थे ताकि सर्प-दशन एव अन्य रोगो का उपचार सेना मे वे कर सकें। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के महामत्री चाणक्य भी सम्राट को मन्द विष(Slow Poison)दिया करते थे जिससे विषकन्या के आलिगन एव अन्य विषैली वस्तुए उन्हे प्रभावित न कर सकें।

विष शरीर में जाने, अनजाने अथवा धोखे से निम्न ढगो से प्रवेश करता है —

(क) श्वासनली द्वारा
(ख) मुख द्वारा
(ग) टीके द्वारा

(क) श्वासनली द्वारा—विष का प्रभाव अधिकाशत घरेलू गैसो को नाक द्वारा सास लेने पर होता है अथवा अग्नि चूल्हो (स्टोव), मोटर के इजन, भयकर अग्निकाडो या बम फटने के धुए से भी सास घुटने के कारण जीवन को खतरा हो जाता है। जब तक विषैली गैस ने अधिक प्रभाव न डाल दिया हो तब तक पीडित व्यक्ति देखने मे स्वस्थ प्रतीत होता है किन्तु तदुपरात श्वास लेने मे कठिनाई होने के कारण प्रभावित व्यक्ति मूर्छित हो जाता है और अधिक मात्रा मे फेफडो मे विषैली गैस जाने से मृत्यु तक हो जाती है।

(ख) मुख द्वारा —जब विष मुख द्वारा निगला या खाया ज

तो इसका प्रभाव भयानक हो जाता है। इसके भक्षण से सीधा ही भोजन प्रणाली पर प्रभाव पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप जी मितलाना (Nausea), वमन (Vomiting), पीड़ा तथा बहुधा अतिसार (Diarrhoea) हो जाता है। इस श्रेणी में धातु के विष (Metallic Poisons), विषैली काटी (Fungi) तथा कीटाणुओं के संक्रमण (Infection) द्वारा गले-सड़े भोज्य पदार्थ सम्मिलित हैं। विशेषकर क्षमत्व पदार्थों (सांद्र तेजाब, क्षार एवं कीटाणुनाशक पदार्थ) से होंठ मुंह गला तथा आमाशय (Abdomen) जल जाते हैं और अधिक पीड़ा होती है या फिर वात संस्थान (Pneumatic System) पर रक्त (Blood) द्वारा प्रवेश हो प्रभाव डालकर अत्यधिक मूर्छा (Coma) कर देते हैं तथा कभी-कभी दम घुटने (Suffocation) लगता है। इनमें से सर्वविदित विष मद्यसार (Alcohol) है। स्प्रिट, मदिरा तथा बियर जिन्हें अधिक मात्रा में लेने से या फिर पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए कई औषधियां जो टिकियों के घोल रूप में सेवन की जाती हैं (जैसे एस्प्रिन तथा वह औषधियां जिनमें भाग का कुछ अंश रहता है) या निद्रा लाने के लिए (जैसे बारबुरेट मिश्रित औषधियां) आदि प्रमुख हैं। ऐसे सभी व्यक्ति जिन्होंने विष खाया है एवं फल स्वरूप मूर्छित हैं, अधिक विषम तथा शोचनीय स्थिति में रहते हैं। यह उनके लिए भी उतनी ही सत्य है जो मदिरा अधिक मात्रा में पीकर अचेत (मद्य मस्त) हो जाते हैं। कुछ विष वात संस्थान को प्रभावित कर चित्तभ्रम कर देते हैं या दौरे (Fits) डालते हैं। इनके उदाहरण हैं—कुचला तथा प्रसिक तेजाब (Prussic acid) आदि।

(ग) टीके द्वारा—कुछ विष विषैले रेंगने वाले जन्तुओं (सर्प आदि) या पागल पशुओं के काटने अथवा कुछ प्रकार के कीड़ों (Insects) के डंक द्वारा अन्त त्वचा में टीका (Vaccine) प्रक्रिया से फैल जाते हैं। इन कारणों से अत्यधिक मूर्छा एवं दम घुटने लगता है और जीवन को संकट उत्पन्न हो जाता है।

जहां आयुर्वेद में विष के स्थावर (दस प्रकार का विष), जंगम (सोलह प्रकार का विष) तथा गर तीन भेद माने हैं वहां इनके साथ ही सात प्रकार के उपविषों को भी स्वीकारा है। आक का दूध थूहर का दूध,

कलिहारी, कनेर, धुधवी, अफीम तथा धतूरा आदि उपविष होते हैं। इनके अधिक मात्रा से सेवन करने से मृत्यु तक हो जाती है। उपविषों को सामान्यतया शुद्ध किया जा सकता है। कुछ प्रचलित उपविषों के गुण निम्न हैं—

आक विरेचक (Cathartic), वायु (Rheumatic), कुष्ठ (Leprosy), दाह, विष-व्रण, प्लीहा (Spleen), गुल्म (Tumour) उदर रोग, कृमि (Helminth), दद्रु (Ring worm) अर्श (Haemorrhoids) तथा रक्तपित्तनाशक है।

कुचला यह कड़वा, कुछ वायुवर्धक, मादक (Intoxicating), शोक-वेदना को शान्तिप्रदाता, अग्निवर्धक, पित्तश्लेष्मा (Biliary mucus) और रक्तपित्तनाशक है। इसको छ घंटे गोबर के जल मे पकाकर शुद्ध किया जा सकता है।

धतूरा कषाय (Astringent) मधुर (Dulacis), अत्यधिक नशीला, भूख बढाने वाला, वायुकारक तथा ज्वर, कुष्ठ, श्लेष्मा, विष-दद्रु, कृमिनाशक है।

जमालगोटा गुरु, स्निग्ध विरेचक, पित्तकफनाशक (Expectorant) है। इसको भी शुद्ध करके प्रयोग मे लाना चाहिए।

भिलावा कुछ कषाय, पाचक (Digestive), तीक्ष्ण (Acrid) छेदन, विरेचन (Catharsio), अग्निवृद्धिकारक, वायु, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श (बवासीर) गुल्म (Tumour) ग्रहणीनाशक (Anti-duodenal), भिलावे को चूर्णित कर सुर्खी मे दो दिन रखकर धो डालने से उसके फल शुद्ध हो जाते हैं। शुद्ध करने पर ही इसका प्रयोग करना चाहिए। प्रकृति मे यह इतना गर्म होता है कि हाथ पर खुजली उत्पन्न कर छाले (Boils) डाल सकता है।

लांगली विरेचक, तिक्त, कटु-तीक्ष्ण (Acrid), उष्ण, पित्तकर (Biliary), गर्भनाशक (Abortifacient), कृमि कास (खांसी), कुष्ठ, अर्शस्फोटक तथा शूलरोगनाशक है।

सामान्य रूप से मद्य (Alcohol) अति गुणकारी बतलाई गई है। विधिपूर्वक सेवन की हुई शराब अमृत के समान (मद्यं स्वादामृतं युक्त्या

पीतं विषमयया) और विपरीत विधियों से प्रयोग करने पर विष के समान होने में भी विलम्ब नहीं होता। नवीन (ताजा) शराब गुरु, त्रिदोषहर[1] और पुरानी मद्य (शराब) में गुण इसके विरुद्ध बतलाए गए हैं। गरम वस्तु के साथ शराब नहीं पीनी चाहिए। विरेचन (Purgation) लिए हुए तथा भूखे मनुष्य को भी शराब निषिद्ध है। बहुत अधिक तीक्ष्ण या मृदु (Dilute) एवं थोड़े साधन के साथ तथा मलिन (Dirty) शराब न पीए। भारतवर्ष मे मद्य (Alcohol) चावल, महुआ, खजूर, ताड, गुड इत्यादि से बनाई जाती है। विदेशी मद्य के अल्कोहल की मात्रा नुसार स्प्रिट-ब्रांडी रम व्हिस्की जिन प्रथम श्रेणी में द्वितीय श्रेणी में वाइन (पोर्ट, हाइन वाइन, बरगडी शेरी, मद्यपोर्ट, मारडे आदि) तथा अंतिम श्रेणी मे माल्ट, हाप्स, बार्ली का समावेश होता है। मद्यों को केवल कम मात्रा मे ही प्रयोग करने से आमाशय (Abdomen) में पहुचकर जहर रस (Gastric juice) के स्राव (Flow) को बढ़ाकर उसकी गति में वृद्धि हो जाती है और उद्दीपन-पाचन गुण सम्पन्न होता है परन्तु अत्यधिक मात्रा में सेवन कर लेने से गैस्ट्रिक जूस या स्राव (Flow) कम होकर श्लेष्मा (Mucous) का स्राव अधिक होने लगता है और इस प्रकार लगातार सेवन करते रहने से तो अग्निमांद्य (Dyspepsia) उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि शराब हृदय में उत्तेजना (Excitement) उत्पन्न करती है तथापि इसका प्रभाव समाप्त होते ही पहले से भी अधिक थकान की अनुभूति होने लगती है। मद्य का मुख्य प्रभाव मस्तिष्क पर पडता है। अधिक समय तक सेवन करते रहने से शरीर के मुख्य वृक्को (Kidneys) में शोथ (Inflammation) उत्पन्न हो जाता है। अततोगत्वा मद्यसेवी की प्राणशक्ति दुबल हो जाती है। आयुर्वेदानुसार मद्य में लघु तीक्ष्ण, उष्ण सूक्ष्म अम्ल, व्यवायि रूक्ष, विकाशि, तथा विशद ये नौ गुण होते है जो मनुस्मृति के अनुसार मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तिया हैं। मानव के इन्हीं विद्यमान गुणो से नौ रसो का आविर्भाव हुआ जिनको हिन्दी साहित्यकारों ने स्वीकारा। सारांशत विधिवत् मद्यपान से जितने लाभ प्राप्त होते हैं, उससे कहीं अधिक हानियां अविधिवत् पान से उठानी पड़ती हैं।

---

1 कफ पित्त, वात आयुर्वेद में त्रिदोष माने गए हैं।

चाहिए।

चाय और कॉफी अंग्रेजो की प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय देन है जो कि आज भारतीय समाज में विस्तृत रूप से व्याप्त है और भारतवासी स्वास्थ्य के लिए इन हानिप्रद पेयों का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं। चाय 'कैमेलिया थिया' नामक क्षुप (Shrub) की पत्तियां और कॉफी 'कॉफिया-अरेबिका' नामक वृक्ष के बीज होते हैं। चाय से कॉफी का प्रभाव कुछ भिन्न होता है। कॉफी का मुख्य प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। संक्षेपतः चाय और कॉफी अत्यन्त हानिकर हैं, यदि कुछ लाभ है तो अल्प मात्रा में कभी-कभी सेवन करने से।

इस प्रकार मादक द्रव्यों का सेवन सामाजिक बुराई है। जहां तक हो सके, मानसिक व शारीरिक आरोग्य के लिए इनसे बचना चाहिए।

### विष का प्रभाव होने पर उपचार के सामान्य नियम

(1) डाक्टर को शीघ्रातिशीघ्र बुलवाइए और यदि हो सके तो कारण के सम्बन्ध में कुछ सूचना भी साथ भेज दें। निरीक्षण (Examination) के लिए विष का कुछ अंश बचा रहने दें जिससे विष की जाति और मात्रा का भी ज्ञान हो सके। इसके साथ ही कुल बचा हुआ विष, पात्र और शीशी आदि जिससे विष को पहचानने में सुविधा हो, तथा वमन पदार्थ आदि को निरीक्षण एवं परीक्षण के लिए बचाकर रखना चाहिए।

(2) यदि विष के प्रभाव से रोगी मूर्छित हो गया हो तो उसे अधोमुखी (नीचे को मुंह) स्थिति में डालकर उसका सिर एक ओर मोड़ दें परन्तु उसे तकिये (Pillow) पर न रखें। ऐसा करने से वमन-पदार्थ वायु नली में जाने से रुक जाएगे और जीभ (Tongue) भी वायु-मार्ग से दूर रहेगी। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर कृत्रिम श्वासक्रिया (Artificial Respiration) भी तुरन्त दी जा सकती है। अधिक जी मिचलाने (Nausea) तथा वमन (Vomiting) अधिक होने की स्थिति में तीन-चौथाई अधोमुखी (67° शरीर झुकाकर) स्थिति इससे अच्छी हो सकती है। अर्थात् प्रभावित व्यक्ति एक ओर के बल लेटा हुआ होता है और ऊपरी टांग घुटने (Knees) तथा कूल्हे (Hips) से मुड़ी हुई रहती है या छाती को सहारा देने के लिए गद्दी रख दी जाती है। यदि श्वास

क्रिया धीमी हो या मंद (slow) हो जाए तो तुरन्त कृत्रिम श्वासक्रिया आरम्भ कर दीजिए और जब तक चिकित्सक (Physician) न आ जाए तब तक ऐसा करते जाइए।

(3) यदि रोगी ने विष निगल लिया हो तो उसे वमन (उल्टी) करवाकर विष से छुटकारा दिलवाइए। गले को अन्दर पीछे से चम्मच या दो अंगुलियों के द्वारा गुदगुदाइए और फिर यदि यह विधि असफल हो जाए तो वमन लाने वाली औषधि खिलाइए। उदाहरणार्थ, गुनगुने (Lukewarm) पानी के एक गिलास में दो बड़े चम्मच लवण (Salt) डालकर उल्टी (वमन) कराई जा सकती है। ध्यान रहे कि जब रोगी मूर्छित हो अथवा क्षयत्व तेजाब (Corrosive Acid) तथा क्षार (Alkali) सेवन से होंठ और मुंह जल गए हों तो वमन नहीं कराना चाहिए। क्षयत्व तेजाब तथा क्षार त्वचा (Skin), होठों और मुंह पर पीले या धूसर (grey) धब्बे डाल देते हैं जो सरलता से पहचान लिए जाते हैं।

विषहर (प्रतिकारक) देकर विष के प्रभाव को समाप्त कर दीजिए। विषहर ऐसे पदार्थ हैं जो विष के साथ मिलकर उसे निर्दोष बना देते हैं। उदाहरणार्थ, जब किसी तेजाब का सेवन कर लिया गया हो तो चाक या मिल्क आफ मेगनीशिया जैसे क्षार दिए जाने चाहिए।

अधिक मात्रा में पानी मिलाकर विष को पतला (Dilute) कर लें। इससे उसका संतापक प्रभाव (Corrosive effect) घट जाता है तथा गाढ़े तेज (Concentration) की स्थिति में वह शरीर से नहीं बचता। ऐसा करने से तरल पदार्थ के वमन द्वारा हुई जल की शरीर में कमी भी पूरी हो जाती है। शरीर को शांत (ठंडा) करने वाले पीने के लिए पदार्थ दें। उदाहरणार्थ, 200 ग्राम ठंडा दूध, जौ का पानी, कच्चे अण्डे या आटा पानी में फेंटकर पिलाना चाहिए। सावधान रहें कि जहां पर ऐसे अनुदेश (Instruction) दिए गए हैं कि रोगी को वमन (Vomiting) करवा दें तो यह मान लिया जाता है कि रोगी सचेत एवं निगल सकने योग्य है।

# अध्याय-3

प्रकृति, समय और धैर्य—ये तीन सर्वश्रेष्ठ और महान चिकित्सक हैं। —एच० जी० बोन

# प्रतिकारक

बहुत ही प्रचलित लोकोक्ति है कि जहर को जहर मारता है। न केवल भारत में बोली जाने वाली भाषाओ मे बल्कि पश्चिमी देशो मे अंग्रेजी मे भी कहावत है, 'Iron cuts iron' कालान्तर मे प्रचलित इन लोकोक्तियों म तथ्य भी हैं। आपने सामान्यतया देखा होगा कि यदि सपेरे (Snake-Charmer) को सपदश मार दे तो वे उस दशित (bitten) स्थान पर मेढक से निकाले गए जहर मुहरे (Toad stone) को चिपका देते हैं। यह जहरमुहरा कमीज के बटन-आकार का काला पदार्थ होता है। ऐसा सुना गया है कि जब जहरीले मेढक (Toad) को एक घडे (Earthern Pitcher) मे डालकर अन्दर बतन मे धुआ पहुचाया जाता है तो मेढक अपने अन्दर विद्यमान विष को घडे मे ही तरल दशा मे उगलकर बाहर कूद जाता है। सपेरे इस तरल पदार्थ को वाष्पीकरण कर जहरमुहरा प्राप्त कर लेते हैं।

इसी प्रकार अवुद पर लगाया जाने वाला, विष-व्रण पर प्रयोग किया जाने वाला मरहम नीला-तूतिया (Copper Sulphate) अथवा सखिया (Arsenic) द्वारा मिलाकर तैयार किया जाता है। अत अनेक ऐसे उपयोग हैं जो जहर को जहर मारने वाली कहावत मे तथ्य सिद्ध करते हैं। जो विष दूसरे विष के प्रभाव को समाप्त कर दे, प्रतिकारक (Antidote) कहलाता है। प्रतिविष, विषहर, कल्प तथा अगद आदि नामो से यह हमार पौराणिक ग्रथो मे वर्णित है। सुश्रुत में वणनानुसार सभी मद्य (alcohols) स्वाद मे मीठे, क्षुधावधक (Stomachic) एव पाचक, वात और कफ (Phlegm) को कम करन वाल तया पित्त (Bile) को बढाने वाले, दस्तावर (Purger), रक्त शुद्ध करने वाले और उत्तेजना बढाने वाले होते हैं। अगूरो (Grapes) खजूरो (Dates), चावल (Rice), शवत (Syrup)

जौ (Barley) आदि भोज्य पदा॰ से किण्व-पेय (Fermented drinks) तैयार किए जाते हैं। इनका प्रभा भी भिन्न-भिन्न होता है। इस प्रकार पौराणिक तथा वैदिक काल के ग्रन्थों में आठ मुख्य विषयों के अतगत विषों और प्रतिकारकों का भी एक वर्णित विषय था।

अनेक देशों में जहां सप बहुतायत से पाए जाते हैं, सपमूल (Snake-root) अथवा ऐसी ही अन्य जडी-बूटी (Herbs) वहां के निवासियों द्वारा विषाक्त सर्पों की श्रेणियों के दशन पर प्रयोग की जाती हैं। परिणामस्वरूप अनेक जडी-बूटियों का नाम सपमूल रखा गया। इसका वानस्पतिक नाम *Ophiorrhize Mungo* है। औषधियों में अहिमूल ईश्वरी

सर्पमूल

(Aristolochia Serpentaria) क्लोम्प पुरुदुग्ध (Polygalasenecca) तथा सामान्यकी टद्राव (Cimicifugaracemosa) की जडो को भी सप-मूल नाम से जाना जाता है। इनकी जडोको क्रमश अमरीकी तम्बाकू (Virginian) सिनेका (Seneca) औरकाली (black) सपमूलो से पहचाना जाता है। इन सभी मे कटु-तीक्ष्ण (Acrid) अथवा सगध (Aromatic) तत्त्व होते हैं और यदि गम गाढा (Decoction) बनाकर इनका दियाजाए तो अत्यधिकपसीना लाने वाली औषधि (Diaphoretic) अथवा कभी कभी मूत्रवधक (Diuretic) औषधि सिद्ध हुई है।

विषो के प्रभाव और विषाक्तताके अनुसार वानस्पतिक एव खनिज विषो के लिए प्रतिकारक (Antidotes) भिन्न-भिन्न होते हैं, किन्तु इनमे भी सात मुख्य हैं—1 विषपान करने के पश्चात यदि रोगी की जीभ काली और कठोर (stiff) हो, इसके साथ ही बेहोशी, कपकपी, श्वास मे कठिनाई, कमजोरी और उल्टियां हो तो उसको वमनकारी (Emetic) देना चाहिए। शीतल जल के छींटे मारकर मधु (Honev) और घी मे प्रतिकारक (Antidote) मिलाकर तत्काल देना चाहिए। ध्यान रहे कि शहद और घी की मात्रा समान नहीं होनी चाहिए। 2 यदि रोगी को कपकपी पसीना, गर्मी की अनुभूति, गले मे दद, छाती में दद हो और विष आमाशय (Stomach) मे प्रविष्ट हो गया है तो तुरन्त वमनकारी पिलाने के पश्चात् कोई पेट साफ करने वाली (Purgative) औषधि दें। तदुपरात प्रतिकारक प्रयोग में लाए। 3 यदि प्रभावित व्यक्ति के तालु (Palate) पर सूजन, अत्यधिक उदर शूल (Colic), नेत्र कमजोर पीले और सूजे हुए प्रतीत हो तथा उनमें दद हो, हिचकिया (Hiccup) खासी तथा आतो (Bowels) में विष पहुच गया हो तो नाक द्वारा औषधि या मरहम (Ointment) रूप में कोई प्रतिकारक (Antidote) का उपयोग करें। 4 यदि रोगी का विषभक्षण करने के कारण सिर में भारीपन है तो प्रतिकारक को तेल के साथ अथवा कोई तेलीय प्रतिकारक पिलाए। 5 यदि रोगी के चेहरे का रग उडा हो, मुख से लार (Salivation) जा रही हो सम्पूर्ण जोडों (Joints) और शरीर मे दर्द हो तो मुलेठी (Liquorice) तथा शहद के काढे (Decoction) म प्रतिकारक डालकर पिलाए। 6 अचेतनता और प्रचण्ड

अतिसार (Diarrhoea) की दशा म अतिसार के लिए निर्धारित उपचार ही करना चाहिए। 7 कर्पों, कमर तथा कूल्हा (Hips) का पक्षाघात (Paralysis) होने के पश्चात रोगी मृत्यु की गोद में सदा का विलीन हो जाता है।

यदि दुर्भाग्यवश किसी व्यक्ति को सप काट ले तो सप-दंशन भाग पर तत्काल रस्सी, कपडे की पट्टी, चमडे की पट्टी अथवा वृक्ष की अदर की छाल (Bark) बांधनी चाहिए जिससे कि विष शरीर मे न फैल जाए। ध्यान रहे कि बध (Bond) दशनस्थल और हृदय के मध्य मे होना चाहिए। यदिएक से अधिक बध लग जाए तो अत्युत्तम होगा। यदि किन्ही कारणवश शीघ्रता से बध न लग सकें तो दशनस्थल को किसी ब्लेड अथवा तेज धार वाले चाकू से काट देना या छील देना चाहिए। घाव पर गम पानी डालते रहना चाहिए। यदि भिड (Wasp) या मधुमक्खी आदि काट लें तो उस स्थान पर मिट्टी का तल, स्प्रिट या टिंचर आयोडीन तथा कोई गम-गम वस्तु उस स्थान पर रखने से आराम पहुचता है। सप-दशन में कट स्थान पर जहर चूसना (sucking) तथा गम वस्तु से दागना (branding) काय मे शीघ्रता करनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को पागल जानवर कुत्ते आदि ने काट लिया है तो इसमें जरा भी लापरवाही नहीं करनी होगा। फौरन कटे हुए स्थान से ऊपर कसकर कपडा बाध देना होगा। घाव को चीरकर गम पानी मे पोटेशियम परमैंगनेट डालकर धोते रहना चाहिए। कुछ ग्रामवासी काटे भाग पर बारीक पिसी लाल मिच भी भर देते हैं। प्रभावित व्यक्ति को पुराना घी पीने को दें तथा निकट के किसी ऐसे अस्पताल मे ले जाए जहा पागल कुत्त के काटने का इलाज होता हो।

जहा तक सभव हो, किसी डाक्टर की देख रेख मे आपातकालीन स्थिति पर विशिष्ट विषो के लिए निम्न प्रतिकारक देकर बाद मे वमनकारी का प्रयोग करें। साधारणतया अम्ल विषो मे आध गिलास पानी म एक चम्मच अमोनिया अथवा चूने का पानी (Lime water), मैग्नीशिया अथवा चाक आदि प्रतिकारक दिए जाते हैं। क्षार विषो के सेवन मे सिरका (Vinegar) हल्का ऐसेटिक एसिड अथवा सतरे का रस पिलाया जाता है। यदि

ऐसा विष पिया गया है जिसको पहचाना नहीं जा सका तो इसके लिए प्राथमिक उपचार के लिए अण्डा जैतून का तेल (फास्फोरस विषायण के अतिरिक्त) आटा एव जल अथवा चूने का पानी (क्षारीय विषायण के अतिरिक्त) दिया जाए। तदुपरात दूध अथवा जल की पर्याप्त मात्रा पिलाई जाए। उल्टी करान के लिए गले मे अन्दर अगुली करें अथवा कोई वमनकारी पीने को दें। साधारण साबुन और जल यदि बार-बार पिलाया जाए तो उल्टी हो जाती है। प्रतिकारक उपचार का केवल एक भाग है जिसमे वमनकारी औषधिया तथा तेज काली काफी जसे उद्दीपक (Stimulants) भी सम्मिलित है।

कुछ विशिष्ट विषो मे उपयोगी प्रतिकारक (Antidotes) निम्न हैं

क्षार—तनुअम्ल (Dilute Acid), सिरका, पर्याप्त मात्रा मे जल, तनु एसेटिक एसिड (2-3% तनुकृत) लैमन जूस, शात करने वाला द्रव (Soothing fluid), तेल, पिघली हुई चर्बी, दूध, क्रीम आदि। कोई वमनकारी न पिलाए।

ऐलकालायडस (वत्सनाभ, बेलाडाना कुचला आदि) — टानिक एसिड या पोटेशियम परमैंग्नेट से पेट धोवन (Lavage), कृत्रिम श्वास-क्रिया अथवा आक्सिजन चिकित्सा। बारबिटरेटस द्वारा उत्तेजना को नियत्रित करें।

ऐन्टीमनी से तयार शराब (Tarter Emetic) आदि—तेज कॉफी अथवा चाय आधे भरे गिलास पानी म एक चम्मच टैनिक एसिड और तदुपरात अण्डे अथवा दूध दें।

सखिया (Arsenic)—साडियम थायोसल्फट से पेट का धोवन (Lavage) करें। साडियम थायोसल्फेट का इन्जेक्शन शरीर म विद्यमान पानी की कमी होने को रोकता है।

कार्बोलिक एसिड—मैग्नीशियम सल्फेट जसे घुलनशील सल्फेट पिलाए। साडियम सल्फेट (ऐप्सम एव गाबर लवण), तनु ऐल्कोहल, कच्चा अण्डा, आटा एव जल, दूध, कास्टर अथवा मीठा तेल पीने को दें। वमनकारी न दें।

ताबा नीला तूतिया, हरा ताम्रकिट्ट (*Verdigris*) आदि से प्राप्त दूध, अण्डा, साबुन, आटा एव जल।

अवसादक(*Depressants*) (क्लोरल तथा बारबिटरेटस आदि)—पेट की धुलाई करें, पिक्रोटोक्सिन अथवा मेट्राजोल आदि उद्दीपक दें। कृत्रिम श्वासक्रिया करें।

फारमेल्डिहाइड—मृदु पेय(Bland Drinks), दूध तथा जल।

तेजाब ($HCl$, $HNO_3$, $HOOC-COOH$ $H_2SO_4$ $CH_3COOH$) तुरन्त हल्का क्षार पिलाए अमोनिया (आधे गिलास पानी में आठ चम्मच), पाक सोडा (Baking soda), मैग्नीशिया, चॉक, चूना साबुन एव जल अथवा टूथ पाउडर। ध्यान रहे कि वमनकारी बिल्कुल न पिलाए।

आयोडीन—स्टाच तथा जल।

सीसा(*Lead*)—उदर धोवन(*Gastric lavage*)तथा एप्सम लवण तुरत दें। कल्सियम तथा फासफोरसयुक्त पदार्थ खिलाए।

पारद (Mercury) सोडियम फारमेल्डिहाइड सल्फोक्सिलट के द्वारा उदर धोवन करें। कच्चा अण्डा अथवा दूध, एसिडोसिस(*Acidosis*) की दशा मे सोडियम लैक्टेट दें। आघात के लिए उपचार करें।

अफीम कोई प्रतिकारक (वमनकारी तथा उद्दीपक) न दें। यदि श्वास मे कठिनाई हो तो कृत्रिम श्वासक्रिया करें। केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र उद्दीपक बारम्बार दें। रोगी को चलने फिरने न दें।

फासफोरस—जल म मेग्नीशिया, पोटेशियम परमग्नेट (जल में 1/1000 मात्रा) एक गिलास दूध अथवा जल मे आधा चम्मच तारपीन का तेल, अन्य तल अथवा चर्बी न दें।

विषले पौधे—साधारणतया विषैले पौधो के भक्षण पर कोई प्रतिकारक नहीं दिया जाता। इस स्थिति मे गले म अगुली डालकर उल्टी कराए, उद्दीपक तथा कॉस्टर आयल से प्रचण्ड दस्त कराए।

टोमेन (Ptomaine) सड़े मांस, मछली, सब्जिया, सदूषित डिब्बा बन्द भोज्य पदार्थों से उत्पन्न विष—वमनकारी देने के बाद कास्टर आयल (अरंडी का तेल,) ऐप्सम लवण अथवा कोई शीघ्रप्रभावी विरेचक

(Cathartic) पिलाए । गर्म साबुन झागो (Suds) मे एक चम्मच तारपीन का तेल अथवा दो चम्मच ग्लीसरीन डालकर एनिमा लगाए ।

रोगी को पहले से ही उल्टियां हो रही हो तो वमनकारी (Emetic) का प्रयोग नही करना चाहिए। ऐसी स्थिति में प्रचुर मात्रा में गुनगुना (lukewarm) पानी पिलाए किन्तु ध्यान रहे कि कोई भी वमनकारी न पिलाए। यदि विषायण (Poisoning) किसी कास्टिक क्षार (Alkali) अथवा अम्ल (Acid) जैसे क्षयत्व (Corrosive) विष के कारण हुआ है तब भी वमनकारी पीने को न दें। इस सावधानी के करने से पेट (Abdomen) तथा ग्रासनली (Esophagus) की सुरक्षा हो सकती है। यदि होठ मुह एव जीभ (Tongue) जल गयी है तो यह इस बात का सकेत है कि कोई तेज (strong) रसायन का भक्षण किया गया है। ऐसी परिस्थिति में वमन कराना अत्यत हानिकर सिद्ध होगा। इसके साथ ही केवल एक बार वमन कराना ही पर्याप्त नही होगा बल्कि जब तक पेट का धोवन (Lavage) पूर्णतया साफ नही हो जाता तब तक वमन कराते रहें।

यहां पर कुछ उपयोगी वमनकारी (Emetics), शमक (Demulcents), विरेचक (Cathartic) तथा उद्दीपको (Stimulants) का वर्णन किया जा रहा है। इस बात की चेतावनी दी जा रही है कि प्राथमिक उपचार करने से पहले यह अवश्य ही निश्चय कर लें और अपने-आपको सतुष्ट कर लें कि रोगी पर किस विष का प्रभाव है। प्राथमिक उपचार करने के साथ साथ किसी योग्य डाक्टर को बुलाकर सम्पूर्ण वृत्तांत बता दें अन्यथा जीवन को खतरा हो सकता है।

वमनकारी (Emetic)

वमन (Vomiting) कराने के लिए कोई भी निम्न विधि अपनाए —

सूखी सरसो (राई) की एक चम्मच एक गिलास गुनगुने (lukewarm) पानी मे मिलाओ। इसका चौथाई भाग रोगी को पिलाकर ऊपर से एक गिलास गुनगुना पानी पिलाओ। इस विधि को तीन बार एक-दो मिनट के अतराल से तब तक करते रहो जब तक सम्पूर्ण सरसो का मिश्रण और चार गिलास पानी का सेवन न करा दिया जाए।

एक गिलास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक (Sodium Chloride) घोलकर रोगी को पिलाए। प्रत्येक दो मिनट पश्चात् इस विधि को करते रहें जब तक कम से कम चार गिलास इसका सेवन न कर लिया जाए।

एक गिलास गुनगुने पानी में आधा ग्राम कॉपर सल्फेट का घोल बनाए और रोगी को पीने को दें। ऊपर से तुरन्त एक गिलास गुनगुना पानी और पिलाए। हर पन्द्रह मिनट पश्चात् इस विधि को करते रहें जब तक उल्टी न हो जाए।

लगभग 1 3 ग्राम जिंक सल्फेट को एक गिलास पानी में घोलकर रोगी को पिलाएं। पंद्रह मिनट के अन्तराल से इस क्रिया को दोहराते रहें जब तक उल्टी (क) न हो जाए।

इपिकाक का लगभग 1 3 ग्राम चूर्ण एक गिलास में घोलकर रोगी को पिलाए। तत्पश्चात ऊपर से एक गिलास गुनगुना पानी भी पीने को दें ताकि उल्टी हो जाए। इस क्रिया को 2 3 बार करना चाहिए।

यदि उपयुक्त कोई भी वमनकारी उपलब्ध न हो तो मुलायम (mild) साबुन का कुछ भाग आधी बोतल में डालकर तब तक हिलाते रहो जब तक वह पूर्णतया घुलकर मुलायम झाग (Suds) वाला न बन जाए। इस घोल का चौथाई गिलास पिलाकर ऊपर से गुनगुना पानी पिलाओ। प्रत्येक 4 5 मिनट के अन्तराल से तीन बार इस घोल को पिलाओ।

शमक (Demulcents)

शमक वह औषधि है जो शरीर में शान्ति प्रदान करे। इसका उपयोग दग्ध झिल्ली (Inflamed membrane) पर दर्द कम करने के लिए किया जाता है। प्रयोग के समय ये ठंडे होने चाहिए। दूध अण्डे की सफेदी, जिलेटिन तथा ऐल्ब्यूमेन (Albumen) घोल आदि शमक (Demulcent) आसानी से मिल जाते हैं। ये शमक प्रभावित झिल्ली पर सुरक्षात्मक परत चढा देते हैं। तीन अण्डों की सफेदी को एक गिलास गुनगुने (lukewarm) पानी में घोलकर और ठंडा करके रोगी को पिला दें। अथवा एक-दो चम्मच ऐरेबिक (बबूल) गोंद को आधा गिलास गर्म पानी में डालकर हिलाते रहें। घुलने पर ठंडा करें और रोगी को पिलाए। डाक्टर को

बुलाए। यदि डाक्टर के आने मे देर है तो जलन शात करने वाले इस घोल की और मात्रा पिला दें। अथवा शान्ति प्रदान करने के लिए आधा गिलास खनिज तेल (Mineral Oil) भी पिलाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आधा या पौना गिलास शुद्ध जैतून का तल (Salad Olive Oil) भी पिलाया जा सकता है। जलन शात करने के लिए आधा लिटर दूध (ठडा) अथवा एक गिलास पानी मे तीन-चार चम्मच आटा घोलकर भी रोगी को पिलाया जा सकता है।

## विरेचक (Cathartic)

यदि विष द्वारा प्रभावित रोगी को उदर शूल (Abdominal Pain) की शिकायत हो तो विरेचन (Catharsis) के लिए कोई भी औषध अथवा पेय पदार्थ न दें। विरेचक केवल उसी स्थिति मे दें जबकि विष की प्रकृति शीघ्र अवशोषित (Absorption) होने वाली हो अथवा विष-भक्षण का अतराल प्राथमिक उपचार देने के समय कई घटो का हो गया है। विरेचक (Cathartic) रूप मे एक या दो चम्मच मिल्क ऑफ मग्नीशिया अथवा खनिज तेल (Mineral Oil) देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बाजार मे उपलब्ध कोई भी प्रचलित विरेचक दिया जा सकता है। अथवा आधे गिलास गर्म पानी मे मग्नीशियम सल्फेट (ऐप्सम साल्ट) की एक-दो चम्मच घोलकर ठडा कर लें, तत्पश्चात इसका प्रयोग करें। विरेचन हेतु नहाने जैसी उदासीन साबुन (Neutral Soap) का पानी मे घोल बनाकर यदि ऐनीमा प्रक्रिया से गुदाद्वार (Rectum) द्वारा इस घोल को प्रवेश कराया जाए तो भी अच्छा होगा।

## उद्दीपक (Stimulants)

साधारणतया रोगी को, जब वह चक्कर खाकर लड़खड़ाने लगे तो उद्दीपकों (Stimulants) का प्रयोग किया जाता है। सर्वोत्तम उद्दीपक चाय तथा कॉफी हैं और ये प्रत्येक परिवार मे सुविधापूर्वक उपलब्ध भी हो जाते हैं। चाय अथवा कॉफी का तेज काढ़ा (Strong Infusion) बनाकर इच्छानुसार मीठा डालें। वैसे मीठा डालना आवश्यक नहीं है। बच्चो को उद्दीपन के लिए चाय ही देनी चाहिए। उद्दीपक रूप मे आधा गिलास

पानी में एक चम्मच ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया भी दे सकते हैं। रोगी को कम्बल (Blanket) आदि से गरमाहट दें किन्तु पानी की गम बोतल का प्रयोग बिल्कुल न करें। चारपाई पर पैरों को ऊंचा उठाकर रखें। जहा तक सभव हो, रोगी को शान्त लेटा रहने दें।

यूनिवसल प्रतिकारक[1] (Universal Antidote)

तजाबो, औषधियो (Drugs), रसायनो (Chemicals) अथवा धातुई लवणो (Metallic Salts) के द्वारा यदि रोगी को विषायण (Poisoning) हुआ है तो यूनिवसल प्रतिकारक का प्रयाग करना चाहिए। 2 3 चम्मच यूनिवसल प्रतिकारक का आध गिलास गुनगुने (lukewarm) पानी मे मिलाओ। रोगी को धीरे-धीरे यह घोल पिलाए। तत्पश्चात् किसी भी वमनकारी से उल्टी कराए किन्तु ध्यान रहे कि क्षयरत्व पदाथ (Corrosive Substance) भक्षण करने पर वमन न कराए।

---

1 देखें परिशिष्ट

# अध्याय-4

ईश्वर ने ही जीवन दिया था ईश्वर ने ही ले लिया।
धन्य है वह ईश्वर! —बाइबिल

# रासायनिक विष

पानी में विद्युतधारा प्रवाहित करने से आक्सीजन और हाइड्रोजन दो नए पदार्थ प्राप्त होते हैं। ऐसी बहुत सी रासायनिक क्रियाएं हैं, जिनमें एक पदार्थ से दो या अधिक नए पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं। ऐसी रासायनिक क्रिया (Chemical Reaction) जिसमें किसी एक पदार्थ से दो या अधिक नए पदार्थ बनते हैं विघटन (Decomposition) कहलाती है। इसके विपरीत ऐसी रासायनिक क्रिया जिसमें दो या अधिक पदार्थों से एक नया पदार्थ बने, संयोजन (Synthesis) क्रिया कहलाती है। इस प्रकार दैनिक जीवन में अनेक क्रियाएं होती रहती हैं। ये क्रियाएं प्रकृति द्वारा भी हो सकती हैं और मनुष्य द्वारा कृत्रिम भी। किसी पदार्थ के सूक्ष्मतम और रासायनिक रूप से अविभाज्य कण, जिनसे अणु (Molecule) बनते हैं, परमाणु (Atom) कहलाते हैं। ऐसे पदार्थ जिनके अणु एक ही प्रकार के परमाणुओं से बने हों, सरल पदार्थ होते हैं और जिनके अणु विभिन्न प्रकार के परमाणुओं से मिलकर बनते हैं, यौगिक (Compound) पदार्थ कहलाते हैं।

ईसा से पूर्व छठी शताब्दी में भारतीय आचार्य कणाद ने यह कल्पना की थी कि पदार्थ सूक्ष्म कणों से बने हैं जो आगे विभाजित नहीं हो सकते और उन्हें परमाणु कहा गया। इन्होंने 'द्वयणकों' व त्रयणकों' की भी कल्पना की थी जो दो या तीन परमाणुओं के मिलने से बनते हैं। ईसा से पूर्व पांचवीं व चौथी शताब्दी में यूनान के आचार्यों ने भी यही विचार व्यक्त किए थे कि पदार्थ बहुत छोटे छोटे अविभाजित कणों से बने होते हैं। आजकल अविभाजित कणों को ही रासायनिक तत्त्व (Element) कहा जाता है।

रासायनिक तत्त्वों को उनसे बनने वाले सरल पदार्थों के गुणों के आधार पर धात्विक (Metallic) तथा अधात्विक (Non metallic)

दो उप-वर्गों मे बांटा गया है। अपनी मुक्त अवस्था में धात्विक तत्वों द्वारा जो सरल पदार्थ बनते हैं उन्हें हम धातु कहते हैं। साधारण ताप (25° सैल्सियस) पर पारे (Mercury) को छोड़कर शेष सभी धातु ठोस अवस्था मे होते हैं। इनमे एक विशेष धात्विक चमक होती है और ये बिजली तथा ऊष्मा के सुचालक (Good Conductor) होते हैं। अधिकांश धातु घात्वध्य (ductile) होते हैं कुछ भगुर (brittle) भी होते हैं। अपनी मुक्त अवस्था मे अधात्विक तत्वो से जो सरल पदार्थ बनते हैं उन्हे अधातु (Non metals) कहते हैं। धातुओ के तरह अधातुओं के गुणो में आपस मे निकट समानता नही होती। साधारण अवस्था में कुछ अधातु, (क्लोरीन, आक्सीजन, नाइट्रोजन इत्यादि) गैस होते है और कुछ (आयोडीन, गधक, फासफोरस, कार्बन इत्यादि) ठोस पदार्थ के रूप में होते हैं। एक अधातु जिसे ब्रोमीन कहते है, तरल अवस्था मे होता है। अधातु बिजली तथा ऊष्मा के कुचालक (Bad Conductor) होते हैं।

पन्द्रहवीं शताब्दी मे भावमिश्र द्वारा रचित पुस्तक भावप्रकाश में पदार्थों अर्थात् धातुओ (Metals) की सख्याए सात लिखी हैं —

स्वर्णं रूप्य च ताम्र च वङ्ग यशदमेव च।
सीस लोह च सप्तते धातवो गिरिसभवा॥

अर्थात् सोना (Gold), चादी (Silver) ताबा (Copper) रांगा (Tin), जस्ता (Zinc), सीसा (Lead) और लोहा (Iron) ये सातों धातु कहलाते हैं। इनकी उत्पत्ति पर्वतों मे होती है।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य मे रूसी वैज्ञानिक एम० वी० लोमोनोसौन ने बतलाया कि पदार्थों का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि हमें पहले यह ज्ञात हो कि वह पदार्थ कैसे और किनसे बने हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे ब्रिटिश वैज्ञानिक डाल्टन ने भी ऐसे ही विचार व्यक्त किए। पदार्थों के गुणों-अवगुणों का अध्ययन किया गया। उनके भौतिक एव रासायनिक परिवतनो और क्रियाओं की ओर विशेष ध्यान दिया गया। क्योंकि रासायनिक परिवतन तापमान, आर्द्रता (Humidity), आनुपातिक भार तथा अवधि या समय पर निभर करता

है। अत यह स्वाभाविक है कि पृथ्वी मे विद्यमान धातु आपस मे तापमान की उपस्थिति में सयोग करें। तांबा जब गधक से सयोग करता है तो नीला-तूतिया (Cooper Sulphate) बनाता है और इस रासायनिक परिवतन के उपरान्त तांबे और गधक में पृथक-पृथक् गुणों की तुलना में नीला तूतिया का अपना अलग ही गुण है जो विषाक्त होता है।

ये धातु और अधातु ही विशेष परिस्थितियों में रासायनिक क्रियाओं के अन्तगत प्राणी पर अच्छा और बुरा प्रभाव डालते हैं। शोधित किए हुए धातु औषधिकम मे प्राणी को उपयोगी हैं किन्तु आवश्यकता से अधिक और अशुद्ध रूप में सेवन करना मनुष्य के लिए कष्टदायक है। यहां पर धातु, अधातु तथा इनके सयोग से बने यौगिकों का भक्षण करने पर मनुष्य के शरीर मे उत्पन्न क्रियाओं के प्रभाव एव उपचार का वणन किया जा रहा है।

## आतिशबाजी का पाउडर

लक्षण—*मितली वमन, सिरदर्द, पीलापन, मुख तथा गले में जलन एव सकोचन (Constriction), आघात उत्पन्न हो सकता है, सूक्ष्म हृद्‌पात (Cardiac failure), प्रलाप, आक्षेप, समूर्च्छा।*

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

प्रतिकारक रूप मे मिल्क ऑफ मैग्नीशिया पिलाए। सरसों (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक (बबूल) गोंद से बनाकर शामक पिलाए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## आयोडीन (Iodine)

लक्षण—अधिक प्यास, मुख तथा गले मे जलन एवं सूजना, नीले या बादामी रंग की वमन उदरीय शूल।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल[1] प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन

1 यूनिवसल प्रतिकारक का विवरण परिशिष्ट मे देखें।

कराए। ऐरेबिक (बबूल) गोद को शामक रूप मे पिलाए। दूध या अण्ड की सफेदी भी दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## आयोडीन युक्त यौगिक

लक्षण—मुख मे धात्विक स्वाद, वमन, आक्षेप (खिचाव)।
प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—
यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड (नमक) का घोल पिलाकर वमन कराए। ऐरबिक (बबूल) गोद को शामक रूप में पिलाए। दूध या अण्डे की सफदी भी दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## आयोडोफार्म (Iodoform)

लक्षण—अवसाद (Depression) मूर्च्छा सिरदद, जडिमा (Stupor), प्रलाप (Delirium)
प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—
यूनिवमल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। रोगी का गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## ऑक्सेलेट युक्त यौगिक

लक्षण—मितली (Nausea), वमन (Vomiting) गले म दद तथा तीव्र उदरशूल, मांस-पेशी स्फुरण (Muscle twitching)
प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—
मिल्क आफ मैग्नीशिया दीजिए। सरसा का वमनकारी सेवन कराए। ऐरेबिक गाद के समान शामक पेय द। तुरन्त चिकित्सक को बुलाए।

## ईथर (Eather)

लक्षण—धीमी गति का श्वास आख की पुतली का फैलाा श्वास लेने मे कठिनाई।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

| | |
|---|---|
| सूघने की दशा मे | शुद्ध वायु मे रोगी को सुलाए। कृत्रिम श्वसन प्रदान करें। |
| सेवन की दशा मे | सोडियम क्लोराइड वमनकारी दें। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया दें। चिकित्सक को बुलाए। |

## उपापचयी विष (Economic Poisons)

इन विषो मे वे सभी पदार्थ आते हैं जिनका उपयोग मनुष्य अपने चारो ओर सवत्र व्याप्त रहने वाले शत्रु के प्रति कठोर कदम उठाने मे करता है। इनमे कीटनाशी (Insecticides) कवकनाशी (Fungicides) तणमारक (Herbicides), *कृन्तकनाशी* (Rodenticides) *तथा अन्य जीवाणु*-नाशक (Germicides) रसायन सम्मिलित हैं। इतिहास साक्षी है कि इन कीटो (Pests) का आक्रमण इतना भयानक है कि कोई भी प्राणी चाहे वह मानव है अथवा पशु इनसे अछूता नही रहा है। टिड्डियो (Locusts) के उपद्रव और प्लेग (Plague) के आतक को कौन नही जानता और इसका वणन बाइबिल म भी पण रूप से मिलता है। प्लेग के भयकरतम विनाश के परिणाम पुस्तको म भरे पड़े हैं। ऐसी परिस्थितियो को नियत्रण मे लाने के लिए उपापचयी विष ही अत्यधिक लाभप्रद एव उपयोगी सिद्ध हुए हैं। ऐसे स्थान जो कीट, पिस्सुओ आदि के आतक से निजन हो गये थे अब नाशकनाशी (Pesticides) के आविष्कार से पुन जगल मे मगल का दावा करते हैं।

सन् 1860 से पूव कीटो पर नियत्रण करने के लिए रसायनो के प्रयोग का वज्ञानिक साहित्य मे बहुत ही कम वणन मिलता है। इससे पूव कीटनाशियो (Insecticides) का निर्माण देवदार (Ceder) वृक्ष की लकडियों चकोतरा (Citronella), लाकस्पर (Larkspur), तम्बाकू (Tobacco) जैसे पेड-पौधो से किया जाता था किन्तु आजकल वनस्पतियो के स्थान पर रसायनो का उपयोग किया जाता है। य नाशकनाशी क्लोरीनी

कम हाइड्रो-कार्बन अथवा कार्बनिक फास्फोरस यौगिकों द्वारा तैयार किए जाते हैं। हैलोजनयुक्त हाइड्रो-कार्बन द्वारा उत्पादित कारगर डी०डी०टी० मीथॉक्सीक्लोर बेंजीन हेक्साक्लोराइड, क्लोरडेन एल्ड्रिन डाइएल्ड्रिन हैप्टाक्लोर टॉक्साफीन तथा डाइमन हैं और फास्फोरस यौगिकों में पैराथियान ई०पी०एन० मैलाथियॉन, डायज़िनान तथा बेयर यौगिक हैं। जहाँ एक ओर इन उपयोगी विषों के लाभ हैं वहाँ ही दूसरी ओर इनसे हानियाँ भी हैं। अतः अत्यधिक विषैले होने के कारण इनके निर्माण, प्रयोग तथा अनेक उपयोगों में बहुत ही सावधानी रखनी पड़ती है। इनका प्रभाव अन्तःश्वसन (Inhalation) अथवा निगलने, पकड़ने हाथ (Handling) और छिड़काव के समय अधिक होता है या फलों तथा सब्जियों को काटते समय इनमें विद्यमान रसायनों के कारण त्वचा सम्पर्क के समय भी संकट मय है। इन विषों के प्रभावन से सिरदर्द, चक्कर आना, उल्टियाँ, उदर शूल (Abdominal Pain), अतिसार (Diarrhea) पसीना, मानसिक विभ्रम, आक्षेप (ऐंठन) तथा संमूर्छा हो जाते हैं।

लक्षण—चक्कर आना, सिरदर्द, वमन, उदरशूल, अतिसार, पसीना आना, मानसिक संभ्रम (Mental Confusion), अस्पष्ट दृष्टि, आक्षेप (Convulsions) एवं संमूर्छा (Coma) आदि।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

सूंघने (अन्तःश्वसन) की दशा में—

(1) रोगी को शुद्ध वायु में ले जाएं।

(2) आंखों और त्वचा के प्रभावन पर इनको पूर्णतया जल से धोएं।

सेवन की दशा में—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक दें।

2 सरसों (राई) का वमनकारी सेवन कराएं।

3 यदि उद्दीपक की आवश्यकता हो तो ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, तेज चाय अथवा कॉफी पीने को दें।

4 चिकित्सक से सहायता लें।

## एथिल एल्कोहॉल (Ethyl Alcohol)

एथिल ऐल्कोहॉल एक भौतिक विष है जो सम्पूर्ण शरीर के कार्य को अस्त-व्यस्त कर देता है। कम मात्रा में सेवन करने से प्रभाव कम होता है किन्तु अधिक मात्रा में पान करने से विष समान कार्य करता है। जब हम ऐल्कोहाल विषायण की बात करते हैं तो केवल शारीरिक दृष्टिकोण का ही ध्यान में नहीं रखा जाता बल्कि मनोवैज्ञानिक सामाजिक तथा आर्थिक कारकों की ओर भी दृष्टिपात करते हैं। क्योंकि ऐल्कोहॉलसेशरीर के साथ-साथ इनका भी विनाश होना अवश्यम्भावी है। यह सब मानते हैं कि शरीर में अधिकएल्कोहॉल की उत्पत्ति का कारणकेवल शराब पीना ही नहीं अपितु अनेक ऐसे प्राकृतिक प्रक्रिया व विधान हैं जिनके कारण शरीर में शराब की मात्रा अधिकहो जाती है। किण्वन (Fermentation) एक ऐसी प्राकृतिक विधि तथा नियम है जिसके द्वारा शरीर में ऐल्कोहॉल की मात्रा स्वतः ही निर्मित होती रहती है। यह दैवी नियम प्राणी जगत की उत्पत्ति के समय से ही है। पौराणिक ग्रंथों के आधार पर सुरापान बहुत ही प्राचीन तथ्य है। फल रसों, कुछ वृक्षों का रस, सब्जियों तथा अवशेषों का किण्वन (Fermentation)ही ऐल्कोहॉल प्राप्ति का प्राकृतिक स्रोत है। जब छोटे-छोटे यीस्ट (Yeast) पौधों को शकरा (Sugar) की उपस्थिति में द्रव में रखा जाता है तो ऐल्कोहॉल उत्पादित होता है। यीस्ट तीव्रता से गुणित (multiple) होकर अपने ऐन्जाइमों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप शकरा को कार्बन डाइऑक्साइड तथा ऐल्कोहॉल में बदल देते हैं। जब ऐल्कोहॉल का मान 14 प्रतिशत पहुंच जाता है तो किण्वन स्वतः ही बन्द हो जाता है। मनुष्य ने जब से कृषि करना आरम्भ किया तब से ही बीयर बनाना आरम्भ हुआ है। यह बहुत ही पुरानी विधि है। इसमें अनाज के किण्वन का वर्णन है जिसमें सुगंध के लिए माल्ट भी मिलाया जाता था।

लक्षण— वमन, समूर्च्छा (Coma) तथा कभी प्रसन्न मुद्रा में तो कभी झगड़े की दशा में।

### प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

1 यदि वमन (उल्टियां) आरम्भ नहीं हुई हो तो सरसों का वमनक दे

पेय दें।

2 तेज चाय या कॉफी पीने को दें।

3 तुरन्त चिकित्सक को बुलाए।

## एथिलीन डाइब्रोमाइड

लक्षण—मितली (Nausea) सिरदर्द, चक्कर आना, श्वास नली म खुजलाहट, श्वास घुटन।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अत श्वसन दशा म—

1 रोगी को शुद्ध वायु म ले जाए।

2 कृत्रिम श्वास आवश्यकतानुसार दें।

3 उददीपक की अवस्था म ऐरोमटिक स्प्रिट आफ अमोनिया पीने को दें।

निगलन की दशा म—

1 यूनिवमल प्रतिकारक दें।

2 सोडियम क्लोराइड वमनकारी पीने को दें।

3 उददीपक की अवस्था मे गम चाय कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमोनिया का सेवन कराए।

## एड्रिनलिन (Adrenalin)

लक्षण—प्रस्पन्द (Throbbing) सिरदद, चक्कर आना कम्पन (Tremor) चिन्ता (Anxiety)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

रोगी शान्त रहे और आराम करें। उत्पन्न भय को दूर करें।

तुरन्त चिकित्सक को बुलाए।

## एनिलीन (Aniline)

विषकारक स्थान—अस्पताला मे उपयोगी लिनन (Linen) वस्त्रा

पोतडो (Diapers), धुलाई के कपडा म लगाई जाने वाली स्याही अथवा रग के सेवन करन के कारण उत्पन्न विषाक्तता ।

लक्षण—त्वचा नीली पड जाती है, वमन तथा अकित भाव-हीनता। (Apathy)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

विषाक्तता के स्रोत को हटा दें। यूनिवसल प्रतिकारक पीन को दें।

सोडियम क्लोराइड का वमनकारी दें यदि ऐस्कॉर्बिक एसिड उपलब्ध हो तो रोगी को 100 मिलीग्राम दें। चिकित्सक को तुरन्त बुलाए।

## ऐक्रिलोनाइट्राइल (Acrylonitrile)

लक्षण—रबड उद्योग म धुआरी (Fumigant) रूप म इसका प्रयोग किया जाता है और फलस्वरूप मितली एव वमन, मुख और होठा पर झनझनाहट की अनुभूति लडखडाना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

रोगी को स्वच्छ वायु मे ल जाए। कृत्रिम श्वास की व्यवस्था कर। यदि रोगी सचेत है तो ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमानिया पीन को द। रोगी को गम रखें और शात स्थिति मे लेटा रहने दें।

निगलन की दशा में—

सोडियम क्लाराइड वमनकारी पीन को दें। यदि उद्दीपक की आवश्यकता हो तो ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमानिया दें।

## ऐंटिमोनी (Antimony)

लक्षण—मुख मे धात्विक स्वाद वमन, मुख गल तथा पेट म पीडा उगलियो मे ऐंठन (Spasm) भुजाओ तथा टागो मे ऐठन लडखडाना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पीन को दें। सरसों का वमनकारी पिलाए। ऐरेबिक गोद का शमक रूप मे दें।

## ऐपोमोरफीन (Apomorphine)

लक्षण—अत्यधिक उल्टिया श्वास में अश्रुधारा, परिक्लांति (exhaution) या थकावट लड़खड़ाना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

उल्टिया आरम्भ होने से पूर्व यूनिवर्सल प्रतिकारक देना चाहिए। ऐरामेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया का सेवन कराए और तदुपरांत अधिक मात्रा मे पानी पिलाए। रोगी को गर्म रखें और शांत रहने दें।

## ऐटाब्रीन (Atabrine)

लक्षण—मितली उल्टी, अतिसार उदरशूल तथा जड़िमा (Stupor)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पीने को दें। सोडियम क्लोराइड का वमनकारी दें। चिकित्सक की सहायता लें।

## ऐलकालॉयड्स (Alkaloids)

लक्षण सेवन की गई औषधियो के साथ-साथ इनके प्रभाव एव लक्षण विभिन्न होते हैं।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पीने को दें। सरसो का वमनकारी पिलाए। रोगी को शांत तथा गर्म रखें। तुरन्त चिकित्सक को बुलाए।

## एस्पिरिन (Aspirin)

(ऐसिटाइल सलिसाइलिक एसिड)

लक्षण—मितली तथा उल्टिया, अचेतनता, पसीना आना, प्रलाप (Delirium) एव लड़खड़ाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसो का तैयार वमनकारी दें। रोगी को शांत एव गर्म रखें। चिकित्सक को बुलाए।

## ऐसीटनिलाइड (Acetanılide)

लक्षण—मितली एव उल्टिया, शरीर का तापमान कम होना, सुस्ती (sluggıshness), लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यदि उल्टिया नही हुई हो तो शुष्क सरसो का वमनकारी तयार करके दें। उद्दीपक की आवश्यकता होने पर गम चाय, कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए। रोगी को शात एव गम रखें। चिकित्सक को बुलाए।

## ऐसीटोन (Acetone)

लक्षण—सिरदद, उत्पीडन (Oppressıon) की अनुभूति, मन्द नाडी (Pulse) समूर्च्छा तथा आलस्य (Drowsıness)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

1 रोगी को स्वच्छ वायु म ले जाए।

2 कृत्रिम श्वसन की भी आवश्यकता हो सकती है।

निगलन की दशा म—

1 सोडियम क्लोराइड का वमनकारी पिलाए।

2 ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया को उद्दीपक रूप म देना चाहिए।

## ऐसीटिलकोलीन (Acetvlcholıne)

लक्षण—पसीना आना लालास्राव (Saııvatıon)
विरेचन (Purgıng), लडखडाना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो का तयार वमनकारी द। उद्दीपक रूप म ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, तज चाय या कॉफी पीन को दें। चिकित्सक का परामश लें।

## कपूर (Camphor)

लक्षण—पेट तथा गले में दर्द, उल्टियाँ, चक्कर आना, कमजोरी अनुभव करना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों का वमनकारी पीने को दें। ऐरेबिक गोंद का शामक पेय रोगी को दें। चिकित्सक को बुलाएं।

## क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate)

लक्षण—थकावट आलस्य तथा नींद का अनुभव करना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों का तैयार वमनकारी पीने को दें। तेज कॉफी चाय या ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमोनिया आदि कोई उद्दीपक दें। रोगी को गर्म तथा शांत लेटा रहने दें। चिकित्सक को बुलाएं।

## क्लोरडेन (Chlordane)

लक्षण—सिर चकराना (giddiness), सिरदर्द मितली, वमन, उदरशूल, अतिसार, लालास्राव पसीना आना (Sweeting), अशांत दृष्टि मानसिक संभ्रम छाती का जकड़ना (Tigntness), आक्षेप (Convulsions) लकवा (Paralysis) तथा संमूर्च्छा।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

अंतःश्वसन की दशा में—

1 रोगी को स्वच्छ वायु में ले जाएं।

2 साबुन तथा जल से धोकर आंखों तथा त्वचा (Skin) को साफ करें।

निगलने की दशा में—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं।

2 सरसों का तैयार वमनकारी दें।

3 उद्दीपक की आवश्यकता अनुभव करने पर तेज चाय, कॉफी या ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें।

4 चिकित्सक को बुलाए।

चेतावनी —यह कीटनाशी है और उपयोग करने पर आहार तथा फसलों को सदूषित कर सकता है। भक्षण करने तथा त्वचा द्वारा अवशोषण (Absorption) होने पर बहुत विषैला है।

## क्लोरेट्स (Chlorates)

लक्षण—मितली, वमन, पेट-दर्द लड़खड़ाना आदि।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पीने को दें। वमनकारी रूप में सरसों का पेय दें। उल्टिया बद होने पर ऐरेबिक गोद का शामक पेय पिलाए। यदि उद्दीपक की आवश्यकता पड़े तो ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए। चिकित्सक को बुलाए।

## क्लोरीन गैस (Chlorine Gas)

लक्षण—श्वास लेने मे कठिनाई, छाती में जकड़न (Tightness) नाड़ी की गति धीमी।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए। रोगी को ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया की वाष्प सुघाए। ऐरेबिक गोंद जैसा शामक पेय पीने को दें। अण्डे की सफेदी या दूध भी पिलाया जा सकता है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## क्लोरीन जल (Chlorine water)

लक्षण—पेट तथा गले में जलन-सी अनुभव करना, वमन, श्वास लेने में कठिनाई।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसों का वमनकारी दें। शामक

रूप में दूध पिलाए, अण्डे की सफेदी या खनिज तेल के समान कोई सौम्य तेल (Bland Oil) आधा गिलास भरकर पिलाए।

बाह्य उपचार—

शुद्ध जल से प्रभावित स्थल को धोए। जल में मिल्क ऑफ मैग्नीशिया का घोल बनाकर लेप करें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## क्लोरोपिक्रिन (Chloropicrin)

लक्षण—श्वास नलिका तथा आखो मे जलन एव खुजलाहट-सी अनुभव करना, भय अनुभूति, श्वासावरोधन (Asphysiation) के कारण मृत्यु तक हो सकती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा में—

1 तुरन्त स्वच्छ वायु मे लिटा दें।
2 कृत्रिम श्वासप्रक्रिया कर सकते हैं।
3 रोगी को गर्म रखे तथा शातिपूर्वक लेटा रहने दें।

निगलने की दशा मे—

1 सोडियम क्लोराइड से वमन कराए।
2 यदि उद्दीपक की आवश्यकता हो तो कॉफी, चाय या ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए।
3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## कास्टिक पोटाश (Caustic Potash)

अन्तर उपचार (Internal Treatment)

लक्षण—मुख, गले तथा पट-दर्द एव जलन, प्यास लगना, वमन आक्षेप, लड़खड़ाना आदि।

सिरका (Vinegar) जसा प्रतिकारक 15-30 घन-सेंटीमीटर सिट्रिक एसिड हल्का नारगी का जूस अथवा नीबू का रस पिलाए। प्रतिकारक को

मात्रा सेवन की गई क्षार (Alkali) की मात्रा पर निर्भर करेगी। ऐरेबिक गोंद का शामक (Demulcent) पीने को दें।

वाह्य उपचार (External Treatment)

लक्षण—प्रभावित अंग में दर्द एवं जलन तन्तु (Tissue) भी नष्ट हो सकते हैं।

जल से अत्यधिक धोना चाहिए। बोरिक एसिड का जल में घोल बनाकर लेप करना लाभप्रद होगा। यदि क्षार (Alkali) आंख में गिर गई हो तो बोरिक एसिड के सतृप्त घोल से धोना उत्तम होगा। तत्काल चिकित्सक को बुलाए।

## कार्बन डाइऑक्साइड

लक्षण—श्वास घुटन, अचेननता (बेहोशी)

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

रोगी को शुद्ध वायु में ले जाए तथा कृत्रिम श्वास प्रक्रिया आरम्भ करें। उद्दीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात लेटा रहने दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## कार्बन डाइसल्फाइड

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—पेंट तथा वार्निश हटाने वाले पदार्थों रबड़ सीमेंट जीवाणु-नाशी (Germicides) शलभ विनाशी (Moth-exterminator) कृमिनाशी (Vermi-killer), शीत वल्कनीकरण एजेंट (Cold Vulcanizing Agent) रबड़-मोम घोलक, तेल एवं वसा (Fat) घोलक आदि में यह प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—सिर चकराना (Giddiness), मितली, वमन लकवा (Paralysis), क्षीण नाड़ी तथा पाण्डुता।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

1 तत्काल स्वच्छ वायु मे रोगी को लिटाए।

2 कृत्रिम श्वसनप्रक्रिया की जा सकती है।

निगलने की दशा मे—

1 आधा प्याला औषधीय खनिज तेल पीने को दें।

2 सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन कराए।

3 उद्दीपक रूप मे ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, चाय अथवा कॉफी पिलाए।

4 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—सूघने और सेवन करने पर अत्यधिक विषैला है।

## कार्बन टैट्राक्लोराइड

लक्षण—चक्कर आना, मितली,वमन, ज्वर, समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

1 रोगी को स्वच्छ वायु मे लिटाए।

2 कृत्रिम श्वसन-प्रक्रिया आरम्भ करें।

3 ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए।

निगलने की दशा में—

1 सरसो के वमनकारी से वमन कराए।

2. चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

नोट—क्लोरोफाम के भी उपयुक्त लक्षण एव उपचार हैं।

## कार्बन मोनोक्साइड

लक्षण—सिर चकराना, सिरदद कनपटी स्फुरण (Temple Thorbbing), वमन तथा अचेतन्ता।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए। रोगी को गर्मी पहुचाए। कृत्रिम श्वसन प्रक्रिया आरम्भ करें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## कुनैन (Quinine)

लक्षण—कानो मे झनझनाहट, सिरदर्द, चक्कर आना, अशात दृष्टि, वमन, समूर्च्छा, अनिद्रा (Insomnia)।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसो से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। गर्म चाय अथवा कॉफी भी पिलायी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## केन्थेराइड्स (Cantharides)

लक्षण—मुख में जलन सी अनुभव करना, तत्पश्चात् सूजन और छाले (Blistery) वमन, पेट मे दर्द, ठिठुरन (Chills), लडखडाना, अधिक प्यास, लार बहना खूनी दस्त।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सरसो से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। दूध मे अण्डे की सफेदी पिलाए। ऐरेबिक गोद का शामक पेय पिलाए। रोगी को शात और गर्म रखें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—चिकित्सक के परामर्श बिना वसीय पदार्थ (Fatty Substances) का सेवन न कराए।

## कैनेबिस (Cannabis)

देखें भाग

## कैफीन (Caffeine)

लक्षण—मितली, वमन, अनिद्रा, आक्षेप, हृदय-स्पदन बढना और दर्द होना, उच्च रक्तचाप, नाडी की गति तेज।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। कॉफी पीने की आदत छुड़ाए। सरसो से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## कैडमियम लवण (Cadmium Salts)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—ये लवण फोटोग्राफिक एजेन्ट के रूप में कैडमियम गैल्वेनोप्लेटिंग तथा आतिशबाजी (Pyrotechnics) में प्रयोग किए जाते हैं।

लक्षण—सिरदर्द शुष्क गला, वमन तथा छाती में जकड़न (Tightness) अतिसार लालास्राव (Salivation), पेट तथा मांसपेशियों में दर्द।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

रासायनिक प्रतिकारक के रूप में मिल्क ऑफ मैग्नीशिया की 1 2 चम्मच पिलाएं। यदि उल्टियां न हुई हों तो सरसों से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराएं। ऐरेबिक गोंद का शामक (Demulcent) पिलाएं। आवश्यकता होने पर, ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया अथवा तेज ठंडी कॉफी या चाय उद्दीपन के लिए दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## कौल्चिसिन (Colchicine)

लक्षण—वमन लालास्राव, अतिसार, आमाशय पीडा (Gastric pain), आक्षेप लड़खड़ाकर गिरना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) का तैयार वमनकारी पिलाकर वमन कराएं। उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## खपर (Black Jack)

खपरिया एक प्रकार का तूतिया भेद है। इसका लैटिन नाम Zinci Sulphidum है। यह चरपरा खारा कषैला, वमनकारक, दस्तावर, शीतल, नेत्रों को हितकारी, और कफ, पित्त, विष, पथरी (Stone), कोढ़ (Leprosy) तथा खुजली को दूर करता है। वास्तव में यह जसद (Zinc) का यौगिक है जो गंधक के योग से बन जाते हैं। इसको पहले

ताम्र (Copper) का यौगिक मानते थे किन्तु परीक्षण से ज्ञात हुआ कि यह यशद का यौगिक है। भावमिश्र (15वीं शताब्दी) ने भी इसे तूतिया भेद ही लिखा है। सभव है, उस समय तक इसे ताम्र का यौगिक समझा गया हो।

लक्षण—देखें जस्ता-युक्त यौगिक।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—देखें जस्ता-युक्त यौगिक।

## चना (Lime)

लक्षण—मुख, गले तथा पेट मे दद, वमन, अत्यधिक प्यास, चिपचिपी त्वचा (Clammy skin), नाडी क्षीण।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

चूने का उदासीनीकरण (Neutralize) करने के लिए 6 प्रतिशत वाला ऐसीटिक एसिड दें। नीबू का सत (Citric acid), वनस्पति रस (Vegetable juice) अथवा फलों का रस भी पिलाया जा सकता है। हल्का करके सिरका (Vinegar) पिलाए। ऐरेबिक गोंद से तैयार शामक पीने को दें। अण्डे की सफेदी तथा दूध भी दिया जा सकता है। रोगी को शात और गम रखें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## चतुर्थक अमोनियम लवण

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—चतुथक (Quaternary) अमोनियम लवण शक्तिशाली जीवाणु-नाशी (Germicides) होते हैं। खाद्य पदाथ साधारणतया इन पदार्थों के साथ सम्पर्क में आने पर सदूषित हो जाते है।

लक्षण—इनके प्रभाव में आने से रोगी में क्षोभक विष (Irritating poison) के समान चिह्न दिखाई देते हैं। मितली, वमन, लडखडाना, समूर्च्छा और चार घटे के अन्दर मृत्यु हो जाती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए।

2 तत्काल चिकित्सक को बुला लें।

## जस्ता (जिंक) युक्त यौगिक

लक्षण—मुख में धात्विक स्वाद, पेट मे दर्द, खूनी उल्टियां (Bloody Vomiting), लम्बे-लम्बे श्वास, पुतली का फैल जाना, आक्षेप, समूर्च्छा तथा ऐच्छिक पेशियो (Voluntary Muscles) का लकवा। अत्यधिक लालास्राव तथा प्रचण्ड अतिसार।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड से तैयार वमन कारी द्वारा वमन कराए। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। तेज चाय या कॉफी भी पिलाई जा सकती है। शामक रूप मे ऐरेबिक गोंद पीने को दें। अण्डे की सफेदी भी दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

नोट उपयुक्त लक्षण एव उपचार खपर (खपरिया) विष के लिए भी हैं।

## जिंक डाइमियाइल डाइथिओकार्बमेट

विषाक्तता का सम्भाव्य स्रोत—यह जीवाणुनाशक (Bactericide) है।

लक्षण—मुख मे धात्विक स्वाद, पेट मे दर्द प्रचण्ड अतिसार रोग (Purging), लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे —

1 स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए।

2 प्रभावित अग को शुद्ध जल से धोए।

निगलने की दशा में —

1 नमक के घोल (सोडियम क्लोराइड) से वमन कराएं।

2 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर अत्यधिक सकटपूर्ण है। जहा तक सम्भव हो,

त्वचा, नेत्रों अथवा अन्तःश्वसन के सम्पर्क मे इस विषैले पदार्थ को न आने दें।

## जिंक फास्फाइड (Zinc Phosphide)

विषाक्तता का सम्भाव्य स्रोत—यह कृन्तकनाशी (Rodenticide) है।

लक्षण—मुख मे धात्विक स्वाद, मितली, वमन, अतिसार, उदरशूल, ठिठुरन (Chills), ज्वर, श्वास लेने मे असुविधा, रक्तसचार बन्द।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सोडियम क्लोराइड (नमक) के तैयार वमनकारी से वमन कराए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात लेटा रहने दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर बेहोशी हो सकती है। धूमो (fumes) का सूघना सकटपूर्ण है।

## टॉक्साफीन (Toxaphene)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका प्रयोग कीटनाशी (Insecticide) के रूप में किया जाता है। धूलि अथवा छिडकते समय धूम के सूघने से श्वास मे जाने के फलस्वरूप विषैला प्रभाव दर्शाता है।

लक्षण—सिर चकराना, सिरदर्द, मितली, वमन, उदरशूल, लालास्राव, पसीना, अशात दृष्टि, मानसिक सभ्रम, जल्दी-जल्दी श्वास (हांफना), छाती मे जकडन, आक्षेप, लकवा तथा समूर्च्छा (Coma)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्तःश्वसन की दशा मे —

1 रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए।

निगलने की दशा मे—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।

2 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

लक्षण—मुख तथा ओठो का जलना, वमन, चक्कर आना, लडखडाकर गिरना, धीमी गति का श्वास तथा समूर्च्छा।

## प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा में—

1 स्वच्छ वायु में रोगी को ले जाए।

2 कपडे उतारकर प्रभावित अगो को साबुन तथा जल से घोए।

निगलने की दशा मे—

1 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

2 चिकित्सक की तुरन्त सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी —निगलने पर अत्यधिक विषैला है। त्वचा, नेत्रो तथा श्वास-यत्रा को इसके सम्पक में न लाया जाए।

**डी० डी० टी०** (Dichloro Diphenyl Trichloroethane)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—कीटनाशी होने के कारण इसका प्रयोग स्पश एव आमाशय विष (Stomach poison) के मे किया जाता है। यह फलो, सब्जियो तथा गायो के दूध मे पाया जाता है।

लक्षण—मितली, वमन, सिरदद सुनता (Numbness), तीव्र आक्षेप (Mild Convulsions) उत्पादित लकवा (Induced Paralysis), श्वास-नलिका पर प्रभाव।

## प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

1 स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए।

2 यदि त्वचा अथवा नेत्रो से यह विष स्पश कर गया हो तो इन अगो को जल से पूणतया धोना चाहिए।

निगलने की दशा मे—

यूनिवमल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। मग्नीशियम सल्फेट को विरेचक (Cathartic) रूप मे दें। सोडियम सल्फेट से भी विरेचन करा सकते हैं। यदि उद्दीपक की

3 चिकित्सक की तुरन्त सेवा प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर ये ज्ञानी हो जाती है। धूमों को सूंघा न जाए तथा त्वचा अथवा नेत्रों को इसके सम्पर्क में आने से बचाए।

## ट्राइक्लोरो एथिलीन (Trichloro ethylene)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत– क्लोरोफाम के समान गंध वाला यह एक रंगहीन द्रव है। इसका उपयोग अधिकतर ड्राइक्लीन, पेन्टस रबर, वार्निश तथा कीटनाशी के निर्माण मे किया जाता है। पीडाहर (Analgesic) रूप मे यह क्लोरोफाम से 13 गुना अधिक प्रभावी है। इसका प्रभाव श्वास अथवा त्वचा-सम्पर्क के कारण अधिक होता है।

## ट्राइनाइट्रोटाल्युईन (Trinitrotoluene)

लक्षण—सामान्यतया इसको टी०एन०टी० (TNT) पुकारते हैं। यह दानेदार विस्फोटक पदार्थ है जिसके प्रभाव से रोगी की त्वचा पर धब्बे तथा बालो का रंग गहरा पीला हो जाता है। श्वास द्वारा ग्रहण करने अथवा त्वचा द्वारा अवशोषण पर श्यामता (Cyanosis) रोग उत्पन्न होता है। मसूढो (Gums) पर नीली रेखा तथा पाण्डुता।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। विरेचन के लिए 15 से 30 ग्राम सोडियम सल्फेट पानी मे घोलकर पिलाए। उद्दीपन के लिए गर्म कॉफी अथवा चाय पीने को दें। तेल अथवा वसा जैसे चिकनाई पैदा करने वाले पदार्थ न दें। प्रभावित त्वचा को साबुन के घोल से पूर्णतया धोए।

नोट—डी०डी०टी० जैसा उपचार इसके लिए भी किया जा सकता है।

## 2, 4 5—ट्राइक्लोरो फिनॉक्सी ऐसिटिक एसिड

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह पशुओ के चारे (Bait) मे प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—मुख तथा ओठो का जलना, वमन, चक्कर आना, लड़खड़ाकर गिरना, धीमी गति का श्वास तथा समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा में—

1 स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए।

2 कपडे उतारकर प्रभावित अगो को साबुन तथा जल से धोए।

निगलने की दशा में—

1 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

2 चिकित्सक की तुरन्त सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर अत्यधिक विषैला है। त्वचा, नेत्रो तथा श्वास-यन्त्रो को इसक सम्पक मे न लाया जाए।

**डी० डी० टी०** (Dichloro Diphenyl Trichloroethane)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—कीटनाशी होने के कारण इसका प्रयाग स्पश एव आमाशय विष (Stomach poison) के में किया जाता है। यह फलो, सब्जियो तथा गायो के दूध मे पाया जाता है।

लक्षण—मितली, वमन, सिरदद सुन्नता (Numbness), तीव्र आक्षेप (Mild Convulsions) उत्पादित लकवा (Induced Paralysis), श्वास-नलिका पर प्रभाव।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

1 स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए।

2 यदि त्वचा अथवा नेत्रा से यह विष स्पश कर गया हो तो इन अगो को जल से पूणतया धोना चाहिए।

निगलने की दशा मे—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसा (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। मैग्नीशियम सल्फेट को विरेचक (Cathartic) रूप मे दें। साडियम सल्फेट से भी विरेचन करा सकत हैं। यदि उद्दीपक की

आवश्यकता हो तो ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया या तेज चाय अथवा कॉफी पीने को दें। चिकनाई वाले पदार्थ न दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने तथा त्वचा से स्पर्श होने पर अधिक विषैला है।

## डाइक्लोरो ईथाइल ईथर

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत— यह पेंट, वार्निश को छुड़ाने तथा तेल, वसा (Fat) एवं मोम आदि के घोलक रूप में प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—मितली, श्वास यन्त्रों तथा अंगों पर क्षोभ (Irritation) दर्शाता है।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

अन्तःश्वसन की दशा में—

स्वच्छ वायु में रोगी को ले जाए। कृत्रिम श्वास प्रक्रिया की जा सकती है। आवश्यकता होने पर उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाया जाए।

निगलने की दशा में—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए। आवश्यकता पड़ने पर उद्दीपक (Stimulant) रूप में गर्म चाय, कॉफी या ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## डाइनाइट्रो आर्थो क्रेसाल

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह रंग (Dye) तथा विषाक्त कीटनाशी (Insecticide) के रूप में प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—गले में जलन, आघात (Shock) पहुंचना, श्वसनपात (Respiratory Failure)

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

निगलने की दशा में—

एक गिलास गर्म पानी में एक चम्मच सोडा-बाईकार्ब (सोडियम बाइकार्बोनेट) अर्थात् पाक-सोडा घोलकर रोगी को धीरे-धीरे तब तक पिलाते रहो जब तक उल्टियाँ न होने लगें। वमनकारी रूप में सोडियम क्लोराइड का घोल पीने को दें। जिससे वमन हो जाए। यदि विष त्वचा पर अथवा नेत्रों में प्रभाव कर गया हो तो जल से पूर्णतया साफ करें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—सूंघने पर बहुत ही विषैला है। निगलने से बेहोशी हो सकती है। त्वचा एवं नेत्रों के लिए क्षोभकारी है।

## डाइनाइट्रोफिनॉल

लक्षण—पसीना आना, ज्वर, सिरदर्द, भूख का कम होना, पाण्डुवर्णता (Sallowness) तथा आक्षेप (Convulsion)

### प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) से तैयार किए गए वमनकारी द्वारा वमन कराएं। मैग्नीशियम सल्फेट जैसा कोई विरेचक दें। आवश्यकता पड़ने पर उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाएं। ठंडा चाय या कॉफी भी पर्याप्त मात्रा में पिलाई जा सकती है। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## तारपीन (Turpentine)

लक्षण—मुख में जलन होना, गले में जलन (Burning), त्वचा लाल, श्वसन मार्ग (Respiratory Tract) में खुजली, मितली, उल्टियाँ, उदरीय शूल, अतिसार, आघात भी हो सकता है।

### प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

सरसों (राई) द्वारा तैयार वमनकारी से वमन कराएं। मैग्नीशियम सल्फेट दें। उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाएं। काली कॉफी (Black Coffee) पीने को दी जा सकती है। ऐरेबिक गोंद का शामक दिया जाए। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## तेजाब (Acids)

लक्षण—गले तथा पेट में दर्द, उल्टियां, आक्षेप (Convulsions), लड़खड़ाकर गिरना।

अन्तर उपचार—

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

शीतल जल के भरे गिलास में रोगी को 2-4 चम्मच मिल्क ऑफ मैग्नीशिया की लेई (Paste) अथवा पाउडर पिलाएं। मिल्क ऑफ मग्नीशिया की मात्रा पीए गए तेजाब की मात्रा पर न्यूनाधिक की जा सकती है। ऐरेबिक गोंद का शामक पिलाएं। रोगी को अधिक मात्रा में पानी पिलाएं। रोगी को गर्मी पहुंचाएं और शांत रहने दें।

वाह्य उपचार—

लक्षण—तेजाब के स्पर्श होने पर होंठ (Lips) मुख तथा शरीर के अन्य अंगों पर जलन अनुभव करना।

प्राथमिक उपचार—

प्रभावित अथवा स्पर्श अंग को जल की अधिक मात्रा से धोना चाहिए। मिल्क आफ मग्नीशिया का लेप (Paste) लगाएं। सोडियम बाइकार्बोनेट (पाक-सोडा) तथा पानी का लेप भी प्रयोग किया जा सकता है।

चिकित्सक की अविलम्ब सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—किसी वमनकारी का प्रयोग न किया जाए।

## ताम्रयुक्त यौगिक

लक्षण—वमन, अतिसार, मल (Stool) का रंग हरा, लड़खड़ाकर गिरना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) के घोल से वमन कराएं। ऐरेबिक गोंद का शामक पेय दें। अण्डे की सफेदी भी दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## थायोग्लिसरॉल (Thioglycerol)

लक्षण – स्थानिक (Local) तथा दैहिक (Systemic) विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड से वमन कराए।
3 रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें।
4 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## थायोसायनेट (Thiocyanate)

लक्षण—इसके खाने से हृदय विस्तारण (Dilation) का बढना तथा उसके सकुचन की दर कम होती है। अधिक मात्रा लेने पर सकुचन पर अकस्मात ही विराम लग सकता है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए। कृत्रिम श्वासक्रिया करें, कपडे उतारकर प्रभावित अग को पूणतया धोना चाहिए। हलक्षा (Tickling) करें।

निगलने की दशा मे—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम सल्फेट से विरेचन तथा सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन कराए। जल नली (Water tap) से पेट धोए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी —निगलने पर बहुत ही हानिप्रद है। इसका अवशोषण त्वचा द्वारा हो जाता है। सूघना तथा त्वचा एव नेत्रो से स्पश भयानक है।

## थैलियम युक्त यौगिक

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत— ये लोमशामक (Depilatories) में

तथा मूषक विष (Rat Poison) के रूप मे प्रयोग किए जाते हैं ।

लक्षण—पेशियो (Muscles) म दद एव स्फुरण (Twitchings) भूख मे कमी, वमन, उदरीय शूल, देखने और सुनने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है । मसूढ़ो की किनारी बैंगनी, सांस में बदबू, लालास्राव, पलकों तथा गालो पर सूजन आदि ।

प्रतिकारक एव प्रायमिक उपचार—

प्रतिकारक एव वमनकारी के रूप मे सोडियम क्लोराइड पिलाए । सरसा के घोल से वमन कराए । उद्दीपन के लिए कम गम तेज चाय या कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए । गर्मी पहुचाए । चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें ।

## नाइट्रोग्लिसरीन (Nitroglycerin)

लक्षण—चेहरा लाल, आरम्भ मे हृदय की धड़कन तीव्र और तदुपरात धीमी, चक्कर आना, वमन, आक्षेप ।

प्रतिकारक एव प्रायमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए । वमन कराने के लिए सरसों (राई) का वमनकारी दें । उद्दीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, गम चाय या कॉफी दें । रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें । तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें ।

## नाइट्रोबेंजीन (Nitrobenzene)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका उपयोग कार्बनिक सश्लेषण (Synthesis), शृगार हेतु सामान के निर्माण पालिश बनाने तथा घोलक (Solvent) के रूप मे किया जाता है । विस्फोटक मे काम आता है।

लक्षण—मितली, वमन, कानो मे झनझनाहट तथा श्वास लेने में कठिनाई । शरीर मे श्यामता (Cyanosis) आ जाना ।

प्रतिकारक एव प्रायमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए । सरसो (राई) से तैयार वमनकारी

द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोंद से तैयार शामक (Demulcent) दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## नैफ्थलीन (Naphthalene)

लक्षण—बेचैनी, अवसाद (Depression), स्फुरण (Twitching), आक्षेप एव समूर्च्छा (Coma), पेशाब का रग काला-बादामी।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोंद से तैयार किया शामक (Demulcent) पीने को दें। अण्डे की सफेदी अथवा दूध भी पिलाया जा सकता है। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, तेज चाय अथवा कॉफी उद्दीपन हेतु पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए तुरन्त प्राप्त करें।

## पश्च पियूषिका (Pituitary Posterior)

लक्षण—आघात, पाण्डुता (Pallor), तीव्र नाडी (Pulse), रक्त-चाप (Blood Pressure) मे कमी, मिथ्या भूख (Air Hunger), समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसों (राई) के घोल से वमन कराए।
3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## प्लाज्मोकिन (Plasmochin)

लक्षण—उदरीय शूल, पीलिया (Jaundice), सिरदर्द, मितली, वमन, ज्वर दुबलता, कमरदर्द।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसो (राई) से तैयार वमनकारी से वमन कराए।

3 उद्दीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, गर्म चाय, अथवा कॉफी दें।

4. चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर बेहोशी हो जाती है और कुछ समय बाद रक्त-विकार के कारण कुष्ठ रोग (Leprosy) हो जाता है।

## पारद (Mercury)

पारद (पारा) चांदी जैसा सफेद पदार्थ है जो अपनी द्रव अवस्था में अद्वितीय है क्योंकि यह साधारण तापमान पर भी द्रव रूप में ही रहता है। पारद का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। प्राचीन समय मे मिस्र निवासी इसको हिंगुल (Sulphide of Mercury) के रूप में जानते थे जिसका उद्धरण पेपरस ऐबर्स (Paprus Ebers) मे 1550 ईसापूर्व मिलता है। भावमिश्र द्वारा संकलित भाव प्रकाश मे वर्णन आया है कि शंकर जी के अंग से जो वीर्य पृथ्वी पर गिरा वह शरीर का सारभाग होने से श्रेष्ठ और स्वच्छ था, वही पारा कहलाया—

शिवाङ्गात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले।

तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत् ॥ धातुवर्ग-87

क्षेत्र के भेद से यह पारद चार प्रकार का है—1 सफेद, 2 लाल, 3 पीला और 4 काला। सफेद की जाति ब्राह्मण, लाल की क्षत्रिय, पीले की वैश्य तथा काले की शूद्र है। श्वेत पारद रोगों को नष्ट करने मे उत्तम है। लाल पारा रसायन है। पीला पारा धातु निर्माण मे उत्तम है। काला पारा आकाश मे उड़न तक की शक्ति प्रदान करता है।

पारद मे मल विष, अग्नि, गिरिदोष और चपलता आदि दोष होते हैं। रांगा (Tin) और सीसे (Lead) के दो दोष य खनिज हैं। इस तरह इसमे सात दोष हैं जो शास्त्रविशारद मुनियों ने बताए हैं। मलदोष से मूर्छा, विष से मृत्यु अग्नि से शरीर के अन्दर तीव्र दाह, गिरिदोष से सर्वदा जड़ता, चपलता पुरुषों के वीर्य का नाशक है। वंग दोष से कुष्ठ और सीसा दोष से नपुंसकता होती है। अतः पारे को शुद्ध करना चाहिए। अग्नि, विष और मल ये तीन प्रधान दोष हैं। इनसे संताप, मृत्यु और मूर्छा

क्रमश पैदा होते है। इसके अतिरिक्त और भी दोष महर्षियो ने पारद (Mercury) में कहे हैं। किन्तु इन तीनो का शोधन (Purification) अवश्य ही करना चाहिए। पारा प्रकृति मे सोना एव चादी के साथ मिलता है और सिगरफ (हिंगुल) इसका सबसे बडा खनिज धातु रूप मे स्रोत है।

लक्षण—मुख और गल में जलन एव सकीणन (Constriction), प्यास, वमन, उदरीय शूल तदुपरात आघात, आक्षेप तथा समूर्च्छा।

## प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 युनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसों (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 अण्डे की सफेदी अथवा दूध को शामक रूप मे दें।
4 *तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।*

चेतावनी—निगलने पर बेहोशी हो जाती है और कुछ समय बाद रक्त-विकार के कारण कुष्ठ रोग (Leprosy) हो जाता है।

## पारद-युक्त यौगिक[1]

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इनका प्रयोग औषधियो के निर्माण मे, पौधो के फफूद-नियत्रण मे, कीट (Maggots) नियत्रण म, जलयान की पेंदी (Bottom) हेतु जलकीटरोधक रग (Antifouling paints) में किया जाता है।

लक्षण—गले मे दद, पेट मे ऐंठन (Cramp) वमन तथा लडखडाकर गिरना।

## प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 अण्डे की सफेदी अथवा दूध को शामक रूप म दें।
4 तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

---

1 हिंगुल या सिगरफ के लिए भी उपयुक्त लक्षण एव उपचार हैं।

चेतावनी—निगलने पर बेहोशी हो जाती है और कुछ समय बाद रक्तविकार के कारण कुष्ठ रोग (Leprosy) हो जाता है।

## पाइरीथ्रम (Pyrethrum)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह मक्खीनाशक एवं कीटनाशियों में प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—तन्त्रिका तन्त्र (Nervous System) पर घातज (Paralytic) क्रिया, मस्तिष्क में सभ्रम तथा त्वक्शोथ (Dermatitis) उत्पन्न हो जाता है।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

अन्तःश्वसन की दशा में—

1 स्वच्छ वायु में रोगी को ले जाए।
2 प्रभावित अंगों को साबुन तथा जल से धोना चाहिए।

निगलने की दशा में—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## पाइलोकार्पीन (Pilocarpine)

लक्षण—गर्दन एवं चेहरा लाल होना, अत्यधिक पसीना और लाला स्राव (Salivation), मितली, वमन पुतलियों का सिकुड़ना (Contraction), अतिसार, लड़खड़ाकर गिरना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमोनिया, गर्म चाय या काफी उद्दीपक रूप में दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## पिक्रिक एसिड तथा पिक्रेट्स

लक्षण—होंठ, मुख और श्लेष्म कला (Mucous Membrane) का

पीना होना, मितली, वमन, आक्षेप तथा लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन कराए। ऐरेबिक गोंद का शामक पिलाए। अण्डे की सफेदी पिलाकर ऊपर से दूध पिलाया जा सकता है। उददीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया की आवश्यकता पड सकती है। ऐप्सम लवण का जल में घोल बनाकर पिलाए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## पिक्रोटोक्सिन (Picrotoxin)

लक्षण—रक्तचाप (Blood Pressure) मे बढ़ोतरी, नाडी की गति धीमी, लम्बे-लम्बे श्वास, वमन, पुतलियों का सिकुडना, लालास्राव, प्रचण्ड आक्षेप।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 ऐरेबिक गोद का शामक पिलाए।
4 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## पैट्रोल (Gasoline)

लक्षण—सिर चकराना, वमन, दृष्टि का क्षीण या विनष्ट होना, हाफना (Gasping) एव श्वासावरोध, ज्वर, उत्तेजना, आक्षेप तथा समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

स्वच्छ वायु मे रोगी को ले जाए। केवल काली कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए। कृत्रिम श्वास प्रक्रिया की आवश्यकता पड सकती है। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## पराल्डिहाइड (Paraldehyde)

लक्षण—उत्तेजना, असंबद्धता (Incoherence), पेशियों में शिथिलता, श्वसन की गति धीमी, लड़खड़ाकर गिरना।

**प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—**

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से तैयार वमनकारी दें। उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाए तथा तेज चाय या कॉफी दें। ऐरेबिक गोंद का तैयार शामक पीने को दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## पैराथियॉन (Parathion)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत— यह कीटनाशी (Insecticides) के रूप में प्रयोग किया जाता है। कीटों, पशुओं तथा मनुष्यों के लिए यह बहुत ही विषैला है। खाद्य-पदार्थ संदूषित होकर इस तरह विषाक्तता का मुख्य स्रोत हो जाता है।

लक्षण—सिरदर्द, धूमिल दृष्टि, मितली, दुर्बलता, ऐंठन (Cramps) अतिसार, छाती में बेचैनी। पसीना अत्यधिक, पुतलियों में संकुचन, लाला स्राव, श्यामता, अनियंत्रित पेशी स्फुरण, आक्षेप तथा संमूर्च्छा आदि।

**प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—**

अन्तःश्वसन की दशा में—

1 स्वच्छ वायु में रोगी को ले जाए।
2 कृत्रिम श्वसन आवश्यक हो सकती है।
3 कपड़े उतारकर, शरीर के नग्न अंगों को साबुन तथा जल से धोए।

निगलने की दशा में—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड (नमक) का घोल पिलाकर वमन कराए।
3 चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—*यह सूंघने, खाने तथा स्पर्श करने पर बहुत विषैला है।*

## पैरामेग्नेट-युक्त सपाक

लक्षण—मुख तथा गले मे जलन एव सकुचन, प्यास, वमन उदरीय शूल, आघात भी हो सकता है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 वमन के लिए सोडियम क्लोराइड से वमन कराए।
3 ऐरेबिक गोद का शामक पीने को दें।
4 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## प्रोकेन एव स्थानिक सवेदनहारी

लक्षण—रक्तचाप मे कमी, हृदय की धडकन धीमी, श्वसन की गति मद, श्वसन केन्द्रण (Center) के अगघात (Paralysis) के कारण मृत्यु।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उद्दीपक के रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमानिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## फरमेट[1] (Fermate)

विपाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह फफूदनाशी (Fungicide) के रूप में प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—मितली, वमन, हृदय की धडकन मद।

प्रतिकार एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—इसकी वाष्प (Vapours) श्वसन-यत्र, नेत्रों एवं त्वचा में क्षोभ (Irritation) उत्पन्न करती है।

---

1 फरमेट का रासायनिक नाम फैरिक डाइमिथाइल डाइथियोकार्बमेट है।

## फ्लोराइड-युक्त यौगिक

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—ये रसायन कीटनाशी (Insecticides) तथा कृन्तकनाशी (Rodenticides) के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।

लक्षण—वमन, उदर में ऐंठन के समान दर्द, धीमी नाड़ी, आक्षेप। त्वचा का रंग भूरा-नीला तथा पेशियों में स्फुरण आदि।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

*मिल्क ऑफ मैग्नीशिया पिलाएं। सरसों (राई) का वमनकारी पिला कर वमन कराएं। कृत्रिम श्वास प्रक्रिया दी जा सकती है। शामक मेव के रूप में ऐरेबिक गोंद या दूध या अण्डे की सफेदी पिलाई जाए। चिकित्सक की सेवाएं अविलम्ब प्राप्त करें।*

*चेतावनी—यह अत्यधिक विषैला है, अतः प्राथमिक सहायता यथा शीघ्र प्रदान की जाए।*

## फाइसोस्टिग्मीन (Physostigmine)

लक्षण—वमन, मितली, पेशी कम्पन, पुतलियों (Pupils) का सिकुड़ना, प्रेरक शक्ति (Motor Power) का ह्रास, लड़खड़ाकर गिरना।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) के वमनकारी से वमन कराएं। उद्दीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पिलाया जाए। गर्म चाय या कॉफी भी पिलाई जा सकती है। शामक रूप में ऐरेबिक गोंद पिलाएं। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## फॉर्मेलिन (Formalin)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसको फार्मेल्डिहाइड घोल भी कहते हैं। यह सश्लेषित राल (Resin), शव-संलेपन (Embalming) विसंक्रमण (Disinfection), गंधहर (Deodorant) फफूंदनाशी (Fungicide) तथा लार्वानाशी (Larvacide) के रूप में उपयोगी है।

लक्षण—वमन, पेट मे जलन, लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा म—

1 रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए।
2 कृत्रिम श्वसन की आवश्यकता पड सकती है।
3 आखो को अच्छी तरह धोना चाहिए।

निगलने की दशा मे—

1 ऐरोमेटिक स्प्रिट आफ अमोनिया पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन कराए।
3 ऐरेबिक गोद से तैयार शामक पिलाए।
4 तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## फास्फोरस (Phosphorus)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका प्रयोग कृतक विषो (Rodent Poisons), माचिसो तथा रसायनों के निर्माण मे मध्यग (Intermediate) रूप मे किया जाता है।

लक्षण—मितली, लहसुन (Garlic) जैसा स्वाद, पेटदद लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सोडियम क्लाराइड से तैयार वमनकारी दें। एक चम्मच औषधीय खनिज तेल पिलाए। सलाद अथवा वानस्पतिक तेल बिल्कुल न दें। ऐरेबिक गोद का तयार शामक पिलाए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात लेटा रहने दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## फिनॉपथेलीन (Phenolphthalein)

लक्षण—प्रचण्ड अतिसार (Purging), धडकन (Palpitation), परिश्रमसूचक श्वसन।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी से वमन कराए।
3 ऐरेबिक गाद का शामक पिलाए।
4 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## फीनोल युक्त यौगिक

*विपाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इनका प्रयोग जीवाणुनाशी,* ऐंटिसेप्टिक, फफूदनाशी तथा काष्ठ परिरक्षक (Wood Preservative) में किया जाता है।

लक्षण—मुख तथा होठो पर जलने से सफेद हो जाना, वमन, चक्कर आना तथा लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक[1] पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए।
3 ऐरेबिक गोद, दूध अथवा अण्डे की सफेदी के समान कोई भी शामक पिलाए।

वाह्य उपचार—

1 शरीर के प्रभावित अगो को साबुन तथा जल की पर्याप्त मात्रा से धोए।
2 जिस प्रकार जले का उपचार किया जाता है उसी प्रकार इस दशा में भी वही विधि अपनाए
3 तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—निगलने पर बेहोश (अचेत) हो सकते हैं। त्वचा तथा नेत्रो पर क्षयत्व (Corrosive) प्रभाव पडता है।

## बाइल लवण (Bile Salts)

लक्षण—स्फुरण पसीना आना।

1 देखें परिशिष्ट 3

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार —

1 यूनियमल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसों (राई) से तैयार वमनकारी पीन को दें।
3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## बारबिटरेट्स (Barbiturates)

बारबिट्रेट्स इस शताब्दी की आयुर्विज्ञान अनुसधान मे सबसे बडी उपलब्धि है। सामान्यतया इनसे मिश्रित औषधियो को 'नीद की गोली' कहा जाता है। कार्बन मोनोक्साइड मे पश्चात् बारबिट्रेट्स के कारण हुई मौतें ही अधिक पढ़ने मे आती हैं। मृत्यु का कारण इसके द्वारा आकस्मिक और आत्मघात दोनो ही प्रकार की दुघटना से है। वैसे बारबिटरेट्स मिश्रित औषधियां केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र (Central Nervous System) अवसादन को सीमित दशा तक नियन्त्रण हेतु उपयोगी हैं। इसका प्रभाव शान्तिकर (Sedative) प्रतिक्रिया से आरम्भ होकर गहरी असवेदना (Anesthesia) पर समाप्त हो जाता है। बारबिट्रटस तेजाब का सवप्रथम निर्माण जमन वैज्ञानिक एडाल्फ वॉन बेयर (Adolph Van Baeyer) द्वारा सन् 1864 ई० मे किया गया था।

बारबिट्रेट्स का प्रभाव काल तथा मात्रा पर आधारित है। इनके द्वारा निर्मित यौगिक बारबिटल तथा फिनॉबारबिटल (Phenobarbital का प्रभाव चार से आठ घण्टों मे, एमिटल (Amytal) एव पेंटोबारबिटल (Pentobarbital) का प्रभाव चार घटो मे, ऐविपाल (Evipal) एव सेकोनल (Seconel) का प्रभाव दो घटा मे किन्तु ऐविपाल सोडियम, केमियल सोडियम (Kemithal Sodium) और पेंटोयल सोडियम (Pentothal Sodium) का प्रभाव अविलम्ब होता है और यही कारण है कि अन्त शिरा (Intravenous) असंवेदना मे इसका अत्यधिक उपयोग किया जाता है। प्रयोग की गयी औषधि के रासायनिक सरचना, बारबिट्रेट्स औषधि सेवनविधि, तथा खुराक (Dose) की मात्रा पर अवसादन (Depression) की अवधि एव तीव्रता निर्भर करती है। खुराक की कम मात्रा से कुछ अवसादन के पश्चात् शान्ति मिलती है, इससे

अधिक मात्रा मोहनिद्रा (Hypnotic) के पश्चात वास्तविक निद्रा आ जाती है। किन्तु और अधिक मात्रा सेवन से असवेदी (Anesthetic) होकर मूछित हो जाते हैं।

इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर विभिन्न होता है। जिन रोगियों के यकृत (Liver) अथवा वृक्क (Kidneys) खराब हो गए हों उनके लिए ये औषधिया घातक सिद्ध हो सकती है। सामान्य खुराक से यदि 5 10 गुना अधिक खुराक का सेवन कर लिया जाए तो अत्यधिक विषाक्तता के कारण मत्यु तक हो जाती है। यह सम्भव है कि इसका प्रभाव कुछ दिनो तक न हो लेकिन तदुपरात इसका प्रभाव कुछ ही मिनटो मे अचानक ही बढ जाता है। अधिक समय तक सेवन करते रहने से आदत पड जाती है। एस्प्रिन जसी पीडाहर (analgesics) और एल्कोहॉल आदि अन्य पदार्थो के मिलाने से अधिक प्रभावी होकर बारबिटरेटस सहक्रियायी (synergistic) बन जाते हैं। यही कारण है कि एल्कोहॉल के नशे मे व्यक्ति को ये औषधिया नहीं देनी चाहिए। आकस्मिक दुघटना और आत्महत्या प्रयासा को रोकने के लिए यदि बारबिटरेट्स मिश्रित औषधियो मे कोई वमन कारी रसायन इतना मिला दिया जाए कि अधिक खुराक लेने पर भी वह प्रभाव न कर सके तो इस काम के लिए जिंक सल्फेट अत्यधिक उपयुक्त पाया गया है।

बारबिटरेटस का मुख्य रूप से उपयोग बेचनी को शान्त करने, नींद लाने मृग-आक्षेप (Epileptic Convulsions) को रोकने और कुचला (Strychnine) जसे आक्षेप विषो (Convulsive Poisons) के प्रभाव को नष्ट करने मे किया जाता है।

लक्षण—मानसिक सभ्रम तन्द्रा (Drowsiness), नीद लडखडा कर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसा (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उत्तेजक रूप म ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सवाए प्राप्त करें।

नोट—यह विष नींद की गोलियो एव द्रवो मे मिला हाता है।

## विस्मय-युक्त यौगिक

लक्षण—मितली, वमन, अत्यधिक लार (Saliva) गले पर सूजन हो सकती है।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। रोगी को पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाए। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## बीटानेपथॉल (Betanaphthol)

लक्षण—मितली तथा उल्टियां, पेट में दर्द, पेशाब का रग गहरा, आक्षेप।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोद द्वारा तयार शामक पिलाए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## बोरिक एसिड तथा बोरेट्स

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—ये साबुन एव वाशिग पाउडरो मे प्रयाग किए जाते हैं। इनका प्रयोग टकाई (Soldering) रसायनो, काष्ठ परिरक्षणो में तथा मड के रावा-जन्य कीडो, मक्खी के अण्डो के नियत्रण और कॉकराच के आक्रमण हेतु भोजन सोडियम फ्लाराइड के मिश्रण मे किया जाता है।

लक्षण—वमन अतिसार उदरीय शूल, त्वकशोथ (Dermatitis) पेशी-आक्ष प (Muscle Spasms), आघात।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सरसो (राई) द्वारा तयार वमनकारी से वमन कराए।
3 चिकित्सक की सवाए प्राप्त करे।

## बेरियम (घुल नशील यौगिक)

लक्षण—वमन, ऐंठन, भुजाओं एव पैरों में लकवा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

प्रतिकारक रूप मे मिल्क ऑफ मैग्नीशिया पिलाए। सरसों (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। शामक रूप में ऐरेबिक गोंद पीने को दें। ऐरोमेटिक ऑफ अमोनिया पिलाए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## बेंजीन (Benzene)

लक्षण —सिरदर्द चक्कर आना, दुबलता।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा में—

1 रोगी को स्वच्छ वायु म ले जाकर कृत्रिम श्वास दें।

मुख द्वारा पीने की दशा मे—

1, सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

2 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## बेन्जेड्रीन (Benzedrine)

लक्षण—बेचैनी, अनिद्रा आतकित ठिठुरन, पसीना, आक्षेप (Convulsions)

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।

2 सरसो (राई) से तयार वमनकारी पीने को दें।

3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## बेन्जीन हैक्साक्लोराइड

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह कीटनाशी, आमाशय तथा

सम्पर्क-विष के रूप मे प्रयोग किया जाता है।

लक्षण—कम्पन, आक्षेप, अवसन्नता (Prostration)

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा में—

स्वच्छ वायु में रोगी को लिटाए। यदि इस विष का प्रभाव त्वचा एवं नेत्रो पर हो गया हो या स्पर्श कर गया हो तो इन्हे जल से पूर्णतया साफ करना चाहिए।

निगलने की दशा मे—

सोडियम क्लोराइड का घोल पिलाकर वमन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—सूघने, निगलन अथवा नेत्रो में प्रवेश होने पर इस रसायन की वाष्प तथा धूलि (Dust) बहुत ही खतरनाक है।

### ब्रोमाइडस (Bromides)

लक्षण—अवसाद, सिर चकराना, प्रलाप।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) का तैयार वमनकारी दें। जल की अत्यधिक मात्रा पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

### ब्रोमीन (Bromine)

लक्षण—1 यदि ब्रोमीन नाक द्वारा सूघी गई है तो गले, फेफडो, तथा नथुनो (Nostrils) मे दर्द एव क्षोभ (Irritation)।

2 यदि ब्रोमीन मुख द्वारा ली गई है तो मुख, गले एव आमाशय में दर्द।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यदि रोगी गैस से प्रभावित हुआ है तो उसे स्वच्छ वायु मे ले जाकर ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमानिया सुघाए। यदि ब्रोमीन मुखद्वार से अन्दर पहुची है तो उसे यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) का तैयार

वमनकारी पीने को दें। ऐरेबिक गोंद के समान शामक पिलाए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## मेट्राजॉल (Metrazol)

लक्षण—खासी, पाण्डुता (Pallor), व्याकुलता (Bewilder ment) तथा फैली हुई पुतलिया।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिवारक पिलाए।
2 सरसो (राई) का वमनकारी पिलाकर वमन कराए।
3 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## मेथिल एल्कोहॉल (Methyl Alcohol)

लक्षण—उत्तेजना, वमन प्रलाप।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 सरसो (राई) का तैयार वमनकारी पिलाकर वमन कराए।
2 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## मेथिल ब्रोमाइड (Methyl Bromide)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका प्रयो॰ धुमारी (Fumigant) तथा प्रशीतक (Refrigerant) रूप म किया जाता है।

लक्षण—मितली, वमन, आलस्य, द्रव के स्पश से त्वचा पर जलन हो जाती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्त श्वसन की दशा मे—

रोगी का स्वच्छ वायु मे ले जाए। कृत्रिम श्वास प्रक्रिया की आवश्य कता हो सकती है। कपड़े उतारकर नेत्रो तथा त्वचा को जल स धोए।

निगलन की दशा मे—

यनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन

कराए। उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## मेथिलीन ब्ल्यू (Methylene Blue)

लक्षण— मितली, वमन, अतिसार।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) स तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोद का शामक (Demulcent) पीने को दें। विरेचक रूप म मिल्क ऑफ मग्नीशिया पिलाए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## मेथेनामीन (Methenamine)

लक्षण - जठरीय (gastric) गड़बड़, त्वचा का फटना (Rash) मूत्रीय पथ शोथ (Urinary Tract Inflammation) आदि।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) के घाल से वमन कराए। विरेचन के लिए मिल्क ऑफ मैग्नीशिया (मैग्नीशियम सल्फेट) पीन को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## वाष्पशील तेल (Volatile Oils)

लक्षण—मितली, वमन, सप्रवाहक (Flushing), पसीना, ज्वर, उत्तेजना (Excitement), आक्षेप तथा समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार —

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड (नमक) के घाल से वमन कराए। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया उद्दीपन हेतु दें। तेज चाय या कॉफी भी दी जा सकती है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## वारफरिन (Warfarin)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत —यह आतचनरोधी (Anti-coagulant)

श्रेणी का कृतकनाशी (Rodenticide) है। सामान्यतया चूहे मारने को 0 5 प्रतिशत पाउडर रूप मे उपलब्ध होता है। इसको आटे, रोटी के टुकड़ों (Crumbs) गोश्त आदि मे मिलाकर अतिरिक्त भोज्य पदार्थ रूप में प्रयोग किया जाता है। वारफेरिन सुगमता से आन्त्र-नली के द्वारा अवशोषित हो जाता है। बारबार इसकी मात्रा उपयोग करने पर अधिक प्रभावी है।

लक्षण—लगातार छ दिन तक प्रतिदिन 1 7 मिलीग्राम प्रति किलो शरीर भार के अनुपात मे खाने पर घातक है। नाक द्वारा रुधिरस्राव (Hemorrhage), कुहनी (Elbows) तथा घुटनो (Knees) आदि जोडो पर अत्यधिक खरोच, पीलापन तथा मल एव मूत्र मे रक्त आना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

पेट की धुलाई पर्याप्त जल से करने के पश्चात् एक कप पानी म 30 ग्राम सोडियम सल्फेट विरेचक दें। दिन मे तीन बार 50 100 मिली ग्राम विटामिन के (K) का प्रयोग कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सल्फेनिलमाइड (Sulphanilamide)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका प्रयोग औषधियो मे होता है।

लक्षण —दुर्बलता, वमन, नाडी की गति धीमी।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सोडियम क्लोराइड से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। रोगी को 5 ग्राम सोडियम बाइकार्बोनेट (पाक-सोडा) खिलाकर ऊपर से आधा गिलास पानी पिलाए। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सल्फरडाइऑक्साइड (Sulphurdioxide)

लक्षण नेत्रो मे क्षोभ श्वसन मे दर्द एव असुविधा, लकवा, आक्षेप श्वासावरोधन (Asphyxiation)

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए। कृत्रिम श्वसन दिया जाए। गर्म चाय,

कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सल्फोनल (Sulphonal)

लक्षण—सिर चकराना, चलने तथा स्थिर खडे होने में असमर्थता, कणनाद, सिरदद, सभ्रम, दुबलता, जठर वेदना (Gastric Pain), जडिमा।

### प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उद्दीपन केलिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सखिया (Arsenic)_

साधारण सफेद सखिया (Arsenic) बिना साफ किया हुआ, सफेद मिट्टी के बतन की शक्ल का ढलो (Heaps) मे मिलता है। यह सम्पूण भारतवष के बाजारो मे बडी सुगमतापूवक मिल जाता है। यह फारस की खाडी से लाया जाता है और कीडो को मारने, खालो (Headskin) तथा लकडियों की रक्षा करने तथा औषधि निर्माण मे काम आता है। इसको बारीक बारीक पीस लिया जाता है तथा स्वादहीन होने के कारण मिठाइयो एव भोज्य पदार्थों मे आसानी से मिलाया जा सकता है। इसकी बहुत थोडी सी मात्रा भी अत्यधिक घातक होन के कारण व्यक्तियो की जीवन-लीला समाप्त करने के लिए सर्वाधिक प्रयोग की जाती है। सखिया खाने से आधे घटे बाद चिह्न प्रकट होने लगते हैं। इसके खाने से बहुत कष्ट होता है। पेट मे जलन का दद होता है, उल्टिया होती हैं, रक्त मे सना हुआ मादा (Stool) निकलता है। इसके पश्चात् पुट्ठो (Muscles) मे सुन्नता और ऐंठन होन लगती है। अधिक मात्रा मे खाने की दशा में बेहोशी मे मरने से पहले कमजोरी और घबराहट बहुत हो जाती है।

लक्षण—वमन, अतिसार, निर्जलीकरण (Dehydration), आक्षप, सामान्य तौर पर लकवा, समूर्च्छा केशिकाए (Capillaries) तथा धमनिकाओ (Arterısles) के क्षति होने के कारणवश मृत्यु तक हो जाती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। जल की पर्याप्त मात्रा पिलाए। चिकित्सक की तुरत सेवाए प्राप्त करें।

नोट यह अत्यत घातक विष है।

## सखियायुक्त सपाक

लक्षण—पेट मे दद, वमन, ऐंठन, समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। जल अत्यधिक पीने को दिया जाए। चिकित्सक की तुरन्त सेवाए प्राप्त करें।

## सायनाइड (Cyamde)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इसका प्रयोग धूमीकरण (Fumigation) के लिए किया जाता है।

लक्षण—सिरदद, वमन, चक्कर आना, श्वासावरोधन, आक्षप समूर्च्छा कुछ ही क्षणों में मृत्यु।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

अन्तःश्वसन की दशा में—

स्वच्छ वायु मे रोगी को लिटाए। ऐमिल नाइट्राइट मुक्ताभ (Amyl Nitrite Pearl) को तोडकर रोगी को नाक के पास रखकर पन्द्रह सेकड तक सुघाए और इस क्रिया को पांच बार दोहराए। कृत्रिम श्वासप्रक्रिया की जाए।

निगलने की दशा मे

यदि रोगी अचेतावस्था मे है तो ऐमिल नाइट्राइट का एक ऐम्पुल तोड़कर पन्द्रह सेकेंड तक रोगी की नाक पर रखकर सुघाए। इस क्रिया को तब तक करते रहे जब तक रोगी को होश न आ जाए।

यदि रोगी चेतन है तो हाइड्रोजन परऑक्साइड (3%) की 2-3 चम्मच भरकर पिलाए।

सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए।

यदि उद्दीपक की आवश्यकता हो तो ऐमिल नाइट्राइट का एक मोती दें। श्वास रुकने की दशा म कृत्रिम श्वास प्रक्रिया आरम्भ कर दें।

अविलम्ब चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—सूघने अथवा निगलन की दशा में यह अत्यन्त घातक विष है, अत तत्काल उपचार की नितात आवश्यकता है।

## सिल्वर नाइट्रेट (Silver Nitrate)

लक्षण—जहर-आन्त्र शोथ (Gastrenteritis), समूर्च्छा आक्षेप, लकवा, (फालिज)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

प्रतिकारक के रूप म सोडियम क्लोराइड (नमक) का घोल पिलाकर वमन कराए। ऐरेबिक गोद का तैयार शामक पिलाए। मैग्नीशियम सल्फेट (मिल्क आफ मग्नेशिया) से विरेचन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सिल्वर (चादी) युक्त यौगिक

लक्षण—पेट तथा गल म दद, वमन, लडखडाकर गिरना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

प्रतिकारक के रूप म सोडियम क्लोराइड (नमक) का घोल पिलाकर वमन कराए। ऐरेबिक गोद का तैयार शामक पिलाए। मैग्नीशियम सल्फेट (मिल्क ऑफ मग्नीशिया) से विरेचन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सीसा (Lead)

बाइबिल युग से पता चलता है कि सीसा विषायण (Lead Poisoning) को Plumbism कहते थे और यही कारण है कि इसका लटिन नाम Plumbism रखा गया। हिप्पोक्रेट के अनुसार भी यह रोग उन व्यक्तियों को होता था जो सीसा अयस्क (Ore) के प्रद्रावण (Smelting) काय में लगे रहते थे। 2000 ईसापूव चीन मे सिक्के (Coins) निर्माण मे इस धातु का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त सीसे का उपयोग टाका लगाने (Soldering), पानी की पाइपों मिट्टी के बतनो को चमकाने (Glazing) में आता है। यह सर्वाधिक भारी धातु है। सीसा विषायण के मुख्य स्रोत हैं—पेंट, मृद्-भाड (Pottery) कांच चढ़ाना (Glazes), कीटनाशक, कांतिवधक (Cosmetics), सामग्री गैसोलीन, सदूषित भोजन एव जल। सीसा विषायण के चिरकालीन लक्षण मुख्य रूप से तीन प्रकार के पाए जाते हैं—1 उदरशूल सकेत जो सामान्यतया 'रगसाज शूल' के नाम से जाना जाता है। यह पीडा अग्निमाद्य से आरम्भ होकर दुसाध्य अजीर्ण (Constipation) तथा प्रचण्ड उदरीय ऐंठन तक होती है और अधिकतर सीसायुक्त यौगिको के प्रयोग करने वाले कारीगरो को होती है। 2 फालिज श्रेणी (Palsy Type) जिसमें वात सस्थान (Nervous System) का खराब होना उसका उदाहरण है। मणिबधपात (Wrist Drop) तथा 2 प्रमस्तिष्क (Cerebral) लक्षण का प्रभावन उदाहरणाथ—उन्माद (Mania), मतिभ्रम (Hallucination), आक्षेप (Convulsion) तथा समूर्च्छा (Coma), सीसा विषायण मे मसूढ़े (Gums) की किनारी नीली हो जाती है।

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—पेन्ट बनाने, बतन बनाने और उन्हें चमकाने (glazing), टाके लगाने, पानी की पाइपो, कीटनाशियों (Insecticides) कातिवधक (Cosmetics) रसायनो, गैसोलीन सदूषित भोजन आदि स्रोतों से यह विषाक्तता होने की सम्भावनाए हैं।

**लक्षण**—मन्दाग्नि (Dyspepsia) दुसाध्य कब्जियत (Constipation), तीव्र उदरीय ऐंठन, विभ्रम (Hallucination), उन्माद

(Mania), आक्षेप, समूर्च्छा तथा मसूडो पर नीली रेखा मणिबधपात (Wrist Drop)

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोंद का शामक पिलाए। उद्दीपन के लिए ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। विरेचन के लिए मिल्क ऑफ मैग्नेशिया दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

नोट —आयुर्वेद में इसे नाग भी कहते हैं।

## सीसा-युक्त यौगिक

लक्षण—सिरदर्द, प्रलाप (Delirium), आक्षेप।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोद का शामक बनाकरपिलाए। उद्दीपक रूप में ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। मिल्क ऑफ मैग्नीशिया से विरेचन (Catharsis) कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सैन्टोनिन (Santonin)

लक्षण—अज्ञात दृष्टि, वस्तुए आरम्भ मे नीली और तदुपरात पीली दिखलाई देती हैं, सिरदद चक्कर आना, कानो में झनझनाहट, वमन, आक्षेप, जडिमा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड (नमक) के घोल को पिलाकर वमन कराए। यदि उद्दीपन की आवश्यकता हो तो गम चाय, कॉफी अथवा ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—तेलो अथवा चर्बी का प्रयोग नही किया जाए।

## सैलिसिलेटस (Salicylates)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—इनका प्रयोग औषधियों में किया जाता है।

लक्षण—सिरदर्द, बहरापन (Deafness) मितली, वमन, सप्रवाह (Flushing), पसीना, प्यास लगना, उत्तेजना, सभ्रम, आक्षेप, सम्मूर्छा

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
2 सोडियम क्लोराइड से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।
3 तुरत चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सैलेनियम-युक्त यौगिक

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—ये शाकनाशी (Herbicides) के रूप मे प्रयोग किए जाते हैं। अत धूलि के सूघने अथवा फुहार धुआ (Spray Mist) के कारणवश इसके द्वारा विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण—धात्विक स्वाद, वमन, ऐंठन, अधीरता (Nervousness)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सोडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए। शामक रूप मे ऐरेबिक (बबूल) गोद पीने को दें। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात लेटा रहने दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

चेतावनी—जिन पौधो पर ये शाकनाशी के रूप मे छिडके गए हैं उनको खाने से मूर्च्छा का प्रभाव हो सकता है।

## हरताल (Orpiment)

हरताल दो प्रकार का होता है—1 जिसमे परतें (Layers) निकलती हैं वह पत्रारव्य (तबकी) और 2 जो पिंड की तरह ठोस होता है उसे पिंड हरताल कहते हैं। इन दानो मे पहला उत्तम है और दूसरा हीन गुण वाला है। स्वण के सदृश वर्ण वाला भारी, स्निग्ध और अभ्रक के पत्रों

की तरह हरताल गुणो से युक्त और रसायन (Chemical) है। ऐसा हरताल, जो पत्ररहित पिंड की तरह है, अल्प सत्त्व वाला, भारी, स्त्री के पुष्प (रज स्राव) को नष्ट करने वाला तथा अल्पगुणयुक्त है।

शुद्ध हरताल—चरपरा, स्निग्ध, कषैला, गम और विष, खुजली, कुष्ठ रोग, मुख के रोग, रुधिर (Blood) विकार, कफ, पित्त, केश तथा व्रण (Ulcer) को नष्ट करता है।

अशुद्ध हरताल—अच्छी तरह शोधित न होने वाला हरताल शरीर की शोभा को नष्ट करता है। अत्यन्त सताप और अगो मे सिकुडन (Convulsion) एव पीडा को उत्पन्न करता है। कफ, वात और कुष्ठ रोग को पैदा करता है।

हरताल सखिया (Arsenic) और गधक (Sulphur) का यौगिक है। इसमे दो भाग सखिया और तीन भाग गन्धक का होता है। भूगभ मे बहुत दिनों तक पास-पास सखिया तथा गधक की खानों (Mines) मे रहने से यह स्वयमेव बन जाता है। इसे कृत्रिम भी बनाते हैं। इसी के समान मैनसिल (Realgar) विष भी होता है किन्तु इसके योग मे अन्तर होता है तथा रग पीला न होकर लाल होता है। इसमे दो भाग सखिया और दो भाग गन्धक होता है।

लक्षण—वमन, अतिसार निजलीकरण (Dehydration), आक्षेप लकवा, समूर्च्छा, केशिकाए (Capillaries) तथा धमनिकाओ (Arterisles) की क्षति होने के कारण मृत्यु हो जाती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक (Antidote) पिलाए। सरसो (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। जल अत्यधिक पीने को दिया जाए।

## हाइड्रोजन पराक्साइड (Hydrogen Peroxide)

लक्षण—मितली, वमन, पीलापन।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक

# अध्याय-5

(बबूल) गोंद का शामक तैयार करके दें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## हाइड्रोजन सल्फाइड (Hydrogen Sulphide)

लक्षण—सिरदद, मितली, ऐंठन, समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

रोगी को स्वच्छ वायु मे ले जाए। कृत्रिम श्वास-प्रक्रिया चालू करदें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## हिस्टामीन (Histamine)

लक्षण—वमन, अतिसार, हल्का ज्वर (हरारत), सिरदद, दमा (ऐस्थमा)

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) के घोल से वमन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## हैक्सिलरिसॉसिनॉल (Hexylresorcinol)

लक्षण—मुख, गले और पेट में क्षोभ (Irritation), आमाशयान्त्र क्षोभ (Gestrointestinal Irritation) हृदय एव यकृत (Liver) को क्षति पहुचाता है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गाद का शामक बनाकर पीने को दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

# अध्याय-5

हे प्राणी, प्रकृति ने तुम्हे जो कुछ दिया है,
उसका दुरुपयोग न कर।
—ब्राह्मण साहित्य

# वानस्पतिक विष

मनुष्य का जब से इस भूतल पर अवतरण हुआ है तभी से अपने अस्तित्व के लिए वह संघर्ष करता रहा है। परमपिता परमात्मा ने मानव-शरीर में पेट एक ऐसा अंग बनाया है जिसके भरण-पोषण के लिए वह सब-कुछ करता रहेगा।

बिहारी कवि के शब्दों में—

ऐ तू पेट सुपेट सो, क्यो न भयो तू पीठ।
रीते अनरीत करत, भरत बिगारत ढीठ॥

अत आदिकाल से ही मनुष्य जीव-जन्तु पशु-पक्षी, कीड़े-मकौड़े तथा पेड़-पौधों पर ही अपना पेट भरने के लिए आश्रित रहा। वनस्पतियो मे कद मूल, फल, फूल और पत्तियाँ आदि कोई भी ऐसा भाग शेष नही रहा जिसका मनुष्य ने अपने जीवन निर्वाह के लिए उपयोग न किया हो। अत मनुष्य ने अपने पर्यावरण में विद्यमान अधिकतर पौधो का उपयोग किया और उनपर प्रयोग कर अनुभव एकत्र किए। पर्यावरण का सतुलन बनाए रखने के लिए प्रकृति ने वनस्पतियो को विभिन्न प्रकार के रसो से भरपूर किया।

पशु वनस्पति पर ही अपना निर्वाह करते हैं। मासाहारी पशु भी शाकाहारी पशुओं के ही मांस पर जीवित हैं और मनुष्य तो हर प्रकार से इनका उपयोग करते हैं। अत वनस्पतियो के अन्दर इनसे बचने के लिए प्रकृति ने विशेष प्रकार की शक्ति प्रदान की है जो भिन्न भिन्न रूप में होती है जैसे कई प्रकार के कटक (Thornes), विषाक्त रोम, कडवापन, चरपरापन या अन्य प्रकार के गधादि। प्रकृति द्वारा प्रदत्त वनस्पतियो के इन गुणो और शक्तियों का मनुष्य ने अपनी सुरक्षा हेतु लाभ उठाया। अपने पोषण के लिए शिकार करना आरभ किया, इस काय मे तीरो की नोकों को विषैले पौधो से विषाक्त किया। अपने शत्रुओ को समाप्त करने के लिए मनुष्य ने विषज्ञान को समुन्नत किया।

मनुष्य जब चरागाहो (Meadows) में जाकर अपने पालतू पशुओं को चराता है तो नाना प्रकार के पेड-पौधो एव लताओ के सम्पर्क में आता है। विषैले फलो और पत्तियो का भक्षण कर सदा के लिए जीवनलीला समाप्त कर लेता है। किन्तु बलिदान करने के पश्चात् ही कुछ प्राप्त होता है। अत इन विषैले पौधो के कारण जो बलिदान होते है उनके परिणाम स्वरूप शेष अन्य जीवितो को अनुभव होता है। ऐसे विषैले पौधो के विषय मे अनुसधान किए गए और हमारे पूवज इन अनुसधानो से हम सभी को अवगत कराते रहे तथा इसी प्रकार ज्ञान प्रसारण का क्रम चलता रहा। निष्कर्षत इन विषैले पौधा को तीन श्रेणियो मे विभक्त किया गया—(1) ऐसे पौधे जिनको खाने से विषैला प्रभाव पैदा होता है (2) ऐसे पौधे जिनके स्पश मात्र से त्वचा शोथ (Dermatitis) त्वचा फटना, सूजन आदि राग उत्पन्न होते हैं और (3) एलर्जी प्रक्रियाए उत्पन्न करने वाले पौधे।

पौधो से स्पश होने के पश्चात् विष शरीर मे धीरे-धीरे अन्दर जाने लगता है। इस अन्तराल म यदि प्रभावित अग को किसी भी कपडे धोने के साबुन से धोया जाए तो शरीर मे विष का अवशोषण रुक सकता है। शीघ्र लाभ के लिए भाग को पहले ट्राईसोडियम फास्फेट से धोए और तत्पश्चात साबुन का प्रयोग करें। वानस्पतिक विष के कारण त्वचा लाल हो जाती है, दाह (Burning) खुजली (Itching) एव सूजन एक-दो घटो अथवा दिनो म होने लगती है। शरीर मे छोटे छोटे फफोला (Blisters) के बाद पानी से भरे बडे फफोले बन जाते है। उपचार के लिए यदि त्वचा म खुदरापन (Rash) दिखाई नही दे रहा हो तो साबुन से धोकर तत्पश्चात 70 प्रतिशत ऐल्कोहॉल से धाए। अथवा 5 प्रतिशत फैरिक क्लोराइड घोल से फुरैरी (Swab) लगाए। यदि आखो के पास प्रयोग करना हो तो बराबर भाग पानी मिलाकर लगाए और इसके कारण पडे पील धब्बो को नीबू रस से दूर कर सकते हैं।

## अर्गट (Ergot)

लक्षण—वमन, उदरशूल, आक्षेप (Convulsions) एव समूर्छा (Coma)।

# अर्गट

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक दें। सरसों जैसा कोई वमनकारी पिलाए। प्रभावित व्यक्ति को उष्ण तथा शांत रहने दें। कृत्रिम श्वसन (Respiration) की आवश्यकता है।

## अफीम (Opium)

लक्षण—मितली, सिकुड़ी पुतलिया, जड़िमा (Stupor), गहन समूर्च्छा।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवमल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) के घोल से वमन कराए। पोटाश परमैगनट के कुछ रवे पानी मे डालकर पिलाए। गर्म चाय या कॉफी पीने को दें। रोगी को जगाए रखें और चिकित्सक को बुला लें।

## आर्निका (Arnica)

लक्षण—मितली और उल्टिया, शरीर का तापमान कम होना, पाण्डुता (*Pallor*)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। उल्टिया न होने पर, सरसो (राई) द्वारा वमन कराए। ऐरेबिक गोंद का शामक (*Demulcent*) दें। अण्डे की सफेदी देकर ऊपर से दूध पिलाया जा सकता है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## क्यूरेरे (Curare)

लक्षण—अधिक पेशाब आना (Diuresis), ज्वर (Fever) तथा अचेतनता (बेहोशी)।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उद्दीपक रूप मे ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया भी पिलाया जा सकता है। चिकित्सक की सवाए प्राप्त करें।

## कुचला (Strychnine)

लक्षण—शरीर की सम्पूर्ण पेशियो में प्रतिवत उत्तेजना (Reflex Irritability) जो अन्ततोगत्वा पेशी-तनाव (Tetanus) के समान आक्षेप

तक हो जाती है। आवेगो (Spasms) की इतनी बहुलता कि शरीर मुड जाता है भुजाए कम्पन करती हैं, गदन कठोर हो जाती है, चेहरा तिरस्कार पूण टहशा हो जाता है। श्वासावरोधन छाती की पेशियों मे कठोरता के कारण होता है और फलस्वरूप मृत्यु तक हो जाती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। साडियम क्लोराइड पिलाकर वमन कराए। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात लेटा रहन दें। चिकित्सक की सेवाए तुरन्त प्राप्त करें।

चेतावनी—यह और इसमें लवण आक्षेपिक (convulsive) विष हैं।

## कोनोपोडियम (Chenopodium)

लक्षण— मितली, वमन कानो मे झनझनाहट, आक्षप (Convul sions) आदि।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो से तैयार वमनकारी से वमन कराए। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## कोकेन (Cocaine)

लक्षण—बेचनी, पुतली (Pupils) का फैल जाना, वमन, आक्षेप, प्रलाप (Delirium) आदि।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से तयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उद्दीपक रूप मे ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## छत्रक (मशरूम)

लक्षण—अत्यधिक लालास्राव, प्यास, शूल (Colic), वमन, अतिसार पसीना, स्फुरण (Twitching) सभ्रम, (Confusion) तथा समूर्च्छा (Coma) आदि।

# छत्रक

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार —

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) का तैयार वमनकारी पीले को दें। विरेचक (Cathartic) रूप में मिल्क ऑफ मैग्नीशिया दें और तदुपरांत अधिक मात्रा में पानी पिलाए। एनीमा (Enema) का प्रयोग करें और तुरन्त चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

## जमालगोटे का तेल (Croton Oil)

लक्षण—पेट में दर्द, प्रचण्ड अतिसार रोग (Purging), थकावट (Exhaution), लड़खड़ाकर गिरना।

# जमालगोटा

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए। सरसों (राई) से निर्मित वमनकारी द्वारा वमन कराए। ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया या चाय या कॉफी पीने को दें। शामक रूप में ऐरेबिक गोंद भी पिलाया जा सकता है। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

### डिजिटेलिस (फाक्सग्लोव)

दसवीं शताब्दी में फाक्सग्लोव (डिजिटेलिस) एक जड़ी-बूटी (Herb) जाति के पौधे में आता था। उस समय जलशोथ (Dropsy) रोग के उप-

चार मे यह पौधा औषधि रूप में उपयोगी था किन्तु बरमिंघम के डा० विलियम विदरिंग ने सवप्रथम हृदय धडकन को रोकने में इसके महत्त्व एव मूल्य को समझा। चूकि यह अपरिष्कृत औषधि (Crude Drug) तथा इसका निर्माण बहुत कुछ सक्रियता मे विचरण (Vary) करते हैं और प्राय परिसाधन (During) तथा जरण (Aging) मे पर्याप्त मात्रा मे क्षय होता है अत शुद्ध सक्रिय सिद्धातों के विच्छेद (Isolate) करने की ओर प्रयास किए गए। इनकी प्राप्ति डिजिटेलिस परप्यूरिया (Digitalis Purpurea) की पत्तियो मे विद्यमान ग्लिकोसाइड्स, डिजिटाक्सिन जिटाक्सिन तथा जिटेलिन रूप मे हुई। अन्य पौधो मे भी ऐसे ही पदाथ मिले जो रासायनिक संरचना एव शरीर मे इनकी प्रक्रिया के समान ही क्रिया करत हैं। औषधि की सभी सामग्री और इसमे विच्छेदित सिद्धात एव उनका मिश्रण प्रत्यक्ष ही हृदय पेशियो पर क्रिया करत हैं। फलस्वरूप रोगी के हृदय की धडकन कम हो जाती है। इन पौधो द्वारा उत्पन्न डिजिटलिस विषायण (Poison ing) कुछ वर्षों स ही प्रचलित है।

### डिजिटेलिस परप्यूरिया

लक्षण—मितली और उल्टिया, उदरीय शूल अथवा अशाति, अतिसार।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
सरसो (राई) के वमनकारी से वमन कराए।
कृत्रिम श्वास प्रक्रिया करें।
चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

### डिजिटेलिस-युक्त यौगिक

लक्षण—वमन, जठर वेदना (Gastric Pain), चक्कर आना, अतिसार।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।
सरसों (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

कृत्रिम श्वास भी दिया जा सकता है।
चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

### धतूरा (Hemlock)

धतूरे के द्वारा विष देना भारतवर्ष में जहर देने की प्रचलित रीति है। परन्तु यह संखिया (Arsenic) और अफीम (Opium) की अपेक्षा बहुत कम काम में आता है। धतूरा भारतवर्ष में बहुत पाया जाता है, इसके बीजों को पीसकर खाने-पीने के पदार्थों में मिला दिया जाता है। खाने के पश्चात् बहुत शीघ्र चिह्न प्रकट होने लगते हैं।

# पूर्वी धतूरा

लक्षण—गला सूख जाता है, मुंह लाल हो जाता है, त्वचा गर्म और सुर्ख (Crimson red) हो जाती है। पुतलियां बहुत फैल जाती हैं और पथरा (Stable) जाती हैं। भोज्य पदार्थों के निगलने में कठिनाई होती है। बेचैनी बहुत बढ़ जाती है। व्यक्ति, जो प्रभावित है, गफलत में बिना

किसी अभिप्राय के हाथ-पैर पीटता है और बडबडाता है। फिर बेहोशी हो जाती है और श्वास तथा हृदयगति बंद होने से मृत्यु हो जाती है। आखों की पुतलियां बराबर फैली रहती हैं और आराम हो जाने के उपरात भी कई दिन तक फैली रहती हैं।

प्रतिकारक—

वमन कराओ। तौलिये से हवा करके या ठण्डे जूस के द्वारा मोहनिद्रा (Hypnosis) को रोको। गम कॉफी या एक चम्मच ब्रांडी पिलाकर रोगी को उत्तेजित करते रहो, गर्मी पहुचाते रहो और जरूरत हो तो कृत्रिम रीति से सास चलवाते रहो।

## निकोटीन (Nicotine)

*विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह औषधियो, कीटनाशी तथा चमडा* कमाने (Tanning) में प्रयोग किया जाता है। 4 6 प्रतिशत इसकी मात्रा तम्बाकू मे पायी जाती है।

लक्षण—चक्कर आना, कपन (Tremor), लडखडाकर गिरना, तन्त्रिका रज्जु (Nerve Cord) का आरोही (Ascending) प्रेरक अगघात (Motor Paralysis) उत्पन्न हो जाता है। लडखडाने के कारण श्वसन तन्त्र (Respiratory System) का अगघात हो जाता है। जो तम्बाकू पीने के आदी नही होते उनको मितली, उल्टियां अत्यधिक पसीना तथा पेशीय-दुर्बलता का अनुभव होता है किन्तु धूम्रपान करने वालो की भूख कम हो जाती है तथा लालास्राव अत्यधिक होने लगता है।

# कॉफी

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनियसल प्रतिकारक पिलाए।
सोडियम क्लोराइड के घोल से वमन कराए।
कृत्रिम श्वास की भी आवश्यकता पड सकती है।
उद्दीपक (Stimulant) रूप मे ऐरामेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया, तेज चाय अथवा कॉफी पिलाई जा सकती है।

रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शांत रहने दें।
तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।
चेतावनी— निकोटीन प्राणियो, पशुओं एव जन्तुओ के लिए अत्यधिक विषला है। निकोटीन के लवण (Salts) भी अत्यत सकटपूण हैं।

## बेलाडोना (Belladonna)

बेलाडोना (धतूरा) छाया में दीवारों के साथ अथवा कूडे-कक्ट पर उत्पन्न होता है। इसके फूल घंटी (Bell) आकृति के बड़े और भूरे-बैंगनी रंग के होते हैं। इसके फल बेर की तरह गोल, बड़े और गहरे बैंगनी से भी अधिक काले होते हैं। इसके फलों का बैंगनी वण का रस स्वाद मे मीठा होता है और यही कारण है कि बच्चे इसकी ओर आकर्षित होकर भक्षण कर लेते है और फलस्वरूप सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाते हैं। किन्हीं देशो में तो इसकी खेती विषैने ऐलकालायड ऐट्रोपीन (Atropine) प्राप्त करने के लिए की जाती है। भारत में इसका प्रयोग औषधि मे किया जाता है। प्राचीन समय मे धतूरे के बीज (Seeds) राहगीरों का खाद्य पदार्थ मे खिलाकर उन्हे लूटने के काम लेत थे। एक समय था कि इटालियन महिलाए नेत्रों के तारे (Pupils) बढ़ाने और सौंदय-साधनों में उपयोग कर अपनी सुन्दरता बढ़ाती थीं। सन् 1542 में इसकी विषाक्त शक्ति का ज्ञान लियोनार्ड फश की पुस्तक हिस्टोरिया स्ट्रिपियम में प्रकाशित हुआ। सन् 1833 मे मेन (Mein) ने पैरिस मे ऐलकालायड एट्रोपीन की खोज की। इसका प्रयोग घावो (Wounds) पर लगाने, और कभी-कभी सिगरेट रूप में किया जाता था। जलने पर इसका धुआ (Smoke) दमा (Asthma) द्वारा उत्पन्न आवेगो (Paroxysms) में लाभप्रद है। ऐट्रोपीन का अत्यधिक उपयोग नेत्र-विज्ञान (Opthalmology) चिकित्सा म है। इसके द्वारा नेत्र-तारा विस्तरित किया जाता है और समायोजन पेशियो (Accommodation Muscles) को सुन्न किया जाता है। इसके अन्य उपयोग सम्पूर्ण श्वास नली (Respiratory Tract) से स्राव (Secretion) कम करने तथा रुधिर में उत्तेजना उत्पन्न करना भी है। यह पहले उत्तेजना

और तदुपरांत केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र को विक्षिप्त (deprass) करता है।

लक्षण—उन्माद, उत्तेजना, अधिक बातें तथा झगड़ा करना, प्रलाप, आक्षेप एवं अंत में समूर्च्छा।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं।
2 सरसों (राई) से तैयार वमनकारी दें।
3 रोगी को गर्मी पहुंचाएं तथा शांत रहने दें।
4 चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

नोट— इसको धतूरा (Hemlock) भी कहते हैं।

### बेलाडोना युक्त यौगिक

लक्षण—मुख में शुष्कता, पुतलियों का फलना, भुजाओं तथा पैरों का लकवा, समूर्च्छा।

प्रतिकारक एवम् प्राथमिक उपचार—

1 यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं।
2 सरसों (राई) द्वारा तैयार वमनकारी से वमन कराएं।
3 रोगी को गर्मी पहुंचाएं तथा शांत रहने दें।
4 चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

### भारतीय भांग (Indian Hemp)

भारतीय हेम्प भारतवर्ष के बाजारों में (1) भांग (Cannabis) जो कि पिसी हुई पत्तियां और डंठल होती है। (2) गांजा—सूखे हुए फूल आते हुए डण्ठल जो हुक्के में पिए जाते हैं और (3) चरस—जो पत्तियों और डालियों से निकाला हुआ अर्क (Decoction) होता है, के रूप में सरलता से मिल जाती है। यह बहुधा पीने की नशीली चीजों में और मिठाइयां बनाते समय शक्कर (चीनी) में मिलाई जाती है। मिस्र और अरब देशों में इसे हशीश (Heroin) कहते हैं। साधारणतया यह मृत्यु का कारण नहीं होती। इसे पीने का दुर्व्यसन बहुत से मनुष्यों में पाया जाता है। किसी को ठगने या लूटने से पहले इसका नशा करा देते हैं। इसके प्रभाव से

# भांग

नशा होकर नींद आ जाती है। जब इसके नशे में मानसिक उत्तेजना होती है तो नशे में अजीब-अजीब बातें दिखती हैं जो भली मालूम होती हैं। हसना, गाना और बहकी-बहकी बातें करना इसके साधारण परिणाम होते हैं। किसी दृश्य में आदमियों के मारने की उत्तेजना होती है। ऐसी दशा में सदैव नशा करने वाला व्यक्ति कभी-कभी पागल हो जाता है। हिम्मत और जोश (Excitement) आने के लिए इसका बहुत से डाकू प्रयोग

करते हैं या इस उद्देश्य से दूसरे व्यक्ति उन्हें इसका नशा करा देते हैं। इसके प्रभाव से पुतलियां (Pupils) फैल जाती हैं, नाड़ी भरी हुई और धीरे-धीरे चलती हैं तथा त्वचा झनझनान लगती है। सिर में चक्कर के पश्चात् गफलत, बेहोशी और मृत्यु हो जाती है।

# पोस्त वृक्ष

लक्षण—सुहावनी मादकता (Intoxication) आलस्य, यौन-मैथुन की इच्छा में बढ़ोत्तरी, आक्षेप।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) के घोल से वमन कराएं। जल का अत्यधिक मात्रा पिलाएं। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

नोट —गांजा, पोस्त चरस एवं हशीश के भी उपयुक्त लक्षण तथा उपचार हैं।

### मॉरफीन (अर्थात् अफीम का सत) (Morphine)

लक्षण—मितली, सिकुड़ी पुतली, जड़िमा (*Stupor*), गहन समूर्च्छा।

# अफीमी पोस्त

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाएं। सरसों (राई) के घोल से वमन कराएं। ऐरोमैटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया या गर्म चाय अथवा कॉफी पीने को दें। रोगी को गर्मी पहुंचाएं शांत रहने दें तथा जगाएं रखें। चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

नोट—मार्फिया के भी उपयु क्त लक्षण और उपचार होते हैं।

## वत्सनाभ (Aconite)

एकोनाइट एक बहुत ही आकर्षक पौधा है और यह इतना मायावी (deceptive) है कि इसका प्रत्येक भाग अत्यधिक विषैला एव तीक्ष्ण (acrid) है। प्राचीन समय से ही यह अपने विषाक्त गुणो के कारण विख्यात है। प्राचीन चीन तथा भारत की पहाडी जातिया कालान्तर से इसका प्रयोग करते आए हैं। तेरहवी शताब्दी से चिकित्सक इसका उपयोग औषधियो मे करते आ रहे हैं। इसको माकशुड (Monkshood), वुल्फ्स बेन (Wolf's bane), लियोपाड् स बेन (Leopard s bane) तथा वोमेन्स बेन (women's bane) आदि नामो से भी जाना जाता है। इसकी जडें तथा ऐलकालायड (Alkoloid) अत्यधिक घातक है। इसकी प्रकृति उत्तेजक एव पक्षाघातज (Paralyzant) है। त्वचा अथवा श्लष्म कला (Mucous Membrane) पर लगने से सनसनाहट (Tingling) की अनुभूति होती है। आरम्भ में इसका प्रयोग वातशूल (Neuralgia) के आराम मे किया जाता था किन्तु आजकल हृदय-सम्बन्धी (Cardiac) रोगो तथा नाडियो मे शान्ति प्रदान करने के लिए होता है।

विष के रूप मे इसका प्रभाव बहुत ही तीव्र एव शक्तिशाली है। इसके भक्षण से सर्वप्रथम पेट मे गर्मी सी पैदा होती है, कभी-कभी मितली होना, नाडी (Pulse) तथा श्वास मे धीमापन, त्वचा आर्द्र (moist) और ठडी तथा अंततोगत्वा अवसन्नता (Prostration) हो जाती है।

वत्सनाभ (एकोनाइट) बहुत तेज विष होता है। यह भारतीय बाजारो मे सुगमता से मिल जाता है। यह पेड की सूखी हुई जड के रूप मे बिकता है। देशी वैद्य इसे कई प्रकार के बुखार (ज्वर) मे दवा के रूप मे देते है। कभी-कभी नशा तेज करने के लिए देशी शराब मे पिला देते हैं। असभ्य पहाडी जातिया अपने तीरो की नोक (Arrow Heads) को जहरीला बनाने मे भी इसे काम मे लाती हैं। एकोनाइट द्वारा मनुष्य-हत्या के उदाहरण मिलते तो है परन्तु बहुत कम। ऐसी दशाओं मे जड का बारीक-बारीक पीसकर चाय में या भोज्य-पदार्थों में मिला दिया जाता है। इसके प्रभाव से वात-

रज्जुआ (Nerves) मे उत्तेजना आती है फिर शरीर मे सुन्नता आने लगती है। हृदय और सास लेने के केन्द्र भी प्रभावित हो जाते हैं परन्तु मस्तिष्क पर कोई प्रभाव नही पडता।

होठ, जीभ और तालू (Palate) झनझनाने लगता है, लार (Salivation) बहुत ज्यादा आती है। अगो और सारे शरीर मे सुन्नता आ जाती है तथा शक्ति जाती रहती है। शरीर निर्जीव-सा हो जाता है। नाडी (Pulse) और सास कमजोर पड जाते है और क्रमबद्ध नही रहत। तदुपरात कमजोरी बहुत बढ जाती है।

**लक्षण**—मितली एव उल्टिया अतिसार लडखडाकर गिरना (Collapse), मुख तथा होठो पर सनसनाहट (Tingling) का अनुभव करना।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए। सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए। उद्दीपन के लिए ऐरोमैटिक स्प्रिट आफ अमोनिया, गम चाय या कॉफी पिलायी जा सकती है। रोगी को गर्मी पहुचाए तथा शात रहने दें। तुरन्त चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

**विशाखमूल** (Mandrake or Mandragora)

विशाखमूल

यह छोटे तन वाला पौधा होता है जिसके अण्डाकार पुष्प गुच्छो मे होते हैं। मोटी गूदेदार तथा दो नोक वाली (forked) जड़ होती है। प्रत्येक अकेला फूल बैंगनी किन्तु इसका भीतरी घेरा (Corolla) घण्टी आकृति का होता है। फल गूदेदार, रसदार नारंगी रंग के बेर के समान गोल होता है। प्राचीन समय मे इसका उपयोग निद्राकारी (Narcotic) अचेत करने तथा फलस्वरूप शल्य चिकित्सा (Surgery) के काय मे होता था। सुना है कि इस पौधे को उखाड़ने के लिए चादनी रात मे उपयुक्त प्रार्थना एव शास्त्रोक्त विधि से काल कुत्ते को रस्सी द्वारा इसकी जड से बाध दिया जाता था। अत्यधिक विषैला पौधा होने के कारण मनुष्य द्वारा हाथ से स्पर्श नही किया जाता। इस पौधे के विषय मे मध्यकालीन युग मे जन-सम्मति थी कि जैसे ही पौधे को भूमि से निकालते तो इतनी तेज चीख जैसी आवाज निकलती कि या तो मनुष्य इसके प्रभाव से मर जाता अथवा पागल हो जाता। अतः इसके उखाड़ने के समय मनुष्य अपने कानो को पूर्णतया बन्द कर लेते हैं जिससे कि इसकी चीख (Shrick) का प्रभाव कम रहे। शेक्सपीयर ने भी रोमियो और जुलियट मे अपने इस विश्वास की ओर सकेत किया है। पौधा भूमि से निकलने के पश्चात घाव भरने (Healing), प्रेम जागृत करने सुगमता से गर्भ धारण करने तथा शांत नींद लाने आदि लाभकारी कार्यों मे उपयोगी होता है। बिना उखाड़े इस पौधे का उपयोग विषैला है। उत्तरी अमरीका मे इसको May Apple कहते हैं। इसके प्रयोग से वमन, प्रचण्ड अतिसार तथा बेहोशी हो जाती है।

## विषगजर (Conium)

लक्षण —चक्कर आना, श्वास में असुविधा, धावुका फालिज (Creeping Paralysis) आक्षेप।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवर्सल प्रतिकारक पिलाए।

सरसो (राई) मे तैयार वमनकारी से वमन कराए। उद्दीपक रूप मे ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया दें। चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सिन्कोना (Cinchona)

यह सदाबहार कुनैन का पेड़ दस डिग्री उत्तरी अक्षांश से बीस डिग्री दक्षिण अक्षांस के बीच उपयुक्त जलवायु एवं तापमान के कारण अधिक उगता है। यह 80 फुट तक की ऊंचाई का होता है। इसकी खोज सन् 1742 ई० में हुई थी और इसका उपयोग मलेरिया ज्वर में किया जाता है। इसी कारण सम्पूर्ण संसार के देशों मे इसकी मांग बहुत बढ़ गई। अनेक स्थानों पर सिन्कोना छाल से कुनैन पदार्थ बनाने के उद्योग स्थापित किए गए। सिन्कोना का सर्वाधिक प्रभावशाली ऐलकालायडस (Alkaloids)

कुनैन

कुनैन ही है जिसका विच्छेदन (Isolation) सन् 1792 ई० में हुआ। यद्यपि इस पौध से बीस अन्य ऐलकालायडस भी अलग कर तयार किए गए किन्तु महत्त्व को ध्यान मे रखते हुए केवल चार ऐलकालायडस (कुनैन कुनैडीन, सिन्कोनैन तथा सिन्कोनैडीन) को ही प्रयोगार्थ अपनाया गया। ये ऐलका-

लायडस पोष बीजाणु (Trophozoite) तथा एरिथ्रोसाइटिक (Erythrocytic) किस्म के मलेरिया परजीवियो (Parasites) पर क्रिया करते हैं। कुनैन विशेषकर इसी काय के लिए प्रयोग की जाती है। इसका उपयोग शीत ज्वर (Influenza), वातशूल (Neuralgia) तथा सिरदद में भी किया जाता है।,अत्यधिक क्टु (bitter) पदाय होने के कारण इसका प्रयोग भूख बढाने के काम में भी होता है। हेयर टॉनिक मे इसका उपयोग किया जाता है। कुनन की अत्यधिक मात्रा खाने से कानो मे झनझनाहट, सिर में दद और चक्कर (Dizziness) आने लगते हैं। रक्तचाप (Blood-pressure) पर इसका प्रभाव इतना घातक सिद्ध हो सकता है जिसका अनुमान करना भी कठिन है।

लक्षण—कणनाद (Ringing in Bars), चक्कर आना, सिरदद, रक्तचाप पर प्रभाव होने से घातक इतना है कि मृत्यु भी हो सकती है।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

यूनिवसल प्रतिकारक पिलाए।

सरसो (राई) से तैयार वमनकारी द्वारा वमन कराए।

ऐरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया पीने को दें। गर्म चाय अथवा कॉफी भी पिलाई जा सकती है।

चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

नोट—इसको कुनैन वृक्ष भी कहते हैं क्योकि इसकी छाल (Bark) से ही कुनैन तैयार किया जाता है।

## सिन्कोफेन (Cinchophen)

लक्षण—मितली, वमन, अतिसार, ज्वर।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 सरसों (राई) से तैयार वमनकारी पिलाए।

2 चिकित्सक की सेवाए प्राप्त करें।

## सिरपेंचा (Ivy)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत— इन विषैली लताओं के प्रत्यक्ष तौर पर सम्पर्क अथवा स्पर्श होने पर।

लक्षण—खुजली (Itching) एवं त्वकशोथ।

### प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

1 प्रभावित अंगो को साबुन तथा जल से धोए।

2 कैलामाइन लोशन लगाए अथवा सोडियम बाइकार्बोनेट (पाक सोडा) के संतृप्त घोल (Saturated Solution) की शीतल गद्दी (Com press) लगाए अथवा ऐप्सम लवण का घोल बनाकर प्रभावित अंग पर लगाए।

3 चिकित्सक को दिखाकर परामर्श लें।

नोट—सिरपेंचे की लता को मालल्ली भी कहते हैं।

## हशीश (Heroin)

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—यह मॉरफीन से तैयार किया कृत्रिम ऐलकालॉयड है। यह गंधहीन सफेद दानेदार पाउडर होता है। इसका उपयोग अधिकतर नाक द्वारा सूंघने से किया जाता है। 0 2 ग्राम हशीश से ही मृत्यु हो जाती है।

लक्षण—इसका प्रभाव मॉरफीन के समान है। नाड़ी की गति धीमी, श्वास धीमा। पुतलियां एक बिन्दु के बराबर सिकुड़कर रह जाती हैं। श्यामता जड़िमा समूर्च्छा, रुक-रुककर सांस आना आदि इसके लक्षण हैं।

### प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

पोटेशियम परमैंग्नेट के घोल से पेट को पूर्णतया धोएऔर आधा घंटे बाद फिर पेट साफ करें। प्रत्येक धोवन के पश्चात् एक गिलास पानी में एक चम्मच सरसों घोलकर पिलाएं ताकि वमन हो जाए। आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास प्रक्रिया करें। रोगी को गर्म, शांत तथा जगाए रखें।

# अध्याय-6

एक-दूसरे की रक्षा और सहायता करना
मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य है।

—ऋग्वेद

# जीवजन्य विष

इस भूतल पर असख्य कीडे हैं, जिनम से कुछ मित्र कीडे कहलाते हैं जो मनुष्य को किसी न किसी रूप मे लाभ पहुचाते हैं, और हानि पहुचाने वाले शत्रु-कीडे कहलाते है। यह सौभाग्य की बात है कि सभी कीट मनुष्य को हानि नहीं पहुचाते। जहा एक ओर य फसलों को नष्ट कर अथ-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करते हैं, वहा दूसरी ओर ये कीट पेड-पौधो के परागकणो को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाकर पौधो मे सेचन (Pollination) का काय करते हैं। कुछ कीट भूमि को उपजाऊ बनाने मे सहायता करते है।

हानि पहुचाने वाल कीट मानव एव पशुओ के स्वास्थ्य को नाना प्रकार से हानि पहुचाते रहते हैं। मक्खी, मच्छर, पिस्सु, जूए (Lice), काकरोच, खटमल, चिचडी (Ticks), मकडी, बिच्छू (Scorpions), सप आदि मुख्य रूप से मनुष्य को किसी न किसी रूप मे शत्रु कीट का काय करते हैं। मलेरिया, पीत-ज्वर, डेंगू ज्वर, हैजा, अतिसार आदि अनेक ऐसी बीमारिया हैं जिनके उत्तरदायी इनम से कुछ कीट हैं। कुछ रेंगने वाले जन्तु (Reptiles) मनुष्य को काटकर या दश मारकर अपने विषो द्वारा उसकी जीवन-लीला ही समाप्त कर देते हैं।

बिच्छू ससार के गम देशो मे पाया जाने वाला कीट है जो मनुष्य के अ दर अपने डक (Sting) से विष पहुचाता है। इसका दशन अत्यधिक दद पैदा करता है कि तु मृत्यु नही होती। इसके विष का दशन-स्थल से चूषण (Sucking) किया जाता है। मधुमक्खी काला मकडा आदि भी दशन करते हैं। इन अधिकतर कीटो के दशन के फलस्वरूप खुजली (*Eczematization*) के साथ रोमा भी आता है।

यद्यपि सप मनुष्य का शत्रु-कीट न होकर मित्र-कीट के ही रूप मे काय करता है, क्योकि इसका भोजन अधिकतर मक्खी, मच्छर तथा अन्य-विषैले कीट हैं किन्तु फिर भी अपने विषैले दशन से मनुष्य की मृत्यु का

उत्तरदायी होता है। सप अधिक्तर गम प्रदेशा में पाया जाता है और इसका प्रभाव भी इन स्थाना पर अधिक है, क्योकि गम प्रदेशो मे मनुष्य वस्त्र कम पहनता है और नगे पैर भी रहता है। इसका आक्रमण शरीर के नग्न अगो यथा—पैर हाथ और मस्तक आदि पर अधिक होता है। ऐस व्यक्ति जो निशाचर (अर्थात रात्रि मे घूमने वाले जैसे चोर, डाकू, लुटेरे आदि तथा देशकी रक्षा करने वाले सिपाही, सनिक नाविक आदि) हैं इनके शिकार होते हैं। ऐसा देखा गया है कि सप सामान्यतया आक्रमण नहीं करता किन्तु दबाव पडने अथवा जीवन-साथी के मत्युवश प्रतिकार की भावना से यह दशन करता है।

सप की अनेक प्रजातिया हैं। इनको विषा की विषाक्तता के आधार पर ही श्रेणीबद्ध किया गया है। कॉबरा (Cobra),ऐल्पीन (Elapine) पिट बाइपर आदि सप अत्यत घातक है। भारत मे इसी श्रेणी के चन्दनगोय (Moniter) पटरागोय (Gila-monster) एव छपकली (Lizard) भी बहुत विषैल है। इनके दशन का प्रभाव तत्रिका तन्त्र (Nervous System), मस्तिष्क (Brain), गुर्दे (Kidneys) तथा रक्त-सचारतन्त्र (Circulatory System) पर पडकर मनुष्य को मृत्यु की गोद मे सुला देते हैं। सप न अपनी पूछ से डक (Sting) मारता है और न ही अपनी जीभसे हानि पहुचता हैं बल्कि अपने दातो से ही विष शरीर मे पहुचाता है। सप दशन का परिणाम इस बात पर निभर करता है कि दशन-समय सप की मनोवस्था क्या थी अर्थात उसने क्रोध आने पर तो दशन नही किया। विष के प्रभाव से मनुष्य को नीद आती है और निद्रावस्था मे ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

## कीट-दशन

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रात—बहुधा वरें (ततैया), कानखजूरा (Centipede), हड्डा (Hornet) बिच्छ (Scorpion) आदि के डक मारने की आकस्मिक घटनाए होती हैं। मक्खिया, पिस्सु मच्छर काक रोच खटमल चिचड़ी (Ticks) घुन (Mite) चीटी, चींटा दीमक मेंढ़क, जूए (Lice) मधुमक्खी (Bees) भौंरा (Bumble bee) काटन से कष्ट होता है।

लक्षण—खुजली, बड़े-बड़े स्फोट (Wheals) रक्तस्राव (Haemorrhage), दंश स्थान पर सूजन (Swelling), बिच्छू के दंशन पर रोना आदि।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

1 दंशस्थान को सुई (Needle), चाकू या सूआ (Poker) से कुरेदकर डंक बाहर निकालें।

2 दंश स्थान पर तम्बाकू या प्याज कुचलकर बांध दें। अथवा सोडियम बाइकार्बोनेट का लेप लगाएं। अथवा असली अर्क कपूर या थोड़ा-सा कार्बोलिक एसिड लगाएं।

3 बिच्छू के डंक स्थान पर डंक निकालने के बाद तारपीन का तेल या पत्थर का कोयला घिसकर लगाने से काफी लाभ होता है।

4 कानखजूरे के काटने पर गूलर के पत्ते पीसकर लगाने से लाभ होता है।

5 दंश स्थान पर तुरन्त ही लोहा रगड़ने से सूजन और दर्द कम होता है।

6 मधुमक्खी के काटने पर रोगी को शहद पिलाएं।

7 चिकित्सक की सेवाएं प्राप्त करें।

चेतावनी—कार्बोलिक एसिड सावधानी से लगाना चाहिए अन्यथा अधिक लग जाने से फफोले (Bleb) पड़ जाने की संभावना रहती है।

## पशुजन्य विष

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, सियार (गीदड़) आदि के काटने से रेबीज रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण—सुषुम्ना (Spinal Cord) और मस्तिष्क (Brain) सहित केन्द्रीय तन्त्रिका तंत्र (Central Nervous System) प्रभावित होता है। आवाज़ कुछ भारी हो जाती है। फिर दम (श्वास) घुटने लगता है। श्वास लेने और निगलने वाली पेशियों (Muscles) में ऐंठन, बेचैनी, अनिद्रा, मृत्यु भी।

प्रतिकारक एवं प्राथमिक उपचार—

1 सरसों का तेल घाव पर लगाकर महीन पिसी लाल मिर्च भर देनी चाहिए। अथवा

2 हुक्के के पानी या साबुन और पानी से धोकर शुद्ध कार्बोलिक एसिड लगाओ। अथवा

3 पोटाशियम परमेंगनेट (लाल दवा) के दाने (क्रिस्टल) या उसका गाढ़ा-गाढ़ा घोल लगाया जाए। अथवा

4 सिल्वर नाइट्रेट तथा नाइट्रिक एसिड भी लगाया जा सकता है।

5 अस्पताल जाकर ऐंटी-रैबिक टीके (Anti rabic Vaccines) लगवाने बहुत जरूरी है।

नोट—यह रोग घातक है। अत इसकी रोकथाम बड़ी आवश्यक है।

## मकड़ा विष (Arachnidism)

यह विष एक काले मादा मकड़ा के डंक मारने से घातक सिद्ध हुआ है। काला मकड़ा अत्यधिक विषैला होता है और यह सामान्यतया Black Widows Spiders के नाम से जाना जाता है। इसके इस नाम विशेष का कारण है कि शादी और सम्भोग के पश्चात् मादा मकड़ा अपने जीवन साथी का भक्षण कर लेती है। इसकी लम्बाई आधा इंच होती है। काला चमकीला रंग, तारों (Wiry) के समान टाँगें, फूला हुआ पेट तोंद (Belly) के चारों ओर लाल अथवा नारंगी रंग की रेखा, आठ आँखें, आठ पंजे तथा विषैले दांत, जिनके ऊपरी अंतिम छोर पर छोटे छोटे सूराख जो दंशन समय विष उगलते हैं, ही उनकी पहचान हैं।

इनका निवास अधिकतर अंधेरे कोने, तहखाने (Basement) मेनहोल, खाली चूहों के बिल, पत्थर एवं लकड़िया के नीचे पेड़ों की ठूंठ (Stumps) तथा लकड़ियों के ढेरों में होता है। इन्हीं अंधेरी जगहों पर ये अपना जाला (Web) बनाते हैं। इस जाल में जो शिकार फंस गया यह उसका रक्त चूस लेता है। यह दिखाई न देने वाला कीड़ा है और क्रोधित करने तंग करने, तथा भूखा रहने पर ही मनुष्य पर आक्रमण करता है।
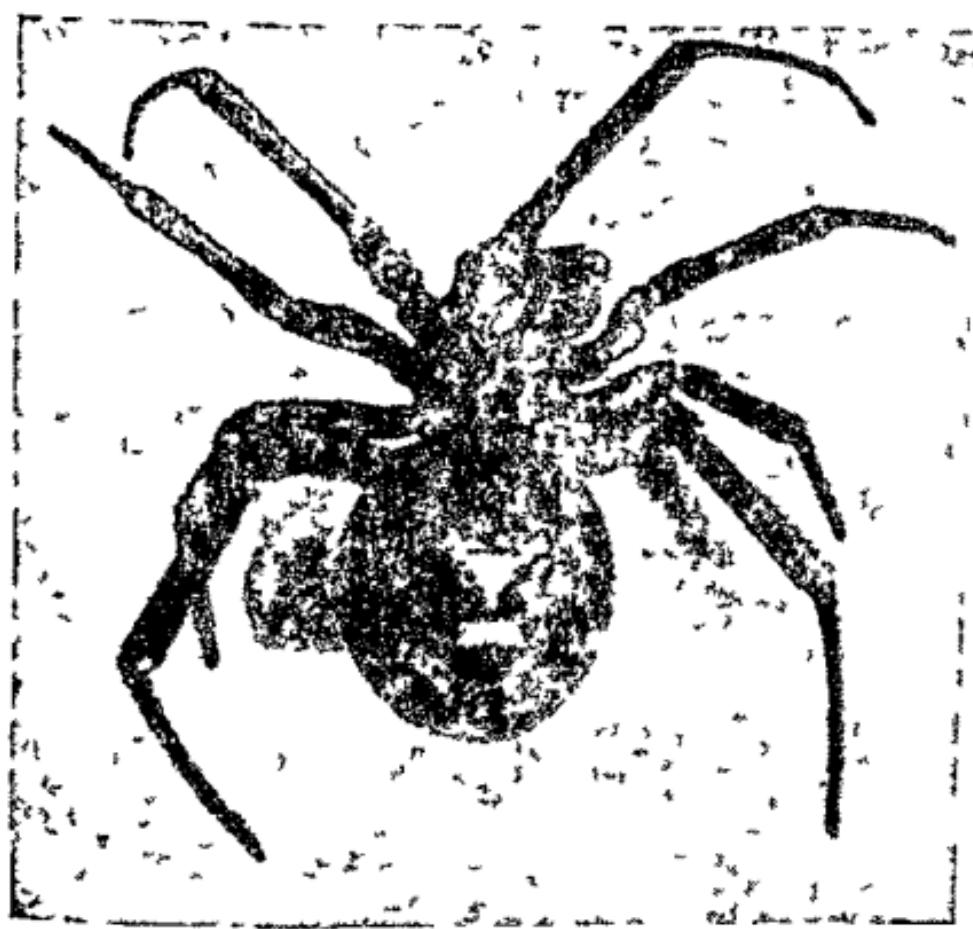
विषैला काला मकडा

मानव शरीर पर जहा डक मारता है वह स्थल लाल हो जाता है जिसके चारो ओर सफेद रग का सूजन-सा दिखाई देता है। कुछ ही मिनटो से लेकर एक घटे के अन्दर दर्द इतना होता है कि सम्पूर्ण शरीर मे फैल जाता है। इसकी जीवन-अवधि केवल एक वर्ष है किन्तु इस अवधि मे यह तीन से चार सौ अण्डे तक एक समय मे देती है। ये अण्डे मटर के बराबर रेशमी थैलो (*Sac*) मे लिपटे होते हैं।

लक्षण—दश-स्थल पर असहनीय पीडा, पेट तख्त के समान कठोर और
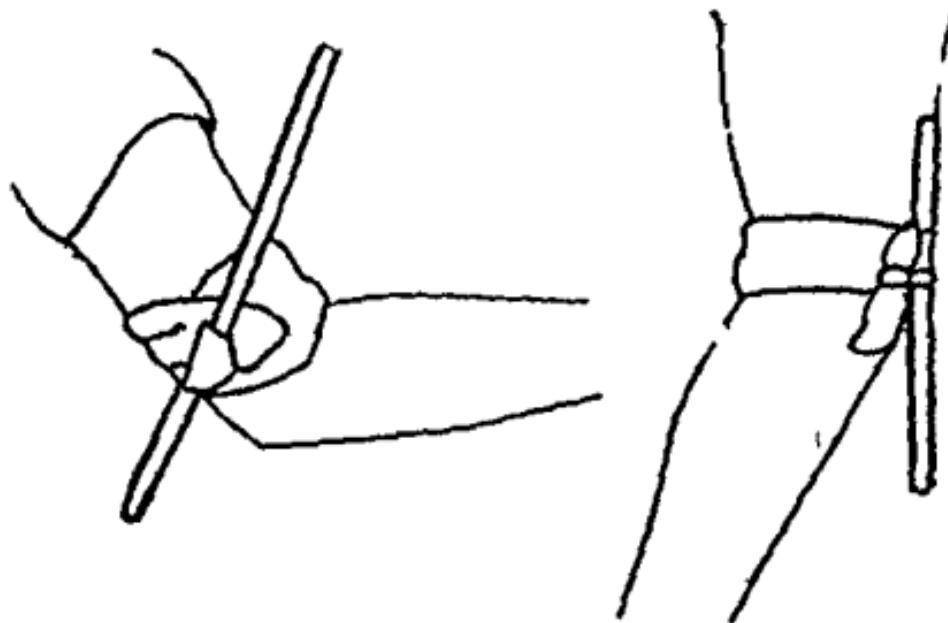
(क) कीट-दशन पर बध लगना
1 बाह पर 2 टांग पर

तब तक बाधे रखो जब तक यहा की त्वचा का रग नीले की अपक्षा गुलाबी हो जाए।

2 बधन बाधने के पश्चात ऊपर लगे विष को पोटेशियम परमेग्नट स धोकर छुडा दो।

3 दश स्थान को 3/4 इच किसी चाकू या उस्तरे (Razor) से काट कर गहरा घाव कर दो और जहर मारने के लिए पोटेशियम परमेग्नेट के क्रिस्टल (दान) घाव मे भर दो।

4 रोगी को गम रखो। उसे पूण आराम मे रखो।

दद, पैरो, (टागो) भुजाओ तथा कमर म ऐंठन, दुबलता, शरीर का ताप बढना, रक्तचाप (Blood Pressu ) अधिक होना, मितली और वमन होना, चक्कर आना, ठिठुरन (Cl lls), अत्यधिक पसीना, श्वास लेने में असुविधा और अन्ततोगत्वा मत्यु।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

तुरन्त चिकित्सक को बुलाए। रोगी का खाट पर लिटा दें। दश स्थल पर टिंचर आयोडीन लगाए ताकि अन्य शरीर के भाग पर सक्रमण (Infection) न हो। रोगी को गर्मी पहुचाते रहें तथा शांत रहने दें। निद्रा लाने वाली तथा पीडा हटाने वाली औषधिया, जल-चिकित्सा (Hydrotherapy) तथा पीडा कम करने वाले अन्य उपाय भी करने चाहिए।

## सर्प दशन

विषाक्तता के सम्भाव्य स्रोत—वायपेराइन वश के सर्पों (रीसल वाय पर, पिट वायपर, एक्सिकैरीनाटा), कोलूब्राइन वश के सर्पों (साधारण कोबरा, राज कोबरा क्रेट) छिपकली (Lizard), गिरगिट (Chameleon) चदनगोय व पटरागोय के काटने पर रक्त विषाक्त हो जाता है।

लक्षण—दश स्थान के चारो ओर रक्त और रग में अन्तर हो जाता है। यह रक्त को जमने नही देता जिस कारण अधिक विष पैदा होकर वमन होती है कमजोरी और आखो की पुतलिया फैल जाती है। दद तबियत घबराना, टागें बहुत शीघ्र सुन्न हो जाती हैं। सुन्नपन मस्तिष्क की ओर बढकर मुह के सब पुट्ठे (Muscles) सुन्न तथा बूद-बूद करके लार (Saliva) टपकती है। श्वास की गति बद और भय के कारण मृत्यु।

प्रतिकारक एव प्राथमिक उपचार—

1 यदि भुजा या टाग म काटा गया हो तो तुरत धमनी (Artery) और शिराओ (Veins) म बधन के द्वारा रक्त का बहना बन्द कर दो। बधन घाव और हृदय के बीच म रहे। बधन रबड के छल्ल (Ring) लचकदार फीत (Elastic) पगडी कमरबद, पट्टी नेकटाई या रूमाल स
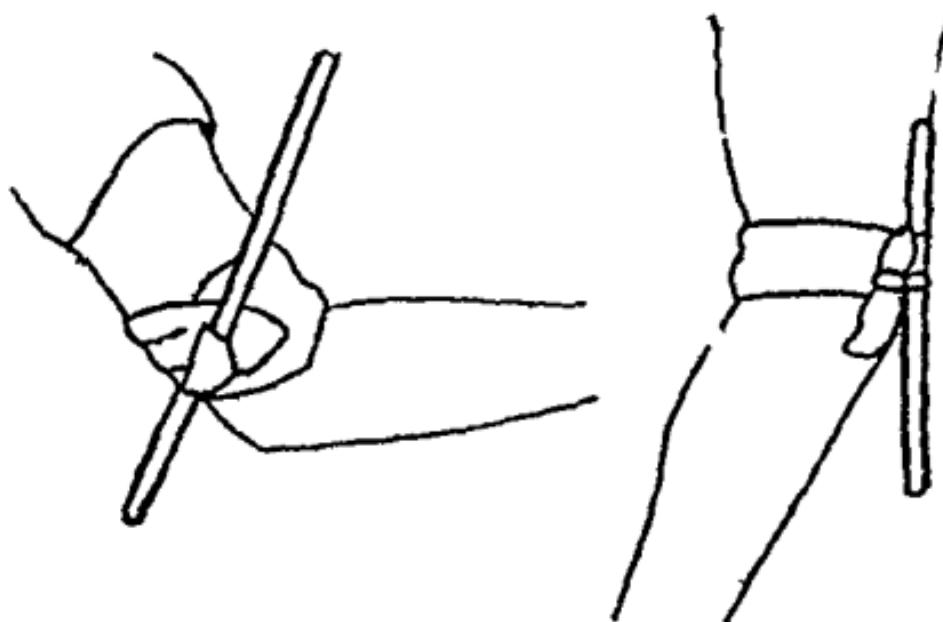
(क) कीट-दशन पर बंध लगना
1 बाह पर 2 टांग पर

तब तक बांधे रखो जब तक वहा की त्वचा का रंग नीले की अपेक्षा गुलाबी हो जाए।

2 बंधन बांधने के पश्चात ऊपर लगे विष को पोटेशियम परमेंगनेट स धोकर छुड़ा दो।

3 दंश स्थान को 3/4 इंच किसी चाकू या उस्तरे (Razor) से काट कर गहरा घाव कर दो और जहर मारने के लिए पोटेशियम परमेंगनेट के क्रिस्टल (दाने) घाव म भर दो।

4 रोगी को गम रखो। उसे पूण आराम से रखो।

## घातक विष (Dangerous Poison)

| विष | प्राथमिक उपचार |
|---|---|
| कार्बन मोनोक्साइड | कृत्रिम-श्वास क्रिया दें। उपलब्ध हो सके तो आक्सीजन दें। |
| निद्रायक गोलिया (क्लोरल, ल्युमिनल, वीरोनल तथा बारबिट्रेट्स आदि नींद लाने वाली गोलिया) | रोगी को वमन कराइए। एक गिलास पानी म एक बडा चम्मच एप्सम या ग्लोबज साल्ट डालकर पिलाए। तत्पश्चात् पीने को गम कॉफी दें। रोगी को सोने न देना चाहिए। |
| सीसा (Lead) | रोगी को वमन कराइए। एक प्याला भर पानी मे एक बडा चम्मच एप्सम साल्ट डाल कर दें। |
| पारा (Mercury) | पानी में अण्डे की सफेदी फेंटकर दें और तत्पश्चात दूध पिलाए। तब रोगी को वमन कराए। कासे (Bronze) की कटोरी से पर के तलुवे पर इट की सुर्खी निरन्तर कई घटो रगड़ने से सम्पूर्ण पारा सुर्खी मे आ |
| अफीम | पोटैशियम |

# परिशिष्ट

## परिशिष्ट 1

### क्षयत्व विष (Corrosive Poison)

| विष | प्राथमिक उपचार |
|---|---|
| तेजाब (सान्द्र) | रोगी को वमन न कराए। पर्याप्त मात्रा में पानी देकर तेजाब को पतला (dilute) कर दें। एक गिलास में 500 मिलीलिटर पानी लेकर उसमें दो बड़े चम्मच चाक, मिल्क ऑफ मग्नीशिया अथवा चूने का पानी पिलाए। |
| क्षार (सान्द्र) | रोगी को वमन न करवाए। पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाकर तेजाब को हल्का कर दें। यदि हो सके तो दो बड़े चम्मच भर सिरका सतरे, नींबू या जभीरी नीबू का रस 500 मिलीलिटर पानी में डालकर पीने को दें। |
| कीटाणुनाशक रसायन (कारबोलिक एसिड, लाइसोल, आईजोल क्रीजोल आदि) | रोगी को वमन न करवाइए। 500 मिली-लिटर पानी में दो बड़े चम्मच एप्सम साल्ट (Epsom Salt) डालकर या एक प्याले भर पैराफिन में डालकर दें। |

नाग-शीर्ष में विद्यमान विषैले दांत एवं ग्रंथि

5 यदि रोगी निगल सके तो तेज कॉफी चाय या गर्म दूध पिलाओ। परन्तु शराब (Wine) मत दो।

6 रोगी की हिम्मत बधाए रखें। उसे जगाते रहें।

7 यदि श्वास का आना जाना बंद होने लगे तो कृत्रिम रीति से श्वास लाने का प्रयास किया जाए।

8 चिकित्सक को तुरन्त बुलाया जाए।

चेतावनी—डाक्टर या चिकित्सक के आने से पूर्व घाव की चीर फाड़ नहीं करनी चाहिए। ☐☐ ☐

# परिशिष्ट

## परिशिष्ट 1

### क्षयत्व विष (Corrosive Poison)

| विष | प्राथमिक उपचार |
|---|---|
| तेजाब (सान्द्र) | रोगी को वमन न कराए। पर्याप्त मात्रा मे पानी देकर तजाब को पतला (dilute) कर दें। एक गिलास म 500 मिलीलिटर पानी लेकर उसमे दा बड़े चम्मच चाक, मिल्क ऑफ मैग्नीशिया अथवा चून का पानी पिलाए। |
| क्षार (सान्द्र) | रोगी को वमन न करवाए। पर्याप्त मात्रा मे पानी पिलाकर तजाब को हल्का कर दें। यदि हो सके तो दो बड़े चम्मच भर सिरका सतरे, नींबू या जभीरी नीबू का रस 500 मिलीलिटर पानी म डालकर पीने को दें। |
| कीटाणुनाशक रसायन (कारबोलिक एसिड, लाइसोल, आईजाल, क्रीजोल आदि) | रोगी को वमन न करवाइए। 500 मिली-लिटर पानी म दो बड़े चम्मच एप्सम साल्ट (Epsom Salt) डालकर या एक प्याल भर पराफिन मे डालकर दें। |

## घातक विष (Dangerous Poison)

| विष | प्राथमिक उपचार |
|---|---|
| कार्बन मोनोक्साइड | कृत्रिम-श्वास क्रिया दें। उपलब्ध हो सके तो आक्सीजन दें। |
| निद्रायक गोलिया (क्लोरल, ल्युमिनल, वीरोनल तथा बारबिट्रेटस आदि नींद लाने वाली गोलिया) | रोगी को वमन कराइए। एक गिलास पानी मे एक बडा चम्मच एप्सम या ग्लोबज साल्ट डालकर पिलाए। तत्पश्चात् पीने को गम काफी दें। रोगी को सोने न देना चाहिए। |
| सीसा (Lead) | रोगी को वमन कराइए। एक प्याला भर पानी मे एक बडा चम्मच एप्सम साल्ट डालकर दें। |
| पारा (Mercury) | पानी में अण्डे की सफेदी फेंटकर दें और तत्पश्चात दूध पिलाए। तब रोगी को वमन कराए। कांसे (Bronze) की कटोरी से पैर के तलुवे पर इट की सुर्खी निरन्तर कई घंटो तक घिसते रहने से सम्पूर्ण पारा सुर्खी मे आ जाएगा। |
| अफीम तथा मारफिया | रोगी को वमन करवाइए। पोटेशियम परमेगनेट के कुछ क्रिस्टल एक गिलास पानी मे डालकर पिलाए। उद्दीपन के लिए गर्म काफी दें। रोगी को जगाए रखें। |

पैराफिन, पैट्रोल

सवप्रथम रोगी को वमन कराए। पानी अधिक पिलाए।

फासफोरस

रोगी को वमन कराए। पोटेशियम परमेगनेट के कुछ क्रिस्टल (रवे) पानी मे डालकर पिलाए। तल कभी न दें।

सायनायड

तुरन्त काय कीजिए। रोगी को वमन कराए। कृत्रिम श्वास क्रिया दीजिए।

कुचला (Strychnine)

यदि दस्तो का आवेग आरम्भ न हुआ हो तो रोगी को वमन करवाइए। चुपचाप रहिए और शान्त रहने दें। आवेग की गति को न रोकिए। यदि श्वास बन्द हो जाए तो कृत्रिम रीति से श्वास दें।

संखिया (Arsenic)

रोगी को वमन कराए। शान्ति प्रदान करने वाले तरल पदाथ (शमक) पीने का दें।

एस्प्रिन (Aspirin)

रोगी को वमन (उल्टी) कराइए। एक गिलास पानी मे दो चम्मच सोडा बाईकाब डालकर पिलाए। उद्दीपक रूप मे तेज (strong) गम चाय या कॉफी पीने को दें।

## परिशिष्ट—3

### यूनिवर्सल प्रतिकारक (Universal Antidote)

| | |
|---|---|
| सक्रियकृत कोयला (Activated Charcoal) | 2 भाग |
| मैग्नीशियम ऑक्साइड | 1 भाग |
| टैनिक एसिड (Tannic Acid) | 1 भाग |

उपर्युक्त तीनो पदार्थों का मिश्रण कर 15 ग्राम मात्रा ले लें और इसे आधा गिलास गर्म पानी मे घोल लें। तदुपरात विष का प्रभाव कम करने के लिए इसे रोगी को पिला दें। यह प्रतिकारक अम्लो (Acids), ऐलका-लाइडस ग्लूकोसाइडस तथा भारी धातुओ द्वारा विषाक्त व्यक्ति को पिलाने मे लाभ देता है। इस प्रतिकारक को पिलाने के पश्चात् रोगी का उदर (Abdomen) पूर्णतया जल नली से धो देना चाहिए किन्तु क्षयरत्व पदार्थ द्वारा विषाक्षण में पेट को धोना हानिकर होगा।

## परिशिष्ट—4

### मल्टीपल प्रतिकारक (Multiple Antidote)

| | |
|---|---|
| हराकशीश (Iron Sulphate) | 100 भाग |
| जल | 800 भाग |
| मैग्नीशिया | 88 भाग |
| जन्तु कोयला (Animal Charcoal) | 44 भाग |

मैग्नीशिया तथा कोयले को सूक्ष्म अवस्था में पीसकर एक शीशी में भरकर रख लें। एक भाग हराकशीश का, आठ गुना जल में सतृप्त घोल (Saturated Solution) तैयार कर उपरोक्त मिश्रण को प्रयोग के समय मिला लें। घोलते समय घोल को निरन्तर हिलाना है। तदुपरांत रोगी को इस घोल के कम से कम 8-10 गिलास पिला दें। यह प्रतिकारक संखिया (Arsenic), जस्त, अफीम, डिजिटैलिस, मर्करी तथा कुचला (Strychnine) आदि विषों में देना लाभदायक है किन्तु फॉसफोरस, क्षार अथवा ऐन्टीमनी में प्रभावहीन रहेगा।

## परिशिष्ट—5

## उत्पादित लक्षणों से विषों की पहचान

1 अकस्मात मृत्यु करने वाले—

सायनाइड, कोकेन, वत्सनाभ, ईथर, अमोनिया (सांद्र), फीनोल, कार्बन डाइआक्साइड, क्लोरल हाइड्रेट, हाइड्रोजन सल्फाइड, निकोटिन, कुचला, बेरियम के यौगिक, ऑक्सैलिक एसिड तथा अधिक मात्रा मे भक्षण किए कुछ अन्य विष।

2 नेत्र-पुतलियां संकुचित करने वाले—

बारबिटल, क्लोरल हाइड्रेट, मारफीन, छत्रक, निकोटिन अफीम।

3 नेत्र-पुतलियां प्रसारित करने वाले—

ऐट्रापीन, बार्बिटल, वत्सनाभ, बेलाडोना कोकेन, आयोडीन क्लोरोफाम (द्रव), हाइड्रोजन सल्फाइड अफीम, सोडियम नाइट्रेट, निकोटिन, काष्ठज ऐल्कोहॉल (Wood Alcohol) आदि।

4 सामान्य दृष्टि क्षीण करने वाले—

कपूरयुक्त तेल, कपूरयुक्त ऐसिड अगट, भोज्य पदार्थ (कभी-कभी) सीसा लवण, छत्रक (कभी-कभी), थैलियम लवण आदि।

5 श्वास मे दुर्गन्ध उत्पन्न करने वाले—

सिरका (ऐसीटिक ऐसिड), अमोनिया, कपूर, क्लोरोफाम, फ़ीसाल, ईथर, आयोडीन, फॉसफोरस थैलियम लवण, सायनाइड, लाडानम (अफीम निर्यास), क्लोरल (केला व नाशपाती) आदि।

6 मुखावस्था प्रभावित करने वाले—

(क) शुष्क मुह की दशा मे—

ऐट्रोपिन, बेलाडोना (धतूरा), अफीम आदि।

(ख) लालास्राव से आर्द्र (Wet) मुह की दशा में—

अमोनिया, सखिया तथा ऐसे विष जो मुह की आतरिक झिल्ली को विनष्ट कर दें आदि।

(ग) चेहरे का उडा हुआ रग—

वत्सनाभ (ऐकानाइट) से गति शून्य अमोनिया (बफ जैसा), मकरी बाइक्लोराइड, नाइट्रिक ऐसिड (पीला या सफेद, मुलायम), फीनोल अथवा क्रिओसोल (कठोर, सफेद), पोटेशियम कार्बोनेट, सोडियम-कार्बोनेट आदि।

7 त्वचा को प्रभावित करने वाले—

(क) शुष्क (Dry)

वत्सनाभ (ऐकानाइट), ऐल्कोहॉल, ऐटिमोनी, निकोटिन ऐसे विष जिससे लडखडाना आरम्भ हो जाए आदि।

(ख) चकत्ता (Rash)

ऐटिमोनी से चेचक जैसे, सखिया से खुजली तथा स्कार्लेट ज्वर (लाल चकत्ते पडने वाला ज्वर), क्लोरल हाइड्रेट से जुलपित्ती (Urticana) रोग तथा मधुमक्खी की तरह डुक्कर रहना जमालगोटे के तल (Croton Oil) से खुजली एव त्वचा का लाल रग होना, अफीम के कारण खुजली तथा गुलाब पुष्प के समान धब्बे, तारपीन का तेल (Turpentine Oil) के कारण त्वचा का रग लाल हो जाना आदि।

8 श्यामता (Cyanosis) उत्पन्न करने वाले—

ऐसीटनिलाइड, ऐनिलीन रजक (Dyes) एटिपाइरीन, फिनसिटीन, तथा परिशिष्ट 6 मे भी वर्णित सभी पदार्थ।

9 ततु (Tissue) को क्षति पहुचाने वाले—

ऐसोटिक एसिड अमोनिया जल कार्बोलिक एसिड, क्लोरीन जल, क्रिओसोट, क्रिआसाल, तेल जमालगोटा, फार्मेल्डिहाइड घाल हाइड्रोक्लोरिक एसिड, हाइड्रोफ्लोरिक एसिड लायमाल नाइट्रिक एसिड, ऑक्सलिक ऐसिड, फासफोरिक एसिड फॉसफोरस पोटेशियम हाइड्रोक्साइड, सोडियम हाइड्रॉक्साइड सल्फ्यूरिक एसिड तथा तारपीन का तल आदि।

## परिशिष्ट – 6

## मितली, अतिसार उत्पन्न करने वाले विष

सभी ऐसिड तथा क्षार, ऐकोनाइट, ऐल्कोहॉल (कभी-कभी अतिसार) अमोनियम हाइड्रोक्साइड (खूनी उल्टियां), ऐन्टिमोनी यौगिक (सफेद रेशेदार, खूनी उल्टियां), अर्निका, संखिया (बादामी, खूनी उल्टियां), बेरियम लवण, बिस्मथ, कैल्सियम हाइड्रोक्साइड कपूर मिश्रित तेल, क्लोरीन जल, क्लोरोफाम कॉपर लवण, रसपुष्प (Corrosive Sublimate) (हरा खूनी मल), क्रिओसोल, तेल जम लगाटा, डिजिटैलिस (हरी पत्ती जैसी वमन), अगट, भोज्य विषायण, पैट्रोल (Gasoline), हाइड्रोजन सल्फाइड, फार्मेल्डिहाइड घोल, आयोडीन, सीसा यौगिक, पारद (पारा), छत्रक विषायण, अफीम फासफोरस (हरा-बादामी वमन, अंधेरे मे चमकता है) पिक्रिक ऐसिड, पोटेशियम क्लोरेट, पोटेशियम कार्बोनेट, पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड, सिल्वर नाइट्रेट, सोडियम फ्लोराइड, सोडियम हाइड्रॉक्साइड, थैलियम के लवण, जिंक लवण तथा तारपीन का तेल आदि।

## परिशिष्ट—7

## विषो की प्रतिक्रियाओं द्वारा उत्पन्न रोग

1 जड़िमा (Stupor) उत्पन्न करने वाले—

ऐसीटनिलाइड, ऐकोनाइट, ऐल्कोहॉल, ऐमीनोपाइरीन, एमाइटल, ऐनिलीन रजक (Dyes) एन्टिपाइरीन, ऐपोमॉरफीन, ऐट्रोपीन, बार्बिट्यूरेटस, बेलाडौना (धतूरा), ब्रोमाइडस क्लोरल हाइड्रट, क्लोरोफाम कोडीन, ईथर, फार्मेल्डिहाइड घोल पैट्रोल (Gasoline) हेरोइन (Heroin) मडिनल (Medinal) मारफीन, अफीम, पैराऐल्डिहाइड, फिनसिटीन सल्फोनल ट्राओनल, तेल-तारपीन आदि।

2 ज्ञानशून्यता (Delirium) उत्पन्न करने वाले विष—

ऐल्कोहॉल, धतूरा (अति प्रसन्न तथा अधिक शोर करना) कपूर स्ट्रॉमानियम आदि।

## परिशिष्ट—8

## कृत्रिम श्वसन

रोगी के फेफडो को सम्पीडन (Compression) तथा दबाव को कम करने की बारबार प्रक्रिया को कृत्रिम श्वसन कहते हैं। इस प्रक्रिया को अनेक प्रकार से किया जाता है, किन्तु निम्न विधिया मुख्य हैं---

1 पीठ-दाब भुजा-उत्थान विधि

इस विधि मे रोगी को अधोमुख (Prone) अवस्था में कीजिए। हाथो को ऊपर की स्थिति में मोडकर ऐसा रखें कि हाथ एक-दूसरे के ऊपर होने के उपरात भी हथेलियां नीचे की ओर रहें। इसके बाद सिर को हाथो पर रख दें। कुहनी को ऊपर उठाए और इस क्रिया को तुरन्त आरम्भ करने के पश्चात् रोगी के सिर की ओर आप इस प्रकार की स्थिति में बैठें कि परो के पजे और घुटने भूमितल को स्पश करें। इस स्थिति से घुटनों पर बल देते हुए अपने शरीर को ऊपर उठाए और अपन हाथो को फैली दशा मे रोगी की कमर पर रखें। ऊपर उठते हुए कृत्रिम श्वसन के समय आपकी भुजा कुहनी से न मुडे और सीधी ही शरीर के ऊपरी भाग का भार रोगी की कमर पर रहे। आपकी भुजा अभिलम्ब (Vertical) अवस्था मे पहुचने के पश्चात् शरीर को पहली अवस्था में लाए। [चित्र पृष्ठ 150 पर देखें]।

उपर्युक्त सम्पीडन अवस्था (Compression Phase) एव विस्तारण अवस्था (Expansion Phase) के उपरात रोगी की भुजाओं को कुहनी से ऊपर पकडकर ऊपर-नीचे खींचें। *इस प्रक्रिया में समय आपका भी* शरीर आगे-पीछे जाएगा किन्तु अपनी भुजाए सीधी रखें। बारम्बार ऐसा करने से कृत्रिम श्वसन की प्रक्रिया पूण हो जाती है और रोगी को सास सामान्य आने लगता है।

I
II
III
IV

2 मुख द्वारा श्वसन विधि

यों तो लगभग सभी अस्पतालों में आक्सीजन-युक्त निःश्वास यंत्र (Inhalator) उपलब्ध हैं किन्तु बच्चों और किशोरों को कृत्रिम श्वसन मुख से मुख मिलाकर किया जाता है। आजकल तो युवाओं (Adults) को भी इस प्रक्रिया द्वारा कृत्रिम श्वसन किया जाता है। इसमें दाएं हाथ की मध्यम अंगुली को बच्चे के मुख में अन्दर देकर जीभ को बाहर की ओर निकाला जाता है ताकि श्वासनली में फंसी वस्तु बाहर आ जाए। इसके साथ ही दोनों हाथों की मध्यम अंगुलियों से निचले जबड़े को ऊपर उठाकर छोड़ दिया जाता है। बारबार इस क्रिया के करने से रोगी के फेफड़ों का विस्तार होकर सांस आने लगेगा। यदि इस प्रकार भी सांस का आना सामान्य न हो तो बच्चे के पेट पर दायां हाथ रखें और बाएं हाथ से सिर पकड़कर अपने मुख से रोगी के मुख में श्वास पहुंचाएं। इस प्रक्रिया के समय पेट पर रखे दाएं हाथ से धीरे धीरे निरंतर दबाव नाभि (Navel) तथा पसलियों (Ribs) के बीच देते रहें ताकि मुख द्वारा दी गयी सांस के कारण पेट में हवा न भर जाए।

## परिशिष्ट—9

## मानसिक आघात

अकस्मात किसी सप, भयकर दुघटना, खुखार पशु, रक्तस्राव अथवा गहरी चोट को देखकर मनुष्य को हृदय मे भय के कारण आघात पहुच जाता है। कभी-कभी तो यह आघात इतना असहनीय होता है कि मृत्यु तक हो जाती है। यद्यपि प्रस्तुत लेखक ने अनेक दुघटनाए देखीं, प्राणी को अन्तिम समय जिजिवासा स्थिति मे तडपते और चिल्लाते देखा, मुडविहीन घडो (शरीर) को (1947 48) विचरते देखा किन्तु 3 अप्रैल, 1983 को रात्रि 8 40 बजे अस्पताल मे अपने एक मित्र को जो कृत्रिम श्वसन की स्थिति में देखा वह दृश्य आघात का कारण बना। फलस्वरूप मेरे रक्तचाप और हृदय की गति बढ़ गई। घटो इसी स्थिति मे रहने के पश्चात नींद लान वाली गोली के सेवन से शान्ति मिल।

यदि आघात किसी चोट तेजाब और क्षार-सेवन अथवा विष के कारण हुआ है तो सवप्रथम मानसिक आघात का उपचार करना अत्यत आवश्यक है वरना मृत्यु की सभावनाए बढ सकती हैं। हृदयाघात की दशा में उदर (Abdomen) क्षेत्र के रक्त मे रुकावट (Stagnation) आ जाती है।

लक्षण—रक्त प्रवाह मे रुकावट के परिणाम-स्वरूप नाडी की गति तेज, कमजोर तथा अनियमित हो जाती है। चेहरा पीला, ठडा पसीना (Sweat) और माथे पर विशेष रूप स दिखाई देता है। शरीर ठडा और कपकपी (Chill) आरम्भ कभी कभी मितली तथा उल्टी। रोगी कमजोर, सुस्त तथा वार्तालाप मे रुचिहीन। बेहोश होकर लडखडा सकता है।

प्राथमिक उपचार—आघात को दूर करने का उद्देश्य है कि रोगी के रक्तसंचार को नियमित किया जाए। रोगी को गर्मी पहुंचाने के लिए उसे कम्बल में पूर्णतया लपेट दें। तीन चार कम्बल नीचे बिछाए। सिर नीचा कर कमर के सहारे लिटाए। पैरों को ऊंचा उठाए। यदि रोगी बेहोश नहीं है तो उद्दीपक (Stimulant) रूप में गर्म चाय या कॉफी पीने को दें। चिकित्सक की तुरन्त सहायता लें।

# पारिभाषिक शब्दावली
## (हिन्दी-अंग्रेजी)

| | |
|---|---|
| **अ** | |
| अगघात | Paralysis |
| अग्निमांद्य | Dyspepsia |
| अतिसार | Diarrhea |
| अन्तःश्वसन | Inhalation |
| अनिद्रा | Insomnia |
| अवसन्नता | Prostration |
| अर्बुद | Cancer |
| अवसाद | Depression |
| अर्श (बवासीर) | Haemarrhoids |
| **आ** | |
| आकर्ष (ऐंठन) | Spasm |
| आघात | Shock |
| आमवात (वात) | Rheumatism |
| आमाशय पीड़ा | Gastric Pain |
| आतिशबाजी | Pyrotechnics |
| आन्तर | Internal |
| आक्षेप | Convulsions |
| **उ** | |
| उत्पीडन | Oppression |
| उदासीनीकरण | Neutralization |
| उद्दीपक | Stimulant |
| उपचार | Treatment |
| उपापचयी विष | Economic Poisons |

**ए**

| | |
|---|---|
| एँठन | Cramp |

**क**

| | |
|---|---|
| कपूर | Camphor |
| कनपटी | Temple |
| कषाय | Astringent |
| कटु तीक्ष्ण | Acrid |
| कफनाशक | Expectorant |
| कफ | Expectoration, Phlegm |
| कफदोष | Catarrh |
| कंपन | Tremor |
| काढ़ा (अर्क) | Infusion |
| कामोद्दीपक | Erotic |
| कास (खांसी) | Tussive |
| कृमि | Helminth |
| कृन्तकनाशी | Rodenticide |
| कुचला | Strychnine |
| कुष्ठरोग | Leprosy |
| कीट | Maggots |
| कीटनाशी | Insecticide |
| किण्व | Ferment |

**ग**

| | |
|---|---|
| गुल्म | Tumour |
| ग्रहणीनाशक | Anti-duodenal |

**च छ**

| | |
|---|---|
| चतुर्थक | Quarternary |
| चक्कर आना | Dizziness |

| | |
|---|---|
| चित्तभ्रम | Delirium |
| छत्रक | Mushroom |
| **ज** | |
| ज्वर | Fever |
| जकड़न | Tightness |
| जठर रस | Gastric Juice |
| जठर वेदना | Gastric Pain |
| जमालगोटा | Croton |
| जलन | Burning |
| जड़िमा | Stupor |
| जहर मुहरा | Toad Stone |
| जीवाणुनाशी | Germicide |
| जंगम | Movable |
| **झ** | |
| झनझनाहट | Tingling |
| झाग (मुख से) | Froth |
| झुर्रीदार त्वचा | Goos-skin |
| **ठ** | |
| ठिठुरन | Chills |
| **त** | |
| त्वचा | Skin |
| ऊतक | Tis ue |
| तन्द्रा | Drowsiness |
| तन्त्रिका तंत्र | Nervous System |
| तंत्रिका रज्जु | Nerve Cord |
| त्वक्‌शोथ | Dermatitis |
| ताम्र | Copper |
| तिक्त | Bitter |

| | |
|---|---|
| तेजाब | Acid |
| **द-ध** | |
| दद्रु | Ringworm |
| दाह | Burning |
| धड़कन | Palpitation |
| धूम | Fume |
| **न** | |
| नाड़ी | Puls• |
| निगलना | Swallow |
| निर्मूल भ्रम | Hallucination |
| निद्रापक | Hypnotic |
| **प** | |
| पसीना | Sweat |
| परहेज | Abstinence |
| पक्षाघात | Hemiplegia |
| प्लीहा | Spleen |
| परिरक्षण | Preservation |
| परिक्लान्ति | Exhaution |
| पारद | Mercury |
| पाक-सोडा | Baking Soad |
| पाण्डुता | Pallor |
| पाण्डुवणता | Sallowness |
| पित्त | Bile |
| पित्तकर | Biliary |
| पित्तश्लष्मा | Biliary Mucus. |
| पीलिया | Jaundice |
| पुतली | Pupil |
| पेशियाँ | Muscles |
| पोतड़े | Diapers |
| प्रचण्ड अतिसार | Purging |
| प्रलाप | Delirium |

प्रतिकारक — Antidote
प्राथमिक उपचार — First aid /Teatment

फ

फुपफस — Lungs

ब-भ

बेचनी — Fedgetry feeling
भाग — Cannabis
भावहीनता — Apathy

म

मल — Stool
मद — Intoxication
मधुर — Dulacis
मादक — Intoxicating
मिर्गी — Epilepsy
मितली — Nausea
मूत्रलता — Diuresis
मूत्रकृच्छ — Dysuria

र

रक्त चाप — Blood pressure
रूखा — Barbaric

ल

लकवा — Paralysis
लड़खड़ाना — Collapse
लालास्राव — Salivation
लोमनाशक — Depilatories
लेप (लई) — Paste

व

वसा — Fat
वमन — Vomiting
वमनकारी — Emetic
वातरोग — Gout
वायुवधक — Rheumatic

| | |
|---|---|
| विरेचक | Cathartic |
| विरेचन | Catharsis |
| वृक्क (गुर्दा) | Kidney |
| विषहर | Antidote |
| **श** | |
| शमक | Demulcent |
| शलभविनाशी | Moth Exterminator |
| श्लेष्म झिल्ली | Mucous Membrane |
| श्लेष्मा | Mucus |
| श्वसन पात | Respiratory Failure |
| श्वासावरोधन | Asphyxiation |
| शूल | Colic, Pain |
| शूलरोगनाशक | Anticolic |
| शीत ज्वर | Ague |
| **स** | |
| स्थावर | Sedentary |
| स्फुरण | Stimulus |
| सिकुडन | Contraction |
| सिर चकराना | Giddiness |
| सीपी | Mussel |
| सुस्ती | Sluggishness |
| सकोचन | Constriction |
| सखिया | Arsenic |
| सपाक | Preparation |
| समूर्च्छा | Coma |
| सक्षारक | Corrosive |
| सवेदनहारी | Anesthetics |
| सभ्रम | Confusion |
| सश्लेषण | Synthesis |

| | |
|---|---|
| **ह** | |
| हाफना | |
| हिचकी | |
| **क्ष** | |
| क्षयत्व | Corrosive |
| क्षार | Alkali |
| क्षोभ | Irritation |
| क्षोभक विष | Irritating Poison |

(अंग्रेजी हिन्दी)

| | |
|---|---|
| Acid | तेजाब |
| Aconite | वत्सनाभ |
| Arachnidism | मकड़ा विष |
| Arsenic | संखिया |
| Camphor | कपूर |
| Conium | विषगजर |
| Copper | ताम्र (तांबा) |
| Croton | जमालगोटा |
| Economic Poison | उपापचयी विष |
| Ergot | अर्गट |
| Gasoline | पैट्रोल |
| Hemlock | धतूरा |
| Hemp | भांग |
| Ivy | सिरपेंचा (मारवल्ली) |
| Lead | सीसा |
| Mandrake | विषारामूल |
| Mercury | पारद |
| Mushroom | छत्रक |
| Opium | अफीम |
| Strychnine | कुचला |
| Turpentine | तारपीन |
| Volatile Oil | वाष्पशील तेल |

□ □ □

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री विष्णुदत्त शर्मा का जन्म 8 अगस्त, 1935 ई० को ग्राम मुबारकबाद, जिला गाजियाबाद (उ० प्र०) में हुआ। आपके पिता वैद्य हरवश लाल शर्मा हैं। ग्राम्य जीवन को अपनाते, माता अशर्फी देवी की कोख से जन्मे श्री विष्णुदत्त शर्मा ने बी० एस-सी० तक अध्ययन करने के पश्चात मेरठ विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम० ए० परीक्षा पास की।

अनुभव फोटोग्राफी में उपयोगी 'आप्टीकल फिल्टरो' का अध्ययन, विकास एवं निर्माण। फोटोग्राफी जीराग्राफी के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग बारह वर्ष का प्रायोगिक कार्य। भाभा परमाणु अनुसधान केन्द्र, ट्राम्बे, बम्बई में रेडियोऐक्टिव पदार्थों के हस्तन एवं प्रयोग में प्रशिक्षण प्राप्त कर राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली में 'हाट लेबोरट्री' की सन् 1964 ई० में स्थापना। भारतीय मानक सस्थान द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर यात्रिकी इजीनियरी उत्पादों के परीक्षण, मापन एवं अशाकन आदि तकनीक तथा ...
निक कार्यों में ...